

N A N D I S U T T A M

by

DEVAVĀCAKA

with the CŪṬI by

JINADĀSA GAṆI MAHATTARA

Edited by

MUNI SHRI PUNYANJANA

General Editor

DR. K. P. JOSHI, M.A.

Published by
DALSUKH MALVANIA
Secretary,
PRAKRIT TEXT SOCIETY
VARANASI-5

Price Rs. 10/-

Available from :

- 1 MOTILAL BANARASIDASS, NEPALI KHAPRA, Post Box 75, VARANASI.
- 2 CHAUKHAMBHA VIDYABHAVAN, CHAWK, VARANASI.
- 3 GURJAR GRANTHARATNA KARYALAYA, GANDHI Road, AHMEDABAD-1.
- 4 SARASWATI PUSTAK BHANDAR, RATANPOLE, HATHIKHANA, AHMEDABAD-
- 5 MUNSHI RAM MANOHARLAL, NAI SARAK, DELHI.

Printed by :-
JAYANTI DALAL
Vasant P. Press
Gheekanta, Ghela
AHMEDABAD-1.

निरिदेववाग्यगविरह्यं

नंदीसुत्तं

निरिजिणदासगणिमत्तगविरह्यया, दुष्पणीयं मंजुं

संज्ञोद्यः सम्यग्दृष्टः

मुनिपुण्यविजयः

जिनागमगविरह्यं जिनाचार्यश्रीमद्विजयसुत्तं मुनिपुण्यविजयः प्रसिद्धः सम्यग्दृष्टः सम्यग्दृष्टः सम्यग्दृष्टः

प्राचीनजिनशास्त्रागमोद्यः प्रसिद्धः श्रीमद्विजयसुत्तं मुनिपुण्यविजयः

श्रीमन्नान्दासगणिमत्तगविरह्यया, दुष्पणीयं मंजुं

भाकृत ग्रन्थ परिषद्

वाराणसी ५

संस्कृत-५

प्रकाशक :-
दलसुख मालवणिया
सेक्रेटरी, प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी,
वाराणसी-५

मुद्रक :-
जयन्ति दलाल
वसंत प्रिन्टींग प्रेस
धीकांटा, चेलाभाईकी
अहमदाबाद-१

50105

50105

50105

प्रस्तावना

॥ जयन्तु वीतरागाः ॥

चूर्णिसहित नन्दीसूत्रके संशोधनके लिये मूलसूत्रकी आठ और चूर्णिकी चार, एवं सब मिलकर दसह प्रतियाँ बनाने रखी गई हैं। इनमें से मूलसूत्रकी तीन और चूर्णिकी एक, ये चार ताडपत्रांश प्रतियाँ हैं। इन सबकी प्रतिये इस प्रकार है —

जे० प्रति—यह प्रति जेसलमेरके किलेमें स्थित खरतरगच्छीय युगप्रधान आचार्य श्रीजिनभद्रसूरि महाराजके ज्ञान-भंडारकी ताडपत्रीय प्रति है। सूचीमें इस प्रतिका क्रमांक ७७ है। इसमें पत्र १ से २६ में नन्दीसूत्र मूल है और पत्र १ से २९७ में श्रीमलयगिरिसूरिकृत वृत्ति है। प्रतिका लंबाई-चौड़ाई ३३।।।×२।। इंच है। प्रतियंत्रमें पत्रकी चौड़ाईके अनुसार चार या पांच पंक्तियाँ लिखी हैं। प्रति तीन विभागमें लिखी गई है। प्रति सुन्दरतम है। पुस्तकके लेखद्वारा इस प्रति का संशोधन खरतरगच्छीय आचार्य श्रीजिनभद्रसूरिने स्वयं किया है। अनेक स्थानपर आपने उल्लेखीय टिप्पणीकी भी की है, जो हमने हमारे मुद्रणमें तत्तत् स्थान पर दे दी है। प्रतिका लिपि सुन्दरतम है। अन्तमें लेखकी पुष्टिका इस प्रकार है

स्वस्ति । संवत् १४८८ वर्षे श्रीसत्यपुरे षोडशदि १० दिने श्रीपार्श्वदेवजन्मसन्महोत्सवे श्रीजिनभद्रसूरिप्रणीतश्रुतिप्रमाणकारसंगैः प्रभुश्रीजिनभद्रसूरिमुख्यवर्गैः श्रीनन्दिनिबन्धनसूत्रके लेखकोटि १०००० पाठितं च । तत्र श्रीश्रमणमणेन वाच्यमानं चित्रं नन्दन ॥

डे० प्रति—यह प्रति अहमदाबादके डेला उपाश्रयके ज्ञानभंडारकी है। इसमें मलगिरीया टीका भी पंनपाठरूपसे लिखित है। साथमें अनुज्ञानन्दी भी है। कागज पर लिखा हुई यह प्रति अनुमान सत्रहवीं सदीमें लिखी मादम होती है।

ल० प्रति—यह प्रति अहमदाबाद लवारकी पोलके उपाश्रयके ज्ञानभंडारकी है। इसकी पत्रसंख्या ३५ हैं। हरेक पत्रमें नव पंक्तियाँ हैं। हरेक पंक्तिमें ३१ से ४२ अक्षर लिखे हैं। प्रतिकी लिपि सुन्दरतम है। अक्षर मोटे हैं। कागज पर लिखी हुई इस प्रतिके अंतमें लेखककी पुष्पिका इस प्रकार है—

नन्दी सम्पत्ता ॥छ॥ सं. १४८५ वर्षे फाल्गुन सुदि ७ शनौ श्रीभीमपल्लीय....[अक्षर बीगाड दिये हैं]।

श्रीः ॥छ॥ शुभं भवतु ॥छ॥

इस पुष्पिकामें जो अक्षर बिगाड दिये हैं उनके स्थानमें बहार इस प्रकार नये अक्षर लिखे हैं—

साह श्रीवच्छासुत साह सहिसकस्य स्वपुण्यार्थं पुस्तकभंडारे कारापिता सुत वर्धमानपुस्तकपरिपालनार्थं ॥ छ ॥

मो० प्रति—यह प्रति पाटन-श्रीहेमचंद्राचार्यजैनज्ञानमंदिरमें स्थित मोदी ज्ञानभंडारकी है। यह प्रति विक्रमकी सोलहवीं सदीमें लिखी हुई है।

शु० प्रति—यह प्रति पाटन-श्रीहेमचंद्राचार्यजैनज्ञानमंदिरमें स्थित शुभवीरजैनज्ञानभंडारकी है। प्रति प्रायः शुद्ध है। प्रति अनुमान सत्रहवीं सदीके उत्तरार्द्धमें लिखी प्रतीत होती है।

मु० प्रति—यह प्रति आगमोद्धारक श्रीसागरानन्दसूरिवरसम्पादित श्रीमलयगिरिकृतटीकायुक्त है। जो आपने आगम-वाचनाके समय सम्पादित की है। यह आवृत्ति वि. सं. १९७३में आगमोदयसमिति-सुरतकी ओरसे प्रकाशित हुई है।

चूर्णीकी प्रतियाँ

जे० प्रति—यह प्रति जेसलमेर किलेमें स्थित श्रीजिनभद्रीय ताडपत्रीय जैन ज्ञानभंडारकी ताडपत्रीय प्रति है। इसका क्रमांक ४१० है। इस क्रमांकमें तीन ग्रन्थ हैं—१. दशवैकालिक अगस्त्यसिंहीया चूर्णी पत्र १८४। २. नन्दीसूत्रचूर्णी पत्र १८५-२२३। ३. अनुयोगद्वारसूत्रचूर्णी पत्र १२४-२७५। इनमेंसे नन्दीचूर्णी और अनुयोगद्वारचूर्णी, ये दोनों चूर्णियाँ किसी गीतार्थकी संशोधित हैं। प्रतिकी लंबाई-चौड़ाई २५×२॥ इंचकी है। प्रतिके अंतमें लेखनसंवत् या लेखककीपुष्पिका नहीं है। तथापि प्रतिका रंग-ढंग देखनेसे प्रतीत होता है कि-यह प्रति तेरहवीं सदीमें लिखित है। प्रति शुद्धप्राय है।

आ० प्रति—यह प्रति आगमोद्धारकजी श्रीसागरानन्दसूरिमहाराजसम्पादित मुद्रित प्रति है। जिसका प्रकाशन श्रीकृपभदेवजी केशरीमलजी श्वेताम्बरसंस्था-रतलामकी ओरसे हुआ है। पूज्यश्रीको इसकी कोई अच्छी प्रति न मिलनेके कारण यह बहुत अशुद्ध लयी है। फिर भी एक प्रत्यन्तरकी तोरसे हमारे संशोधनमें यह आवृत्ति काममें ही आई है।

दा० प्रति—यह प्रति जिनागमज्ञ पूज्य श्रीविजयदानसूरिमहाराजसम्पादित मुद्रित प्रति है। जो भाई हीरालालके द्वारा प्रकाशित है। इसमें भी काफी अशुद्धियाँ हैं। तथापि पूज्य सागरानन्दसूरिम०की आवृत्तिकी अपेक्षा यह कुछ अच्छी आवृत्ति है।

चूर्णिके सम्पादन और संशोधनके समय पाटन-श्रीहेमचंद्राचार्यजैनज्ञानमंदिरकी एक प्रति और श्रीलालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिरकी प्रतिकी भी सामने रखी थी। ये दोनों प्रतियाँ क्रमशः सोलहवीं और सत्रहवीं सदीमें लिखी हुई प्रतियाँ हैं और अशुद्धिभरपूर प्रतियाँ हैं। तथापि शुद्ध पाठोंके निर्णयमें ये भी सहायक हुई हैं।

इस चूर्णिके संशोधनमें हमारे लिये मुख्य आधारस्तम्भ जे० प्रति ही है, जो अतीव शुद्ध प्रति है।

सूत्रप्रतियोंकी विशेषता

सं० मो०, ये तान प्रतियोंका प्रतिलिखनके बाद किसी विद्वानने संशोधन नहीं किया है।

[illegible]

टिप्पण, इन चारोंका समग्रभावसे उपयोग किया गया है, इतना ही नहीं, किन्तु जहाँ जहाँ नन्दीसूत्रके उद्धरण, व्याख्यान आदि आये हैं ऐसे द्वादशारनयचक्र, समवायाङ्गसूत्र एवं भगवतीसूत्रकी अभयदेवीया वृत्ति, विशेषावश्यकमलधारीया वृत्ति, पाक्षिकसूत्रवृत्ति आदि अनेक शास्त्रोंका उपयोग भी किया है, जिसकी प्रतीति इस सम्पादनकी पादटिप्पणियोंको देखनेसे होगी।

नन्दीसूत्रकी चूर्णिके संशोधनके लिये मेरा आधारस्तम्भ जैसलमेरकी प्रति ही है। अगर यह प्रति प्राप्त न होती तो इसका जो गौरवपूर्ण सम्पादन हुआ है, वह शक्य न बनता। संस्कृत टीका निर्माणके बाद चूर्णियोंका अध्ययन कम हो जानेसे प्रायः आज ज्ञानभंडारोंमें जो जो आगमिक या आगमेतर शास्त्रोंके चूर्णिग्रन्थोंकी हस्तप्रतियाँ हैं, वे सभी अशुद्धि-भाण्डागारस्वरूप हो हो गई हैं। इतनी बात जरूर है कि—ज्यों ज्यों प्रति प्राचीन त्यों त्यों अशुद्धियाँ कम रहती हैं। किन्तु एक ही युगकी प्रतियोंके लिये यह अनुभव हुआ है कि—अगर वह प्रति प्राचीन प्रतिकी या भिन्न प्रदेशस्थित प्रतिकी नकल न हो कर, उसी युगकी या प्रदेशकी उत्तरोत्तर नकलकी नकल हों, तब तो उत्तरोत्तर अशुद्धियोंकी वृद्धि ही होती रही है, इतना ही नहीं पंक्तियोंकी पंक्तियाँ और सन्दर्भ के सन्दर्भ गायब हो गये हैं। अस्तु, मेरेकी जैसलमेरकी प्रति मीली, यह मैं सिर्फ अपना ही नहीं, साथमें सब शास्त्रपाठी जैन गीतार्थ मुनिगण एवं विद्वानोंका भी सौभाग्य समझता हूँ।

अनेक आगमोंकी चूर्णि, वृत्ति आदिके अवलोकनसे प्रतीत हुआ है कि—अगर प्राचीन एवं अलग अलग कुलकी प्रतियाँ प्राप्त न हों तो मुद्रणादिमें प्रायः सैकड़ों अशुद्धियाँ पाठपरावृत्तियाँ आदि रहनेका सम्भव रहता है, इतना ही नहीं सन्दर्भके सन्दर्भ छूट जाते हैं। विद्वान् संशोधकोंके ध्यानमें लानेके लिये मैं यहाँ एक बातको उद्धृत करता हूँ—

अनुयोगद्वारसूत्रकी चूर्णिका संशोधन मैंने पाटन-ज्ञानभंडारकी दो प्राचीन ताडपत्रीय हस्तप्रतियाँ और खंभातके श्रीशान्तिनाथ ज्ञानभंडारकी दो ताडपत्रीय प्रतियाँ, एवं चार प्रतियोंके आधारसे सुचारुतया कर लिया। कुल शंकास्थान होने पर भी दिलमें विश्वास हो गया था कि—एकंदर संशोधन अच्छा हो गया है। किन्तु जब जैसलमेर जानेका मोका मिला, और वहाँके ज्ञानभंडारकी प्राचीन ताडपत्रीय प्रतिसे तुलना की तो कितने ही शंकास्थान दूर हुए, इतना ही नहीं, परन्तु अलग अलग स्थानमें हो कर दश-बारह पंक्तियाँ जितना दूसरे कुलकी प्रतियोंमें छूट गया हुआ नया पाठ प्राप्त हुआ और अनेकानेक अशुद्धियाँ भी दूर हुईं। यह प्राचीन प्राचीनतम एवं अलग अलग कुलकी प्रतियोंके उपयोगका साफल्य है।

प्रसंगवश यहाँ यह कहना भी उचित है कि—इस नन्दीसूत्रचूर्णिके संशोधन एवं सम्पादनमें साधन्त उपयोगमें लाई गई प्रतियोंके अलावा दूसरी अनेक प्रतियाँ मैंने समय-समय पर देखी हैं, इससे ज्ञात हुआ है कि—जैसलमेरकी प्रतिकी अपेक्षा इन प्रतियोंमें त द ध आदि वर्णोंके प्रयोग विपुल प्रमाणमें नजर आये हैं।

नन्दीसूत्रके प्रणेता

नन्दीसूत्रकारने नन्दीसूत्रमें कहीं भी अपने नामका निर्देश नहीं किया है, किन्तु चूर्णिकार श्रीजिनदासगणि महत्तरने अपनी चूर्णिमें सूत्रकारका नाम निर्दिष्ट किया है, जो इस प्रकार है—

“एवं कतमंगलोवयारो धेरावलिकमे य दंसिए अरिहेसु य दंसितेसु दूसगणिसीसो देववायगो साहुजण-हितट्ठाण इणमाह” [पत्र १३]

इस उल्लेखद्वारा चूर्णिकारने नन्दीसूत्रप्रणेता स्थविर श्रीदेववाचक हैं—ऐसा बतलाया है। आचार्य श्रीहरिभद्रसूरि एवं आचार्य श्रीमहयगिरिसूरिने भी इसी आशयका उल्लेख अपनी अपनी टीकामें किया है, किन्तु इनका मूल आधार चूर्णिकारका उल्लेख ही है। चूर्णिकारके उल्लेखसे ही ज्ञात होता है कि—नन्दीसूत्रके प्रणेता नन्दिसूत्रस्थविरावलिकत अंतिमस्थविर श्रीदुध्यगणिके शिष्य श्रीदेववाचक हैं।

पंजामजी श्रीकल्याणविजयजीमहाराजने असे 'अंतिमोपदेश' और 'महा-काव्यात्मक' निवेदन 'सामाजिक-सिद्धि' भाग १० अंक ४) अनेकानेक प्रमाण और सुविधा द्वारा दाखीकृतप्रमाण सहित दबदबक और पैर-आमसोडो-बाधुने लगे आधुनी दाखनाओंको संवाचन करकेकले अंतर्दृष्टिगति धम-धमाकरी एक प्रमाण-पत्र है ।

[illegible]

ही हैं, और ऐसे प्राचीन उल्लेख पट्टावली आदिमें पाये भी जाते हैं; किन्तु भाष्य-चूर्णियोंके अद्ययावत बाद ये दोनों मान्यताएँ गलत प्रतीत हुई हैं। यहाँ पर भाष्यकारोंका विचार अप्रस्तुत है, अतः सिर्फ यहाँ पर जैन आगमोंके उपर जो प्राचीन चूर्णियाँ उपलब्ध हैं उन्हींके विषयमें ही विचार किया जाता है। आज जैन आगमोंके उपर जो चूर्णिनामक प्राकृतभाषाप्रधान व्याख्याग्रन्थ प्राप्त हैं उनके नाम क्रमशः ये हैं—

१ आचाराङ्गचूर्णि २ सूत्रकृताङ्गचूर्णि ३ भगवतीचूर्णि ४ जीवाभिगमचूर्णि ५ प्रज्ञापनासूत्रशरीरपदचूर्णि ६ जम्बूद्वीपकरणचूर्णि ७ दशाक्षकल्पचूर्णि ८ कल्पचूर्णि ९ कल्पविशेषचूर्णि १० व्यवहारसूत्रचूर्णि ११ निशीथसूत्रविशेषचूर्णि १२ पञ्चकल्पचूर्णि १३ जीतकल्पवृहच्चूर्णि १४ आवश्यकचूर्णि १५ दशकालिकचूर्णि श्रीअमृतस्यसिंहकृता १६ अक्षकालिकचूर्णि वृद्धविवरणाख्या १७ उत्तराध्ययनचूर्णि १८ नन्दीसूत्रचूर्णि १९ अनुयोगद्वारचूर्णि २० पाक्षिकचूर्णि।

उपर जिन बीस चूर्णियोंके नाम दिये हैं उनका और इनके प्रणेताओंके विषयमें विचार करनेके पूर्व एतद्विषयक चूर्णिग्रन्थोंके प्राप्त उल्लेखोंको मैं एकसाथ यहाँ उद्धृत कर देता हूँ, जो भविष्यमें विद्वानोंके लिये कायमकी विचारसामग्री बनी रहे।

(१) आचाराङ्गचूर्णि । अन्तः—

से हु निरालंबणमपत्तिद्वितो । शेषं तदेव ॥ इति आचारचूर्णि परिसमाप्ता ॥ नमो सुयदेवयाए भगवईए ॥ ग्रन्थाग्रम् ८३०० ॥

(२) सूत्रकृताङ्गचूर्णि । अन्तः—

सद्वहामि जय सूत्रेति गेत्वयं सव्वमिति ॥ नमः सर्वविदे वीराय विगतमोहाय ॥ समाप्तं चेदं सूत्रकृताभिधं द्वितीयमङ्गमिति । भद्रं भवतु श्रीजिनशासनाय । सूत्रगङ्गाङ्गचूर्णिः समाप्ता ॥ ग्रन्थाग्रम् ९५०० ॥

(३) भगवतीचूर्णि—

श्रीभगवतीचूर्णिः परिसमाप्तेति ॥ इति भद्रं ॥

सुअदेवयं तु वंदे जीइ पसाएण सिक्खियं नाणं । विइयं पि वतव (इंभं)देवि पसन्नवाणि पणिवयामि ॥ ग्रन्थाग्रं ६७०७ ॥ श्री॥

(४) जीवाभिगमचूर्णि—

इस चूर्णीकी प्रति अद्यावधि ज्ञात किसी भंडारमें देखनेमें नहीं आई है।

(५) प्रज्ञापनाशरीरपदचूर्णि । अन्तः—

जमिहं समयविरुद्धं वद्धं बुद्धिविकलेण होजा हि । तं जिणवयणविहन्तू खमिऊणं मे पसोहितु ॥ १ ॥

॥ शरीरपदस्स चुण्णी जिणभद्वसमासमणकित्तिया समत्ता ॥ अनुयोगद्वारचूर्णि पत्र ७४ ।

याकिनीमहत्तरासूनु आचार्य श्रीहरिभद्रसुरिहत्त अनुयोगद्वारलवुवृत्ति पत्र ९९ में भी यही उल्लेख है।

(६) जम्बूद्वीपकरणचूर्णि । अन्तः—

एवं उवरिद्धभागस्स तेरासियं पउंजियव्वं । विरुव्वेहवुड्ढीओ आगेयव्वाओ ॥ जंजुद्वीपपण्णत्तिकरणाणं चुण्णी समत्ता ॥

(७) दशाश्रुतस्कन्धचूर्णि । अन्तः—

जाव णया वि । जाव करणओ—सव्वेसि पि णयाणं० गाथा ॥ दशानां चूर्णि समाप्ता ॥

(८) कल्पचूर्णि—

आउयवज्जा उ० गाथा ९९ । विथेण जहा यिसेसावस्सगभासे । 'सामित्तं चेव पगडीणं को केवत्तियं वेधइ ! सवेइ वा केत्तियं को उ ? ति जहा कम्मपगडीए । एतं पसंगेण गतं ।

अन्तः—

नमो य आराधयती दिव्यसंगी भवति संसारमोक्षं हेतुं योग्यं वाचनीम् । अन्यचूर्णिं स्मरन् ॥
अथारम्भ—५३०० अथारम्भगतया निर्मितम् ॥ [सर्वप्रकरणम्— १५२४२]

(५) अन्यविशेषचूर्णि—

अथविशेषचूर्णी समेतानि ॥

(६०) अथविशेषचूर्णि । अन्तः—

अथविशेषचूर्णं भवति अथविशेषचूर्णं वदन् । अथविशेषचूर्णं स्मरन् अथविशेषचूर्णं वदन् ॥

(६१) निर्गन्धविशेषचूर्णि । आदिः—

निर्गन्धविशेषचूर्णं निर्गन्धं य क्रमवत्तुष्टयम् । अथविशेषचूर्णं स्मरन् अथविशेषचूर्णं वदन् ॥
अथविशेषचूर्णं स्मरन् अथविशेषचूर्णं वदन् । अथविशेषचूर्णं स्मरन् अथविशेषचूर्णं वदन् ॥
अथविशेषचूर्णं स्मरन् अथविशेषचूर्णं वदन् । अथविशेषचूर्णं स्मरन् अथविशेषचूर्णं वदन् ॥
अथविशेषचूर्णं स्मरन् अथविशेषचूर्णं वदन् । अथविशेषचूर्णं स्मरन् अथविशेषचूर्णं वदन् ॥

नेत्राद्य उद्देश्यं अन्तर्गते—

नेत्राद्य उद्देश्यं अन्तर्गते अथविशेषचूर्णं स्मरन् अथविशेषचूर्णं वदन् ॥

नेत्राद्य उद्देश्यं अन्तर्गते—

नेत्राद्य उद्देश्यं अन्तर्गते अथविशेषचूर्णं स्मरन् अथविशेषचूर्णं वदन् ॥

जिणभद्वमासमणं निच्छियसुत्तऽध्दयगामलचरणं । तमहं वंदे पयओ परमं परमोवगारकारिणं महम्मं ॥ २ ॥

॥ जीतकेलपचूर्णिः समाप्ता । सिद्धसेनकृतिरेषा ॥

(१४) आवश्यकचूर्णी । अन्तः—

करणनयो—सन्नेसिं पि नयाणं० गाधा ॥ इति आवस्सगानिज्जुत्तिचुणी समाप्ता ॥ मंगलं महाश्रीः ॥

(१५) दशकालिकसूत्रअगस्त्यसिंहचूर्णी । अन्तः—

एवमेतं धम्मसमुत्तिगादिचरण-करणाणेगपरूवणागम्भं नेव्वाणगमणफळावसाणं भवियजणाणंदिकरं चुणि-
समासवयणेण दसकालियं परिसमत्तं ॥

नमः ॥ वीरवरस्स भगवतो तित्थे कोडीगणे सुविपुल्लमि । गुणगणवद्वराभस्सा वैरसामिस्स साहाए ॥ १ ॥

महरिसिसरिससभावा भावाऽभावाण मुणितपरमत्था । रिसिगुत्तखमासमणा खमा-समाणं निधी आसि ॥ २ ॥

तेसिं सीसेण इमा कलसभवमइंदणामधेज्जेणं । दसकालियस्स चुणी पयाण रयणातो उवणत्था ॥ ३ ॥

रुथिरपद-संधिणियता छडियपुणरुत्तविथरपसंगा । वक्खाणमंतरेणावि सिस्समतिवोधणसमत्था ॥ ४ ॥

ससमय-परसमयणयाण जं थ ण समाधितं पमादेणं । तं खमह पसाहेह य इय विण्णत्ती पवयणीणं ॥ ५ ॥

॥ दसकालियचुणी परिसमत्ता ॥

(१६) दशकालिकसूत्रचूर्णिं वृद्धविवरणाख्या । अन्तः—

अञ्जयणाणंतरं 'कालगओ समाधीए' जीवणकालो जस्स गतो समाहीए त्ति । जहा तेण एत्तिण चैव

वाराहगा भवंति त्ति ॥ दशवैकालिकचूर्णीं सम्मत्ता ॥ ग्रन्थाग्रन्थ ७४०० ॥

(१७) उत्तराध्ययनचूर्णि । अन्तः—

वाणिजकुलसंभूतो कोडियगणितो य वज्जसाहीतो । गोवालियमहत्तरओ विक्खातो आसि लोगम्मि ॥ १ ॥

ससमय-परसमयविऊ ओयस्सी देहिमं सुगंभीरो । सीसगणसंपरिवुडो वक्खाणरत्तिप्पियो आसी ॥ २ ॥

तेसिं सीसेण इमं उत्तरसूयणाण चुणिखंडं तु । रइयं अणुगहत्थं सीसाणं मंदबुद्धीणं ॥ ३ ॥

जं एत्थं उस्सुत्तं अयाणमाणेण विरतितं होज्जा । तं अणुओगधरा मे अणुचितेउं समारेंतु ॥ ४ ॥

॥ पट्त्रिंशोत्तराध्ययनचूर्णीं समाप्ता ॥ ग्रन्थाग्रं प्रत्यक्षरागणनया ५८५० ॥

(१८) नन्दीसूत्रचूर्णि । अन्तः—

णि रे ण ग म त्त ण ह स दा जि या (?) पसुपतिसंखगजद्विताकुला ।

कमद्विता धीमतचितियक्खरा फुडं कहेयंतऽभिधाण कत्तुणो ॥ १ ॥

शकराजो पञ्चसु वर्षतेपु व्यतिक्रान्तेपु अष्टनवतेपु नन्द्याध्ययनचूर्णीं समाप्ता इति ॥ ग्रन्थाग्रम् १५०० ॥

(१९) अनुयोगद्वारसूत्रचूर्णि । अन्तः—

चरणमेव गुणो चरणगुणो । अहवा चरणं चारित्रम्, गुणा खमादिया अणेगविधा, तेसु जो जहद्विओ साधू सो
सच्चययसम्मत्तो भवतांति ॥

॥ कृतिः श्रीश्वेताम्बराचार्यश्रीजिनदासगणिमहत्तरपूज्यपादानामनुयोगद्वाराणां चूर्णिः ॥

१. इस चूर्णि पर टिप्पण रचनेवाले श्रीश्रीचंद्रशेखरिजी प्रस्तुतचूर्णिका वृद्धचूर्णिके नामसे उल्लेख करते हैं ।

(२०) पाणिनिसूत्रार्थः । अन्तः—

अनुसुम्भेन संतमां संशयं कदापि नानि २०० ॥ मण्डिकानिद्रानुसुम्भेन संशयं कदापि नानि २०० ॥
 संशयं कदापि नानि ॥

[illegible]

तवो दुविहो—वज्रो अम्भंतरो य । जधा दसवेतालियचुणीए चाउलोदणंतं (१ चालणेदाणंतं) अल्लेणं
णिज्जरट्ठं साधूसु पडिवायणीयं ८ । [आवश्यकचूर्णी विभाग २ पत्र ११७]

आवश्यकचूर्णिके इस उद्धरणमें दशवैकालिकचूर्णीका नाम नजर आता है । दशवैकालिकसूत्रके उपर दो चूर्णीयाँ बाज प्राप्त हैं—एक स्थविर अगस्त्यसिंहप्रणीत और दूसरी जो आगमोद्धारक श्रीसागरानन्दभूषि महाराजने रतलामकी श्री-
ऋषभदेवजी केशरीमलजी जैन श्वेताम्बर संस्थाकी ओरसे सम्पादित की है, जिसके कर्ताके नामका पता नहीं मीला है और जिसके अनेक उद्धरण याकिनीमहत्तरापुत्र आचार्य श्रीहरिभद्रसूरिने अपनी दशवैकालिकसूत्रकी शिष्यहितावृत्तिमें स्थान स्थान पर वृद्धविवरणके नामसे दिये हैं । इन दो चूर्णियोंमेंसे आवश्यकचूर्णिकारको कौनसी चूर्णि अभिप्रेत है ?, यह एक कठिनसी समस्या है । फिर भी आवश्यकचूर्णिके उपर उल्लिखित उद्धरणको गौरसे देखनेसे अपन निर्णयके समीप पहुंच सकते हैं । इस उद्धरणमें “चाउलोदणंतं” यह पाठ गलत हो गया है । वास्तवमें “चाउलोदणंतं” के स्थानमें मूलपाठ “चालणेदाणंतं” ऐसा पाठ होगा । परन्तु मूलस्थानको बिना देखे ऐसे पाठोंके मूल आशयका पता न चलने पर केवल शाब्दिक शुद्धि करके संख्या-
बन्ध पाठोंको विद्वानोंने गलत बनाने के संख्याबन्ध उदाहरण मेरे सामने हैं । दशवैकालिकसूत्रकी प्राप्त दोनों चूर्णियोंको मैंने बराबर देखी है, किन्तु “चाउलोदणंतं”का कोई उल्लेख उनमें नहीं पाया है और इसका कोई सार्थक सम्बन्ध भी नहीं है । दश-
वैकालिकसूत्रकी अगस्त्यसिंहिया चूर्णिमें तपके निरूपणकी समाप्तिके बाद “चालणेदाणि” [पत्र १९] ऐसा चूर्णिकारने लिखा है, जिसको आवश्यकचूर्णिकारने “चालणेदाणंतं” वाक्यद्वारा सूचित किया है । इस पाठको बादके विद्वानोंने मूल स्थानस्थित पाठको बिना देखे गलत शाब्दिक सुधारा कर बिगाड़ दिया—ऐसा निश्चितरूपसे प्रतीत होता है । अतः मैं इस निर्णय पर आया हूं कि—आवश्यकचूर्णिकारनिर्दिष्ट दशवैकालिकचूर्णि अगस्त्यसिंहिया चूर्णी ही है । और इसी कारण अगस्त्यसिंहिया चूर्णी आवश्यकचूर्णिके पूर्वकी रचना है ।

आचार्य श्रीहरिभद्रसूरिने अपनी शिष्यहितावृत्तिमें इस चूर्णीका खास तौरसे निर्देश नहीं किया है । सिर्फ रइवका = सं० रतिवाक्या नामक दशवैकालिकसूत्रकी प्रथम चूलिकाकी व्याख्यामें [पत्र २७३-२] “अन्ये तु व्याचक्षते” ऐसा निर्देश करके अगस्त्यसिंहिया चूर्णीका मतान्तर दिया है । इसके सिवा कहीं पर भी इस चूर्णिके नामका उल्लेख नहीं किया है ।

इस अगस्त्यसिंहिया चूर्णिमें तत्कालवर्ती संख्याबन्ध वाचनान्तर—पाठभेद, अर्थभेद एवं सूत्रपाठोंकी कमी-वैशीका काफी निर्देश है, जो अतिमहत्वके हैं ।

यहाँ पर ध्यान देने जैसी एक बात यह है कि—दोनों चूर्णिकारोंने अपनी चूर्णीमें दशवैकालिकसूत्र उपर एक प्राचीन चूर्णी या वृत्तिका समान रूपसे उल्लेख रइवकाचूलिका की चूर्णीमें किया है । जो इस प्रकार है—

“एथ इमातो वृत्तिगतातो पदुदेसमेत्तगाधाओ । जहा—

दुक्खं च दुस्समाए जाविउं जे १ लहुसगा पुणो कामा २ ।

सातिवहुला मणुस्सा ३ अचिरट्ठाणं चिमं दुक्खं ४ ॥ १ ॥

ओमज्जणम्मि य सिंसा ५ वंतं च पुणो निसेवियं भवति ६ ।

अहरोवसंपया वि य ७ दुलभो धम्मो गिहे गिहिणो ८ ॥ २ ॥

निवयंति परिक्खेसा ९ वंधो ११ सावज्जजोग गिहिवासो १३ ।

एते निग्गि वि दोसा न हांति अणगाखासम्मि १०-१२-१४ ॥ ३ ॥

साधारणा य भोगा १५ पत्तेयं पुण्ण-पावकलमेव १६ ।

जीयमवि माग्वाणं कुसग्गजलचंचलमणिचं १७ ॥ ४ ॥

णत्थि य अवेदयित्ता मोक्खो कम्मस्स निच्छओ एसो १८ ।

पदमद्वारसमेतं वीरवयणसासणे भणितं ॥ ५ ॥”

अगस्त्यसिंहीया चूर्णी

दूसरी मुद्रित चूर्णीमें [पत्र ३५८] “एत्थ इमाओ वृत्तिगाथाओ । उक्तं च” ऐसा लिखकर उपर दी हुई गाथायें उद्धृत कर दी हैं ।

इन उल्लेखोंसे यह निर्विवाद है कि—दशवैकालिकसूत्र के उपर इन दो चूर्णियोंसे पूर्ववर्ती एक प्राचीन चूर्णी भी थी, जिसका दोनों चूर्णीकारोंने वृत्ति नामसे उल्लेख किया है । इससे यह भी कहा जा सकता है कि—आगमोंके उपर पद्य और गद्यमें व्याख्याग्रन्थ लिखनेकी प्रणालि अधिक पुरानी है । और इससे हिमवन्तस्थविरात्रलीमें उल्लिखित निम्न उल्लेख सत्यके समीप पहुंचता है—

“तेषामार्यसिंहानां स्थविराणां मधुमित्रा-ऽऽर्यस्कन्दिलाचार्यनामानौ द्वौ शिष्यावभूताम् । आर्यमधुमित्राणां शिष्या आर्यगन्धहस्तिनोऽतीवविद्वांसः प्रभावकाश्चाभवन् । तैश्च पूर्वधरस्थविरोत्तंसोमास्वातिवाचकरचित-तत्त्वार्थोपरि अशीतिसहस्रश्लोकप्रमाणं महाभाष्यं रचितम् । एकादशाङ्गोपरि चाऽऽर्यस्कन्दिलस्थविरा-णामुपरोधतस्तैर्विवरणानि रचितानि । यदुक्तं तद्वचिताऽऽचाराङ्गविवरणान्ते यथा—

धेरस्स महुमिच्चस्स सेहेहिं तिपुब्बनाणजुचेहिं । मुणिगणविबंदिएहिं ववगयरायाइदोसेहिं ॥ १ ॥

वंभदीवियसाहामउडेहिं गंघहत्थिविवुहेहिं । विचरणमेयं रइयं दोसयवासेसु विक्कमओ ॥ २ ॥

आचाराङ्गसूत्रके इस गन्धहस्तिविवरणका उल्लेख आचार्य श्रीशीलाङ्कने अपनी आचाराङ्गवृत्तिके उपोद्घातमें भी किया है । कुछ भी हो, जैन आगमोंके उपर व्याख्या लिखनेकी प्रणाली अधिक प्राचीन है ।

४. उत्तराध्ययनसूत्रचूर्णिके प्रणेता कौटिकगणीय, वज्रशाखीय एवं वाणिजकुलीय स्थविर गोपालिक महत्तरके शिष्य थे । इस चूर्णिकारने चूर्णमें अपने नामका निर्देश नहीं किया है । इनका निश्चित समयका पता लगाना मुश्किल है । तथापि इस चूर्णमें विशेषावश्यकभाष्यकी स्वोपज्ञ टीकाका सन्दर्भ उल्लिखित होनेके कारण इसकी रचना जिनभद्रगणि क्षमाश्रमणके स्वर्गवासके बादकी है । विशेषावश्यक भाष्यकी स्वोपज्ञ टीका, यह श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणकी अन्तिम रचना है । छठे गणधरवाद तक इस टीकाका निर्माण होने पर आपका देहान्त हो जानेके कारण बादके समयकी टीकाको श्रीकोट्यार्यवादी गणी महत्तरने पूर्ण की है ।

५. जीतकल्पवृद्धचूर्णिके प्रणेता श्रीसिद्धसेनगणी हैं । इस चूर्णिके अन्तमें आपने सिर्फ अपने नामके अनिरिक्त और कोई उल्लेख नहीं किया है । श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणकृत ग्रन्थके उपर यह चूर्णी होनेके कारण इसकी रचना श्रीजिनभद्रगणिके बादकी स्वयंसिद्ध है । इस चूर्णिको टिप्पणकार श्रीश्रीचन्द्रसूरिने वृद्धचूर्णीनामसे दर्शाई है—

नत्वा श्रीमन्महावीरं परोपकृतिहेतवे । जीतकल्पवृद्धचूर्णेर्व्याख्यां काचिन् प्रकाशयते ॥ १ ॥

उपरनिर्दिष्ट सात चूर्णियोंके अनिरिक्त तरह चूर्णियोंके रचयिताके नामका पता नहीं मिलता है । तथापि इन चूर्णियोंके अवलोकनसे जो हकीकत ध्यानमें आई है इसका यहाँ उल्लेख कर देता हूँ ।

यद्यपि आचाराङ्गचूर्णी और सूत्रकृताङ्गचूर्णिके रचयिताके नामका पता नहीं पड़ता है तो भी आचाराङ्गचूर्णमें चूर्णिकारने पंद्रह स्थान पर नागार्जुनीय वाचनाका उल्लेख किया है, उनमेंसे सात स्थान पर “भदन्तनागजुणिया” इस प्रकार बहुमानदर्शक ‘भदन्त’शब्दका प्रयोग किया है, इससे अनुमान होता है कि ये चूर्णिकार नागार्जुनसन्तानीय कोई स्थविर होने चाहिए । सूत्रकृताङ्गचूर्णमें जहाँ जहाँ नागार्जुनीय वाचनाका उल्लेख चूर्णिकारने किया है वहाँ सामान्यतया

नागज्जुणिया इतना ही लिखा है। अतः ये दोनों चूर्णिकार अलग अलग ज्ञात होते हैं। ग्रन्थनामचूर्णोंमें जिनभद्रगणिके विशेषावश्यकभाष्यकी गाथायें एवं स्वोपज्ञ टीकाके सन्दर्भ अनेक स्थान पर उद्धृत किये गये हैं, इससे इस चूर्णिकी रचना श्रीजिनभद्रगणिके बादकी है; तब आचाराङ्गचूर्णोंमें जिनभद्रगणिके कोई ग्रन्थका उल्लेख नहीं है, इस कारण इस चूर्णिकी रचना श्रीजिनभद्रगणिके पूर्वकी होनेका सम्भव अधिक है।

भगवतीसूत्रचूर्णोंमें श्रीजिनभद्रगणिके विशेषणवतीग्रन्थकी गाथाओंके उद्धरण होनेसे, और कल्पचूर्णोंमें साक्षात् विसेसावस्सगभासका नाम उल्लिखित होनेसे इन दोनों चूर्णियोंकी रचना निश्चित रूपसे श्रीजिनभद्रगणिके बादकी है।

दशासूत्रचूर्णोंमें केवलज्ञान-केवलदर्शनविषयक युगपदुपयोगादिवादका निर्देश होनेसे यह चूर्णों भी श्रीजिनभद्रगणिके बादकी है।

आवश्यकचूर्णिके प्रणेताका नाम चूर्णोंकी कोई प्रतिमें प्राप्त नहीं है। श्रीसागरानन्दसूत्रि महाराजने अपने सम्पादनमें इसको जिनदासगणिमहत्तरकृत बतलाई है। प्रतीत होता है कि—आपका यह निर्देश श्रीधर्मसागरोपाध्यायकृत तपागच्छीय पद्यावलीके उल्लेखको देख कर है, किन्तु वास्तवमें यह सत्य नहीं है। अगर इसके प्रणेता जिनदासगणि होते तो आप इस प्रासादभूत महती चूर्णोंमें जिनभद्र गणिके नामका या विशेषावश्यकभाष्यकी गाथाओंका जरूर उल्लेख करते। मुझे तो यही प्रतीत होता है कि—इस चूर्णोंकी रचना जिनभद्रगणिके पूर्वकी और नन्दीसूत्ररचनाके बादकी है।

दशवैकालिकचूर्णों (वृद्धविवरण)में और व्यवहारचूर्णोंमें श्रीजिनभद्रगणिकी कोई कृतिका उद्धरण नहीं है, अतः ये चूर्णोंभी जिनभद्रगणि क्षमाश्रमणके पूर्वकी होनी चाहिए।

जम्बूद्वीपकरणचूर्णों, यह जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिकी चूर्णों मानी जाती है, किन्तु वास्तवमें यह जम्बूद्वीपके परिधि-जीवा-धनुःशृङ्गा आदि आठ प्रकारके गणितकी स्पष्ट करनेवाले किसी प्रकरणकी चूर्णों है। वर्तमान इस चूर्णोंमें मूल प्रकरणकी गाथाओंके प्रतिक मात्र चूर्णिकारने दिये हैं, अतः कुछ गाथाओंका पता जिनभद्राद्य बृहत्क्षेत्रसमासप्रकरणसे लगा है, किन्तु कितनीक गाथाओंका पता नहीं चला है। इस चूर्णोंमें जिनभद्राद्य बृहत्क्षेत्रसमासकी गाथायें भी उद्धृत नजर आती हैं, अतः यह चूर्णों उनके बादकी है।

यहां पर चूर्णियोंके विविध उल्लेखोंको लक्ष्यमें रख कर चूर्णिकारोंके विषयमें जो कुछ निवेदन करनेका था, वह करनेके बाद अंतमें यह लिखना प्राप्त है कि—प्रकाशमान इस नन्दीसूत्रचूर्णोंके प्रणेता श्रीजिनदासगणि महत्तर हैं, जिसका रचनासमय स्पष्टतया प्राप्त नहीं है, फिर भी आज नन्दीसूत्रचूर्णोंकी जो प्रतियाँ प्राप्त हैं उनके अन्तमें संवत्का उल्लेख नजर आता है, जो चूर्णोंरचनाका संवत् होनेकी संभावना अधिक है। यह उल्लेख इस प्रकार है—

शक्रराजः पञ्चमु वर्षशतेषु व्यतिक्रान्तेषु अष्टनवतेषु नन्दव्ययनचूर्णों समाप्ता इति ।

अर्थात् शाके ५९८ (वि. सं. ७३३) वर्षमें नन्दव्ययनचूर्णों समाप्त हुई। इस उल्लेखको कितनेक विद्वान् प्रतिका लेखनसमय मानते हैं, किन्तु यह उल्लेख नन्दव्ययनचूर्णोंकी समाप्तिका अर्थात् रचनासमाप्तिका ही निर्देश करता है, लेखनकालका नहीं। अगर प्रतिका लेखनकाल होता तो 'समाप्ता' ऐसा न लिख कर 'लिखिता' ऐसा ही लिखा होता। इस प्रकार गद्यसन्दर्भमें रचनासंवत् लिखनेकी प्रथा प्राचीन युगमें थी ही, जिसका उदाहरण आचार्य श्रीशीलाङ्गकी आचाराङ्गवृत्तिमें प्राप्त है।

१. "श्रीश्रीरात्र १०५५ वि० ५८५ वर्षे याकिनीसुतः श्रीहरिभद्रसूरिः स्वर्गभाङ्ग । निशीथ-वृहत्कल्पभाष्या-ऽऽवश्यकवि-
चूर्णिकाराः श्रीजिनदासमहत्तरादयः पूर्वगतस्तुतधरश्रीप्रद्युम्नक्षमणादिशिष्यत्वेन श्रीहरिभद्रसूरितः प्राचीना पत्र यथा-
कालभाषिणो बोध्याः । १११५ श्रीजिनभद्रगणियुगप्रधानः । अयं च जिनभद्राद्यप्यानशतकाराद् भिन्नः सम्भाव्यते ।" इति यन-
पत्रिकापत्र ५० ११. पृ० २५३ ॥

सूत्र और चूर्णकी भाषा

नन्दीसूत्र और इसकी चूर्णकी भाषाका स्वरूप क्या है? इस विषयमें अभी यहाँ पर अधिक कुछ मैं नहीं लिखता हूँ। सामान्यतया व्यापकरूपसे मेरेको इस विषयमें जो कुछ कहना था, यह मैंने अखिलभारतीयप्राच्यविद्यापरिषत्-श्रीनगरके लिये तैयार किये हुए मेरे “जैन आगमधर और प्राकृत वाङ्मय” नामक निबन्धमें कह दिया है, जो ‘श्रीहजारीमल स्मृतिग्रन्थ’में प्रसिद्ध किया गया है, उसको देखनेकी विद्वानोंको सूचना है।

परिशिष्टादि

चूर्णिके अन्तमें पाँच परिशिष्ट और शुद्धिपत्र दिये गये हैं। पहले परिशिष्टमें मूल नन्दीसूत्रमें जो गाथायें हैं उनको अकारादिक्रममें दी गई हैं। दूसरे परिशिष्टमें नन्दीचूर्णमें चूर्णिकारने उद्धृत किये उद्धरणोंको अकारादिक्रमसे दिये हैं। तीसरा परिशिष्ट चूर्णिगत पाठान्तर और मतान्तरोंका है। चौथे परिशिष्टमें नन्दीसूत्र और चूर्णमें आनेवाले ग्रन्थ, ग्रन्थकार, स्थविर, नृप, श्रेष्ठी, नगर, पर्वत आदि विशेषणोंका अनुक्रम है। पाँचवे परिशिष्टमें सूत्र और चूर्णमें आनेवाले विषयबोधक एवं व्युत्पत्ति-बोधक शब्दोंका अनुक्रम दिया गया है। इन परिशिष्टोंके बादमें शुद्धिपत्रक दिया गया है। वाचक और अव्येता विद्वानोंसे नम्र निवेदन है कि इस ग्रन्थको शुद्धिपत्रके अनुसार शुद्ध करके पढ़ें।

संशोधन और सम्पादन

इस ग्रन्थके संशोधनमें अनेक महानुभाव विद्वान् व्यक्तियोंका परिश्रम है। खास तोरसे पं. भाई अमृतलाल मोहनलाल भोजकका इस सम्पादनमें महत्त्वका साहाय्य है। जिसने चूर्ण और मूल सूत्रकी प्रामाणिक प्राण्डुलिपि (प्रेसकॉपी) तैयार की है, साधन्त प्रुफपत्र देखे हैं और इस ग्रन्थके महत्त्वपूर्ण परिशिष्ट भी किये हैं। भाई श्री दलमुखभाई मालवणिया—मुख्यनियामक ला. द. भारतीय संस्कृतिविद्यामंदिर—अहमदाबाद तथा पंडित वेचरदासभाई दोसीने मुद्रणके बादमें साधन्त देखकर अशुद्धियोंका परिमार्जन किया है, जिसके फलस्वरूप शुद्धिपत्र दिया है। भाई श्रीदलमुख मालवणिया का आगमोंके संशोधनमें शाश्वत साहाय्य प्राप्त है, यह परम सौभाग्यकी बात है।

वसंत प्रिन्टींग प्रेसके संचालक श्री जयंति दलाल और मेनेजर श्री शानिलाल शाह प्रमुख प्रेसके सर्व भाईओंका प्रस्तुत मुद्रणकार्यमें आंतरिक सहयोग भी हमारे लिए चिरस्मरणीय है।

चूर्णिमहित नन्दीसूत्रके संशोधनमें मात्र ग्रन्थकी प्रतियोंका ही आधार रखा गया है, ऐसा नहीं है, किन्तु मूलसूत्र एवं चूर्णिके उद्धरण प्राचीन व्याख्याग्रन्थोंमें जहाँ जहाँ भी देखनेमें आये उनसे भी तुलना की गई है। इस प्रकार प्राचीन प्रतियाँ, प्राचीन उद्धरणोंके साथ तुलना एवं अनेक विद्वानोंके बौद्धिक परिश्रमके द्वारा इस नन्दीसूत्र एवं चूर्णिका संशोधन और सम्पादन किया गया है। मैं तो सिर्फ इस संशोधन एवं सम्पादनमें साक्षीभूत ही रहा हूँ। अतः इस ग्रन्थके महत्त्वपूर्ण संशोधन एवं सम्पादन का यश हम सभीको एकसमान है।

अन्तमें गीतार्थ मुनिप्रवर एवं विद्वानोंसे मेरी नम्र प्रार्थना है कि—मेरे इस संशोधनमें जो भी छोटी मोटी क्षति प्रतीत हो, इसकी मुझे सूचना दी जायगी तो जरूर अतिरिक्त शुद्धिपत्रकी तोरसे उसको आदर दिया जायगा।

सं. २०२२ माघ शुक्ल पूर्णिमा
अहमदाबाद

मुनि पुण्यविजय

चूर्णियुक्त नन्दीसूत्रका विषयानुक्रम

| सूत्र | विषय | पृष्ठ | सूत्र | विषय | पृष्ठ |
|-------|--|-------|-------|--|-------|
| | चूर्णिकारका उपक्रम-प्रारम्भ | १ | ९ | प्रत्यक्षज्ञानके इन्द्रियप्रत्यक्षों नोइन्द्रियप्रत्यक्ष दो भेद | १४ |
| १ | गाथा १३ मङ्गलसूत्र—गाथा २-३ महावीरपरमात्माकी स्तुति | २ | १० | इन्द्रियप्रत्यक्षके पांच भेद | १४ |
| २ | गाथा ४-१७ सङ्गस्तुति—श्रीसंघकी रथ, चक्र, नगर, पद्म, चन्द्र, सूर्य, समुद्र और मन्दरगिरिके रूपको द्वारा स्तुति | ३-६ | ११ | नोइन्द्रियप्रत्यक्षके तीन भेद | १५ |
| ३ | गाथा १८-१९ जिनावलीसूत्र—चोवीस जिनोंको नमस्कार | ६ | १२ | अवधिप्रत्यक्षके दो भेद—क्षायोपशमिक और भवप्रत्ययिक | १५ |
| ४ | गाथा २०-२१ गणधरावलीसूत्र—भगवान् महावीरके ११ गणधरोंकी स्तुति | ७ | १३ | क्षायोपशमिक तथा गुणप्रत्ययिक अवधि-ज्ञानका स्वरूप | १५ |
| ५ | गाथा २२-४२ स्थविरावलीसूत्र—श्रुतस्थविरोंकी स्तुति गा. २२ सुघर्मा, जम्बूस्वामि, प्रभवस्वामि, शय्यम्भव, गा. २३ यशोभद्र, सम्भुताय, भद्रवाहु, स्थूलभद्र, गा. २४ महागिरि, सुहृस्ती, बहुल, गा. २५ स्वाति, श्यामार्य, शण्डिल्य, जीवधर, गा. २६ आर्यसमुद्र, गा. २७ आर्यमञ्जु, गा. २८ आर्यनन्दिल, गा. २९ वाचक आर्यनागहृस्ती, गा. ३० रेवतिनक्षत्र वाचक, गा. ३१ सिंहवाचक, गा. ३२ स्कन्दिलचाय, गा. ३३ हिमचन्त गा. ३४-३५ नागार्जुन वाचक, गा. ३६-३८ भूतदिघाचाय, गा. ३९ लौहित्य, ४०-४१ दुष्यगणि, गा. ४२ सामान्यरूपसे सर्व स्थविरोंकी स्तुति | ७-१२ | १४ | अवधिज्ञानके आनुगामिकादि छ भेद | १५ |
| ६ | गा. ४३ पर्पत्सूत्र—श्रुतज्ञानके-शास्त्रके अधिकारि-अनधिकारी शिष्यों की परीक्षाके लिये शलघन, कुट, चालनी, परिपूर्णक, हंग आदिके लाक्षणिक उदाहरण और शनपद् अक्षपद् एवं दुर्विदग्धपपत् | १२ | १५-२१ | १ आनुगामिक अवधिज्ञानका स्वरूप, उसके अन्तगत और मध्यगत भेद तथा पुरतो अन्तगत, मार्गतो अन्तगत, पार्श्वतो अन्त-गतादि प्रमेदों का स्वरूप, उन में प्रतिविशेष आदिका निरूपण | १६ |
| ७ | ज्ञानसूत्र—पांच ज्ञानके नाम मत्यादि पांच ज्ञानकी व्युत्पत्ति, क्रम आदिका निरूपण | १३ | २२ | २ अनानुगामिक अवधिज्ञान | १७ |
| ८ | मत्यादिज्ञानोंका प्रत्यक्ष परोक्ष रूपमें विभाजन | १४ | २३ | ३ वर्धमानक अवधिज्ञान, गाथा ४४-४५ अवधिज्ञानका जघन्य और उत्कृष्ट अवधि-क्षेत्र, गा. ४६-४९ द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावकी अपेक्षासे अवधिज्ञानकी वृद्धिका स्वरूप, गा. ५० द्रव्य-क्षेत्र काल-भावका पारस्परिक वृद्धिका स्वरूप गा. ५१ क्षेत्र-कालकी सूक्ष्मताका निरूपण | १७-१८ |
| | | | २४ | ४ हीयमान अवधिज्ञान | १९ |
| | | | २५ | ५ प्रतिपाति अवधिज्ञान | १९ |
| | | | २६ | ६ अप्रतिपाति अवधिज्ञान | १९ |
| | | | २७ | द्रव्य क्षेत्र काल भाव आश्री अवधिज्ञानका स्वरूप | १९ |
| | | | २८ | गा. ५२ अवधिज्ञानका उपसंहार | २० |
| | | | २९ | मनःपर्यवज्ञानका अधिकारी | २० |
| | | | ३० | मनःपर्यवज्ञानके ऋजुमति विपुलमति दो भेद | २२ |
| | | | ३१-३२ | द्रव्य क्षेत्र काल भाव आश्री ऋजुमति-विपुलमतिमनःपर्यवज्ञानका स्वरूप और गा. ५३ मनःपर्यवज्ञानका उपसंहार | २३ |
| | | | | चूर्णिमें—अष्ट रुचकप्रदेश और उप-रिम-अधस्तन क्षुब्धकप्रतरका स्वरूप | २४ |

| सूत्र | विषय | पृष्ठ | सूत्र | विषय | पृष्ठ |
|-------|--|-------|-------|--|-------|
| ३३ | केवलज्ञानके भवस्थ और सिद्धकेवलज्ञान दो भेद | २५ | ५२ | अपायके भेद और एकाधिक शब्द | ३५ |
| ३४-३६ | भवस्थकेवलज्ञानके भेद और स्वरूप | २५ | ५३ | धारणाके भेद और एकाधिक शब्द | ३६ |
| ३७ | सिद्धकेवलज्ञानके अनन्तरसिद्ध परम्परसिद्ध दो भेद | २६ | ५४-५६ | २८ प्रकारके मतिज्ञानका और व्यञ्जनाव-ग्रहका प्रतिबोधक और मल्लक दृष्टान्त द्वारा स्वरूपनिरूपण | ३७-३९ |
| ३८ | अनन्तरसिद्धके तीर्थसिद्ध, अतीर्थसिद्ध आदि पंद्रह भेद | | ५७ | द्रव्यक्षेत्र काल भाव आश्री आभिनिवोधिक ज्ञानका स्वरूप | ४२ |
| | चूर्णिमें-पंद्रह भेदोंका विस्तृत स्वरूप | २६ | ५८ | गा. ७०-७५ आभिनिवोधिक ज्ञानके भेद, अर्थ, कालमान, शब्दध्रुवणका स्वरूप, एकाधिक शब्द और उपसंहार | ४३ |
| ३९ | परम्परसिद्धकेवलज्ञान | २७ | ५९ | श्रुतज्ञानके चौदह भेद | ४४ |
| ४० | द्रव्य क्षेत्र काल भाव आश्री केवलज्ञानका स्वरूप | २८ | ६०-६३ | १ अक्षरश्रुतके संज्ञाक्षर, व्यञ्जनाक्षर और लक्ष्यक्षर, तीन भेद और स्वरूप | ४५ |
| | चूर्णिमें-केवलज्ञान-केवलज्ञानविषयक युग-पदुपयोग-एकोपयोग-क्रमोपयोगवादी चर्चा | २८-३० | ६४ | २ गा. ७६ अनक्षरश्रुत | ४५ |
| ४१ | गा. ५४-५५ केवलज्ञानका उपसंहार | ३० | ६५-६८ | ३ संज्ञिश्रुतके कालिक्युपदेश, हेतूपदेश और दृष्टिवादीपदेश तीन प्रकार, स्वरूप और ४ असंज्ञिश्रुत | ४५-४७ |
| ४२ | परोक्षज्ञानके आभिनिवोधिक श्रुतज्ञान दो भेद | ३१ | | चूर्णिमें-इहा, अपोह, मार्गणा, गवेयणा, चिन्ता, विमर्श इन शब्दोंके अर्थका स्वष्टीकरण | |
| ४३ | आभिनिवोधिकज्ञान और श्रुतज्ञानकी सदैव सहभावितता | ३१ | ६९ | ५ सम्यक्श्रुत-द्वादशाङ्गोंके नाम | ४८ |
| | चूर्णिमें-मतिज्ञान और श्रुतज्ञानका पृथक्करण | | ७० | ६ मिथ्याश्रुत-भारत, रामायण हंसी मासु-रुच्य आदि प्राचीन अनेक जैनतर शास्त्रोंके नाम और सम्यक्श्रुत-मिथ्याश्रुतका तात्त्विक विवेक | ४९-५० |
| ४४ | मतिज्ञान और मतिअज्ञान तथा श्रुतज्ञान और श्रुतअज्ञानका तात्त्विक विवेक | ३२ | ७१-७३ | ७-८ नादि-अनादि ९-१० नपसंभविन अत्यवमिन श्रुतज्ञान, और उनका द्रव्य क्षेत्र काल भाव आश्री स्वरूप | ५१ |
| ४५ | आभिनिवोधिक ज्ञानके श्रुतनिश्चित अश्रुत-निश्चित दो भेद | ३२ | ७४-७५ | परमात्मप्रक्षरका निरूपण और अणिमाट-कर्महित दशार्थों की जोरको अक्षरके अनन्तमें भाग जितने ज्ञानका माध्यमिक गद्गार | ५२ |
| ४६ | अश्रुतनिश्चित आभिनिवोधिकज्ञानके भेद, स्वरूप और उदाहरण | ३३ | | चूर्णिमें-अक्षरपटलका विस्तृत निरूपण | ५२-५६ |
| | गा. ५६ अश्रुतनिश्चित आभिनिवोधिकके औत्पत्तिकी आदि चार भेद गा. ५७-६० औत्पत्तिकी मतिका स्वरूप और उदाहरण गा. ६१-६३ वैतथिकी मतिका स्वरूप और उदाहरण, गा. ६४-६५ कर्मजा मतिका स्वरूप और उदाहरण, गा. ६६-६९ पारिणामिक मतिका स्वरूप और उदाहरण | | ७६ | ११-१२ नमित्त अनामित्त श्रुतज्ञान | ५६ |
| ४७ | श्रुतनिश्चित मतिज्ञानके अवग्रह, ईहा आदि चार भेद | ३४ | ७७ | १३-१४ अवग्रहविष्ट और अवग्रहश्रुत | ५६ |
| ४८ | अवग्रहके अर्थावग्रह व्यञ्जनावग्रह दो भेद | ३४ | ७८ | अवग्रहश्रुतके आवरदक और आवरदक-व्यतिरिक्त दो प्रकार | ५७ |
| ४९ | व्यञ्जनावग्रहके भेद और स्वरूप | ३५ | ७९ | आवरदकश्रुत | ५७ |
| ५० | अर्थावग्रहके भेद और एकाधिक शब्द | ३५ | ८० | आवरदकश्रुतके कालिक और उन्मूलिक दो प्रकार | ५७ |
| ५१ | ईहाके भेद और एकाधिक शब्द | ३५ | | | |

| सूत्र | विषय | पृष्ठ | सूत्र | विषय | पृष्ठ |
|--------|---|-------|--|---|-------|
| ८१ | उत्कालिकश्रुत के २९ नाम चूर्णिमें—२९ उत्कालिकश्रुतके नामोंका व्युत्पत्त्यर्थविवरण | ५७ | १०८-१० | अनुयोगदृष्टिवादके मूलप्रभमानुयोग और गंडिकानुयोग दो प्रकार तथा इनका स्वरूप | ७६ |
| ८२ | कालिकश्रुतके २९ नाम चूर्णिमें—कालिक श्रुतके नामोंका व्युत्पत्त्यर्थविवरण । टिप्पणीमें नामोंकी कमी-बेशीका निर्देश | ५८ | चूर्णिमें—सिद्धगण्डिकाका वर्णन | ७७ | |
| ८३ | आवश्यकव्यतिरिक्तश्रुतका उपसंहार | ६० | १११ | चूलिका दृष्टिवाद | ७९ |
| ८४ | अङ्गप्रविष्टश्रुतके १२ नाम | ६१ | ११२-१३ | दृष्टिवादका परिमाण और निषेध | ८० |
| ८५ | १ आचाराङ्गसूत्रका स्वरूप | ६१ | ११४ | द्वादशाङ्गीके वराधकोंको हानि | ८० |
| ८६ | २ सूत्रकृताङ्गसूत्रका स्वरूप | ६२ | ११५ | द्वादशाङ्गीके आराधकोंको लाभ | ८१ |
| ८७ | ३ स्थानाङ्गसूत्रका स्वरूप | ६३ | ११६ | द्वादशाङ्गीकी शायतिकता | ८१ |
| ८८ | ४ समवायाङ्गसूत्रका स्वरूप | ६४ | ११७ | द्रव्य क्षेत्र काल भाव आश्रीश्रुतज्ञानका स्वरूप | ८२ |
| ८९ | ५ विवादप्रज्ञप्तिअङ्गसूत्रका स्वरूप | ६५ | ११८ | गा. ८१ श्रुतज्ञानके चौदहभेद, गा. ८२ श्रुतज्ञानका लाभ, गा. ८३ बुद्धिके आठ गुण, गा. ८४ सूत्रार्थश्रवणविधि, गा. ८५ सूत्रव्याख्यानविधि और उपसंहार—नन्दी-सूत्रकी समाप्ति | ८२ |
| ९० | ६ ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रका स्वरूप | ६५ | प्रथम परिशिष्ट—नन्दीसूत्रगत गाथाओंका अकारादिक्रम | ८५ | |
| ९१ | ७ उपासकदशाङ्गसूत्रका स्वरूप | ६६ | द्वितीय परिशिष्ट—नन्दीचूर्णिगत उद्धरणोंका अकारादिक्रम | ८७ | |
| ९२ | ८ अन्तर्दृशाङ्गसूत्रका स्वरूप | ६७ | तृतीय परिशिष्ट—नन्दीचूर्णिगत पाठान्तर और मतान्तरोंका निर्देश | ८८ | |
| ९३ | ९ अनुत्तरौपपातिकदशाङ्गसूत्रका स्वरूप | ६८ | चतुर्थ परिशिष्ट—नन्दीसूत्र और चूर्णिगत ग्रन्थ, ग्रन्थकार, स्थविर, नृप, श्रेष्ठी, नगर आदि के विशेषनामोंका अकारादिक्रम | ८९ | |
| ९४ | १० प्रश्नव्याकरणदशाङ्गसूत्रका स्वरूप | ६९ | पञ्चम परिशिष्ट—नन्दीसूत्र और चूर्णिगत विषयविभाग और व्युत्पत्तिदर्शक शब्दोंका अकारादिक्रम | ९६ | |
| ९५ | ११ त्रिपाकसूत्रके दुःखविपाक सुखविपाक दो प्रकार, उनका वर्णन और स्वरूप | ७० | | | |
| ९६ | १२ दृष्टिवाद अंगके पांच भेद | ७१ | | | |
| ९७-१०५ | परिकर्मदृष्टिवादके सात प्रकार और इनके भेद | ७१ | | | |
| १०६ | सूत्रदृष्टिवादके २२ प्रकार | ७३ | | | |
| १०७ | पूर्वगतदृष्टिवाद—चौदह पूर्व | ७५ | | | |

॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

[illegible]

1

[illegible]

22

नदीस्रन गतालाजगवधुजयजगपियमालिनयवे॥ जयजययाणपनयातिवयराणअपिमे
 जयजयजयजयजगणजयजयदपामलावाण॥ स्रदंसवजयव्यायगमनदंजिणमदी
 नमनदंसुरनसंसियमनदं
 दंसणविसुदरवाणसंयनग॥
 वेवारयमनगामनसिपारियस
 म॥ स्रदंसोपजम शियमनवतियमजयियजयस॥ संधं स्रनगवतंसजयमुनेदि
 म॥ स्रदंसोपजम शियमनवतियमजयियजयस॥ संधं स्रनगवतंसजयमुनेदि
 म॥ स्रदंसोपजम शियमनवतियमजयियजयस॥ संधं स्रनगवतंसजयमुनेदि
 म॥ स्रदंसोपजम शियमनवतियमजयियजयस॥ संधं स्रनगवतंसजयमुनेदि

इति प्राकृतप्रत्यपरिपद प्रथमः

इति प्राकृतप्रत्यपरिपद प्रथमः
 नदीस्रन गतालाजगवधुजयजगपियमालिनयवे॥ जयजययाणपनयातिवयराणअपिमे
 जयजयजयजयजगणजयजयदपामलावाण॥ स्रदंसवजयव्यायगमनदंजिणमदी
 नमनदंसुरनसंसियमनदं
 दंसणविसुदरवाणसंयनग॥
 वेवारयमनगामनसिपारियस
 म॥ स्रदंसोपजम शियमनवतियमजयियजयस॥ संधं स्रनगवतंसजयमुनेदि
 म॥ स्रदंसोपजम शियमनवतियमजयियजयस॥ संधं स्रनगवतंसजयमुनेदि
 म॥ स्रदंसोपजम शियमनवतियमजयियजयस॥ संधं स्रनगवतंसजयमुनेदि
 म॥ स्रदंसोपजम शियमनवतियमजयियजयस॥ संधं स्रनगवतंसजयमुनेदि

॥ णमो त्थु णं समणस्स भगवओ महइ-महावीर-वद्धमाणसामिस्स ॥

णमो अणुओगधराणं थेराणं ।

सिरिदेववायगविरइयं

नंदीसुत्तं ।

सिरिजिणदासगणिमहत्तरविरइयाए चुण्णीए संजुयं ।



॥ नमो भगवते वर्द्धमानाय ॥

सव्वसुतक्खेधगादीणं मंगलाधिकारे णंदि त्ति वत्तच्चा । णंदणं णंदी, णंदंति वा अणयेति णंदी, णंदंति वा णंदी, पमोदो हरिसो कंदप्पो इत्यर्थः । तस्स य चतुव्विहो निक्खेवो । गैतासु णाम-द्ववणासु दव्वणंदी जाणगो अणुवउत्तो । अहवा जाणग-भवियसरीरवतिरित्तो वारसविधो तूरसंयातो इमो—

भंभा १ मकुंद २ मदल ३ कडंब ४ झल्लरि ५ हुडुक ६ कंसाला ७ ।

5

काहल ८ तल्लिमा ९ वंसो १० पणवो ११ संखो १२ य वारसमो ॥१॥

[]

भावणंदी णंदिसदोवयुत्तभावो । अहवा इमं पंचविहणाणपरव्वगं णंदि त्ति अज्झयणं, तं च सुत्तंसेण सव्वसुत-
व्वंतरभूतं । तं च सव्वसुतारंभेसु विग्योवसमणत्थंमादीए मंगलं पयुज्जति । तस्स य मंगलट्ठाणावसरपत्तस्स
गुरवो विणेयस्स अत्थ-सुतगोरखुप्पादणत्थं अविच्छेदसंताणागतसुतप्पदरिसणत्थं च इमं थेरावेल्लि कहेत्ता ततो से 10
अत्थं कइयंति । सव्वसुतत्था य जतो तित्थगरप्पभवा, अतो भत्तीए पणवग-सावग-पढग-चित्तगा य पढमत्ताए
णमोक्कारं करेत्ता भणंति—

[सुत्तं १]

जयइ जगजीवजोणीवियाणओ जगगुरू जगाणंदो ।

जगणाहो जगवंधू जयइ जगपियामहो भयवं ॥ १ ॥

15

जयति० गाहा । सोर्तिदियादिविसय-कसाय-परीसहोवसेण-वउयात्तिकम्म-उट्ठप्पगारं वा परप्पवादिणो य
जिणमाणो जित्तं वा जयति त्ति भण्णति । जगं ति—खेत्तेल्लो गो तम्मि जे जीवा नेमि जाओ जोणीओ—मज्झि-सीत-
संबुडादियाओ चउरासीतिलवखविहाणा वा विविहपगारेति जाणमाणो वियाणओ । अहवा नो मदा जेहि कम्महि
जाए जोणीए उव्वज्जति तं तदा जाणति त्ति विसिद्धो जाणगो वियाणगो । अहवा जगगहणातो थम्मा-उथम्मा-
उज्जास-पुग्गल्लगहणं, जीव त्ति सव्वजीवगहणं, जोणि त्ति—जीवा-उजीवुप्पत्तिट्ठाणं, मदा य जे उप्पज्जति विग- 20
ज्जति धुवं वा तं तदा सव्वं जाणइ त्ति वियाणगो । अनेन वचनेन केवल्लनापमान्यतो सव्वभावे सव्वदा जानति

१ 'पखेधतादीणं आ० दा० ॥ २ अणाए त्ति आ० । अणेण त्ति दा० ॥ ३ मदाओ णाम-द्ववणाओ । दव्व'
आ० दा० ॥ ४ 'मादीय मंगलं पयु' आ० ॥ ५ 'वल्लियं कहेत्ता आ० दा० ॥ ६ कइयंति आ० दा० । ७ 'जगणावग'
आ० दा० ॥ ८ जिणवसभो सल्लियवसभविहसगती महावीरो णुज्जगवसभजेणव्वुत्ती । एव वदनेन वणिग्गदति
यथासौ उपलभ्यते ॥ ९ 'सग्गावघाति' आ० । 'सग्गुदघाति' दा० ॥ १० खेत्तमाओ तम्मि आ० दा० ।

- त्ति ख्यापितं भवति । 'जगगुरु' ति जगं ति-सव्वसणिलोगो, तस्स भगवानेव गुरुः । कथम् ? उच्यते—
 [जे० १८६ प्र०] गृणाति शास्त्रार्थमिति गुरुः, ब्रवीतीत्यर्थः, तिरिय-मणुयं-देवा-ऽसुराए परिसाए धम्ममक्खाति ।
 जो वा जं पुच्छति तं सव्वं कहयति ति तेण गुरु, अनेन वचनेन परोपकारित्वं प्रदर्शितं भवति । जगा-सत्ता ताण
 आणंदकारी जगाणंदो । कहं ? उच्यते-सव्वेसिं सत्ताणं अव्वानादणोवदेसकरणत्तातो । जतो भणितं—"सव्वे सत्ता ण
 5 हंतव्वा ण परियावेतव्वा ण परिचेत्तव्वा ण अज्जावेतव्व" [आचा० शु.१ अ.४ उ.२ सू.३] ति । विसेसतो सण्णीणं
 धम्मकहणत्तातो आणंदकारी, ततो वि विसेसतो भव्वसत्ताणं ति । अनेन वचनेन हितोपदेशकर्तृत्वं दर्शितं भवति ।
 जगा-सत्ता ते अण्णेहिं परिभविज्जमाणे रक्खइ ति जगणाहो । कहं ? उच्यते-मणो-वयण-काएहिं कत-कारिता-ऽणुमतेहिं
 रक्खंतो जगणाहो भवति । अनेन वचनेन सव्वपाणीणं सणाहता दंसिता भवति । 'जगबंधु' ति जगा-सत्ता तेसिं
 वंधू जगबंधू । कहं ? उच्यते-जो अण्णो परस्स वा आवतीए वि ण परिचयति सो वंधू, भगवं च सुट्ठु वि
 10 परीसहोवसग्गादिसु वाहिज्जमाणो वि सत्तेसु वंधुत्तं अपरिचयंतो ण विरौहेति ति अतो जगबंधू, अनेन वचनेन
 सव्वसत्तेसु सबंधुता दंसिता भवति । पितामहो ति जो पितुपिता स पितामहो, सो य भगवं चेव । सव्वसत्ताणं
 पितामहो कहं ? उच्यते-सव्वसत्ताण अहिंसादिलक्खणो धम्मो पिता रक्खणत्तातो, सो य धम्मो भगवता पणीतो
 अतो भगवं धम्मपिता, एवं च सव्वसत्ताणं भगवं पितामहो ति । अनेन वचनेन धम्मं पडुच्च आदिपुरिसत्तं ख्यापितं
 भवति । एतीए गाहाए पच्छदस्स पादंतरं इमं—"जिणवसभो सललियवसभविक्रम [जे० १८६ द्वि०] गती महावीरो ।" जिण
 15 एव वसभो जिणवसभो । वसभो ति संजमभारुवहणे । चंकमतो सुभा गायसंचालणक्रिया सललितं भणति ।
 वाम-दाहिणाणं वा पुरिम-पच्छिमचलणाणं जं कमुक्खेवकरणं स विक्रमो भणति, दुपदस्स पुण एगचलणुक्खेवो
 चेव विक्रमो । सेसं कंठं ॥ १ ॥ किंच—

जयइ सुयाणं पभवो तित्थंयराणं अपच्छिमो जयइ ।

जयइ गुरु लोगाणं जयइ महप्पा महावीरो ॥ २ ॥

- 20 जयति सुताणं० गाहा । राग-दोसादिअरी जिणंतो जित्तो वा जयति ति । ['सुताणं'] सव्वसुताणं ति,
 सुतण्णात्थो भगवंतातो पभवो । 'पभवो' ति पसूती । अणिद्वयणपरिहारातो पच्छिमो वि अपच्छिमो भणति,
 अहवा पच्छाणुपुव्वीए अपच्छिमो, रिसभो पच्छिमो । अविंसिट्ठजीवलोगस्स विसिट्ठसण्णिजीवलोगस्स वा, अहवा
 सम्मदिट्ठिमादिसंजता-ऽसंजतलोगस्स गुरु । महं आता जस्स सो य अकम्मवीरियसामत्थतो महात्मा, केवलादि-
 विसिट्ठलद्विसामत्थतो वा महात्मा ॥ २ ॥ किंच—

25 भदं सव्वजगुज्जोयगस्स भदं जिणस्स वीरस्स ।

भदं सुरा-ऽसुरणमंसियस्स भदं धुरयस्स ॥ ३ ॥

भदं सव्व० गाहा । भायते भाति वा भद्रम्, तं भगवतो भवतु ति । सव्वजगं ति-लोगो । अट्ठविहो वि
 लोगनियक्खेवो भाणितव्वो [आव० नि० गा० १०५७] । सेसं कंठं ॥ ३ ॥ इमं संयस्स रहूवगं—

१ 'य-सदेवा' जे० दा० ॥ २ 'ए पवमक्खा' जे० ॥ ३ "सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता ण हंतव्वा ण
 अआवेदव्वा ण परिदावेदव्वा ण परिपेतव्वा ण उद्वेयव्वा" इतिरुयं सूत्रमाचाराद्धे ॥ ४ विसंघेइ आ० ॥ ५ 'महो भवति ।
 अनेन आ० ॥ ६ 'त्यगरा' सं० ॥ ७ 'णाणत्थाणं भग' आ० ॥ ८ 'च्छिमो वीरो, रिसभो आ० ॥

[illegible]

जलोहमिव कल्प्यते । अहवा पुव्ववदं कम्मं पंको, वज्झमाणं जलोहो, ततो विणिग्गतो संघपेदुगो । तस्स णालो
सुत एव रयणं सुतरतणं तं से णालो कतो । पंचमहव्वता य से थिर चि-द्वहा ते कण्णिय चि-वाहिरपत्ता कत
गुणा-मूलुत्तरगुणा य से अणेगविहा [केसरा] तेहिं गुणेहिं आलस्स चि-अधिकयोगयुक्तस्य गुणकेसराल
मूलादिगुणकेसरयुक्तस्य इत्यर्थः ॥ ७ ॥

5 वित्थियगाहाए-परिवुड चि-परिवारितं, जिणसूरस्स धम्मकहणकराणतेयेण प्रबोधितं । अणेगसम
सदस्सा य से अब्भंतरपत्ता कता । एरिसस्स संघपदुमस्स भदं भवतु ॥ ८ ॥ इमं चंद्रसंघरूवगं—

तव-संजममयलंछण ! अकिरियराहुमुहदुद्धरिस ! णिच्चं ।

जय संघचंद ! णिम्मलसम्मत्तविसुद्धजुंहागा ! ॥ ९ ॥

तवसंजम० गाहा । संघचंदस्स मियो तव-संजमा, तेहिं लंछितो । अकिरिय चि-णत्थियवादी ते राहुमु
10 तेहिं दुआधरिसो चि-ण सकते जेतुं । 'णिच्चं' ति सव्वकालं । संकादिविसुद्धसम्मत्तं से जोण्हा । सेसं कंठं ॥ ९ ॥
सूरसंघरूवगं इमं—

परत्तिथियगहपहणासगस्स तवतेयदित्तलेसस्स ।

णाणुज्जोयस्स जए भदं दमसंघसूरस्स ॥ १० ॥

परत्तिथिय० गाहा । हरि-हर-हिरण्ण-सक्कोद्धक-चरग-तावसादयो परत्तिथिया गहा, तेसिं णाणतेय
15 सुतादिणाणप्पभाते णासेति । [जे० १८७ द्वि०] तव-णियमकरणातो य अतीवदित्तमंतलेस्सो । लेस्स चि-रस्सीय
सुतादिणाणुज्जोतसंणणस्स य इमम्मि जए संघसूरस्स भदं भवतु । सेसं कंठं ॥ १० ॥ इमं संघसमुद्धरूवगं—

भदं धिईवेलापरिवुडस्स सज्झायजोगमगरस्स ।

अक्खोभस्स भगवओ संघसमुद्धस्स रुंदस्स ॥ ११ ॥

भदं धिति० गाहा । जैल-वेदियंतरे जं रमणं सा वेला, सा य मेरा वि भण्णाति, एवं संघसमुद्धस्स धि
20 वेला, ताए परिवुडो चि-वेदितो । वायणादिसज्झायजोगकरणं मगरो । परप्रवादोपसर्गादिभिर्न क्षुभ्यते ।
महंतो । सेसं कंठं ॥ ११ ॥

इमं संघस्स मेरूवगं-तस्स य पव्वतस्स इमे रूवगा, तस्स य पव्वतस्स इमे अवयवा-पेहं मेहला उस्स
सिला, मेहलांमुं कूडा, मेहलाए वणं गुहा, गुहासु य मँइदा सुवण्णादिधातवो, नोंणाविधवीरियोसहिपज्जलि
णिज्झरा य सलिलजुत्ता, कुहरा य से मयूरादिपक्खिउवसोभिता, अणुवग्घातिविज्जुलतोवसोभितो य सो, क
25 दिरुक्खुवसोभितो य, अंतरंतरेमु य वेरुलितादिरतणसोभितो । एतेसिं पदाणं पडिरूवेण इमाहिं छहिं गा
उवसंहारो—

१ 'पयुमो आ० । पडमो दा० ॥ २ गुणेहिं अब्भहितस्स चि अधिकं आ० ॥ ३ परिकरियस्स जिणं अ
४ इमं संघस्स चंदरूवगं आ० ॥ ५ 'जोण्हागा सु० । जुंहागा दे० ॥ ६ मियो णाम तव' आ० ॥ ७ सं
सूररूवगं तिमं आ० ॥ ८ धीधेला' सं० दे० ल० ॥ ९ 'परिगयस्स सर्वासु सूत्रप्रतिपु । हरिभद्रहरि-मलयगि
भ्यामेतःपाठानुसारं व्याख्यातमस्ति । चूर्णिमूलसम्मत्तस्तु पाठः कुत्राप्यादर्शं नोपलभ्यते ॥ १० जलवद्वि (?) इद्वियं' ॥
११ 'सुफपटा जे० दा० ॥ १२ मिग्गिदा आ० ॥ १३ णाणादिविविधदित्तोसहिं' आ० ॥ १४ 'संथा(घा)रो आ० ॥

सम्महंसणवइरददरुढगाढावगाढंपेदस्स ।

धम्मवरयणमंडियचामीयरमेहलंगस्स ॥ १२ ॥

णियमूसियकणयसिलायंलुज्जलजलंतचित्तकूडस्स ।

णंदणवणमणहरसुरभिसीलंगंधुंछुमायस्स ॥ १३ ॥

जीवदयासुंदरकंदरुइरियमुणिवरमंडंदइणस्स ।

हेउसयधाउपगलंतंरत्तदित्तोसहिगुहस्स ॥ १४ ॥

संवरवरजलपगलियउज्जरपविणायमाणहारस्स ।

सावगजणपउररवंतमोरणचंतकुहरस्स ॥ १५ ॥

विणयमयपवरमुणिवरफुरंतविज्जुज्जलंतसिहरस्स ।

विविहंकुलकप्परुक्खगणयभरकुसुमियकुलवणस्स ॥ १६ ॥

णाणवरयणदिप्पंतकंतवेरुलियविमलचूलस्स ।

वंदामि विणयपणओ संघमहामंदरगिरिस्स ॥ १७ ॥" [छहिं कुलयं]

सम्महंसण० गाढा । णियमू० गाढा । जीवदया० गाढा । संवर० गाढा । विणय० गाढा ।
पोणवर० गाढा । संघपव्वतस्स सम्महंसणं चेव वइरं । तं च संकादिसल्लरद्वियत्तणयो ददं ति" रुदं ति—वड्ढितं,
कदं ? विमुज्जमाणत्तणयो । गाढं ति—अतीव, अवगाढं ति—ओगाढं, सद्व्याणत्तणतो जीवादिपदत्येसु अतीवओगाढं 15
ति बुत्तं भवति । एतं पेढं । धम्मो दुविहो मूलत्तरगुणेषु । सो य दुविहो वि वरो ति—पथाणो । तत्पुत्तरगुणधम्मो
रयणा, तेहिं मंडिता जे मूलगुणा ते चामीकरं ति, तं च सुवणं, तम्मयी मेहला, तया जुत्तस्स मेहलागस्स ॥१२॥

नियमो ति इंदिय-णोइंदिएसु अणेगविधो, सो य णियमो सिलायत्ता नेहिं चेव उम्मिसो, अमुभज्जवसाण-
विरहितत्तणतो कम्मविमुज्जमाणत्तणतो वा उज्जलमुत्त-उत्थाणसरणत्तणतो ये जयति चित्तं, चित्तिज्जट्ठेण तं चित्तं,
तं चेव कूडं ति चित्तकूडं तस्स । [जे० १८८ प्र०] णंदंति जेण वणयर-जोनिम-भवज-वेमाणिया विज्जाहर-मणया य 20
तेण णंदणं, वणं ति—वणसंडं । तं च लता-वड्ढि-वित्तेणाणेगोनहिमनेहिं गहणं, पत्त-यड्ढ-पुण्ड-फट्ठोपेवेनेहिं मण-

१ 'सणवरवइरददरुढ' दे० शु० ल० मु० । 'सणधोयरदरुढ' सं० ॥ २ 'दरीट' सं० ॥ ३ 'लायग्ग' सं० ॥
४ 'चलज्ज' शु० ॥ ५ 'गंधुद्धमा' सर्वास्यपि सूत्रप्रतिपु । 'गंधुद्धमा' हरि० इती ॥ ६ 'मयंदंघज्ज' दे० । 'मयंदंघज्ज' ल० ॥
७ 'तरयणदित्तो' मो० मु० । 'तरित्थदित्तो' दे० ॥ ८ विणयणयपवर' मप्र० । 'विणयणयपवर' मप्र० । 'विणयणयपवर' मप्र० । 'विणयणयपवर' मप्र० ।
९ 'विविहगुणकप्परुक्खगणलभरकुसुमाउलवणस्स' मप्र० । 'विविहगुणकप्परुक्खगणलभरकुसुमाउलवणस्स' मप्र० । 'विविहगुणकप्परुक्खगणलभरकुसुमाउलवणस्स' मप्र० ।

१० सातदशगाथानन्तरं षृणिगृहादिभिरव्याख्यात गाथाकुलमिदमपि सत्तरति सूत्रप्रतिपुत्तमने—

गुणरयणुज्जलकलयं सीलसुयंघतवमंडिउहेमं । सुयसारसंगसिहरं संघमहामंदरं वदे ॥१॥

नगर रट्ठ च्छा पउमे चंदे सरे ससुह मेरुम्मि । जो उवमिज्जर सययं तं संघ गुणायरे वदे ॥२॥

अत्रार्थे जेसु आदसो ह्य डिप्पणी वसिते—'गुणेत्यादि गाथा २ वृत्तान्तव्याख्यातम्' ।

११ णाणावरण० गाढा जे० रा० । अमुसोअय गाजेद ॥ १२ 'हंसणं से वरं' दे० । १३ 'दि तिरियदित्तं' अ० ॥
१४ य उज्जलं-दित्तमं चित्तिज्जट्ठेण दित्तं, तं देव आ० । अणुत्तरेप्रवचनं पठ ॥ १५ 'विज्जाणयेममंडाज्जमेहि-
सेहि गहणं जे० रा० ॥ १६ 'लोचतेहि' अ० ॥

हारिचणतो मणहरं, गंधतो सुरभिगंधं । सीलवणसंडे वि जम्हा साधवो णंदंति प्रमोदंति रमंतीत्यर्थः । विविहलद्धि-
विसेसतो य मणहरं सीलवणं, विसुद्धभावचणतो य सुगंधं, जहा दब्बवणसंडं गंधेण उद्धुमातं ति-व्याप्तं तहा
सीलगंधेण संघस्स गंधुद्धुमायस्स ॥ १३ ॥ किंच—

जं पव्वतासणं सिलाखखगहणं तं कंदरं ति । भावे जीवेसु दयाकरणसुंदरं जं तं कंदरं ति । तत्थ य
५ उं-प्पावले, दरितो च्ति-दप्पितो, जीवदयाकरणदप्पितो च्ति वुत्तं भवति । को य सो ? मुणिगणो । सो चेव मुणिगणो
मइंदो परप्पवादिसासणसंघमयाण इंदो । कहं ? सितवादउत्तमभावचणतो । हेतु च्ति-पक्खधम्मो कारणं वा, ते
सतग्गसो सुत्ते संभवन्ति । ते य हेतवो धातू, ते य पगलंति परूवणगुहाए । सा य परूवणगुहा णाणादिर-
तणादिएहिं दित्ता, खेलोसहिमादिओसहीहिं वा दित्ता ॥ १४ ॥

एवं दित्तोसहिगुहस्स संघस्स संवरो च्ति-पक्खवाणं, तं चेव सलिलं, किंचि पव्वतग्गातो ओसरितं उज्जरं,
१० ईहावि खाइगभावतो खयोवसमियं उज्जरं, ततो पलंविता खतोवसमितसंवरदगधारा, स चेव धारा हारो, तेण
विरायते-सोभति च्ति । सावगजणो पउरो च्ति-वैहू प्रचुरः सो य गीतद्धणीए रवति च्ति-रडती, ते चेव मोरा
णाडगादीहि य णचंति । जं पव्वतस्स अद्धे समप्पदेसं रुक्खाकुलं [जे० १८८ द्वि०] च तं कुहरं । एवं संघपव्वतस्स
ण्हवणमंडवादी कुहरं ति ॥ १५ ॥

विणयकरणत्तातो विणयमतो मुणी । सो य विणयकरणत्तेण फुरते, तं चेव फुरितं विज्जुतं ति-चक्रोरितं,
१५ तं च उज्जलं ति-निम्मलं, तेण उज्जलत्तेण संघसिहरं जलितमिव लक्खिज्जति । संघसिहरं च पावयणिपुरिसा
दट्ठवा । तत्थ य विविहकुलप्पणा साहवो कप्परुक्खा, खीरासवादिलद्धिफलेहि ये णयभरा, लद्धिहेतुद्विता साहवो
कुसुमिती कुलवण च्ति दट्ठवा ॥ १६ ॥

मति-सुतादिनाणा वर च्ति-पहाणा, ते चेव णाणावेरुलियादिरत्तणा इव कंता, कंता इति-कंतिजुत्ता ।
कंतिजुत्तचणतो चेव सविसतेण जीवादिपदत्थसरूवोवलंभतो दिप्पंति । नाणस्स य मलो णाणावरणं, तच्चिगमातो
२० य विगतमलं । चूलामणिरिव सिहरोवरि चूला, सौं य णाणातिसयगुणेहिं जुत्ता, जुगप्पहाणो पुरिसो चूला इति ।
एवं संघपव्वतस्स पेढादिचूलपज्जवसाणकप्पियस्स वंदामि विणयपणतो च्ति छण्ह वि गाहाणं एतं क्रियापदं ति ॥ १७ ॥

एवं चरमतिथगरस्स संघस्स ये पणामे कते इमा अवसैरप्पत्ता आवली भणति—सा ति विहा तित्यकर १
गणहर २ थेरावली ३ य । तत्थ तित्यगरावलदंसणत्थं इमं भणति—

[सुतं ३]

वंदे उसभं अजिअं संभवमभिणंदणं सुमति सुप्पभ सुपासं ।
ससि पुप्फदंत सीयल सिज्जंसं वासुपुज्जं च ॥ १८ ॥

२५

१ 'स्स क्रिया । जं आ० ॥ २ उत्- प्रावत्ये इत्यर्थः ॥ ३ 'उत्तिमं' आ० ॥ ४ इहावि आ० ॥ ५ बहु-
आ० ॥ ६ गीतज्जुणीए आ० ॥ ७ अहे आ० ॥ ८ पहाणं आ० ॥ ९ 'यणतो आ० दा० ॥ १० य फलभरा आ०
दा० ॥ ११ 'ता गुणवण च्ति आ० ॥ १२ कंतादिजुत्तं आ० ॥ १३ सो य णाणातिसयत्थसरूवोवलंभगुणोद्धजुया
जुगप्पहाणा पुरिसा चूला आ० ॥ १४ त आ० ॥ १५ 'सरापण्णा आ' आ० ॥ १६ सेज्जंसं सं० शु० । सेयंसं सं० ॥

विमलमणंतंइ धम्मं संति कुंथुं अरं च मल्लिं च ।
 मुणिसुव्वय णमि णेमै पांसं तह वद्धमाणं च ॥ १९ ॥ [जुम्मं]
 वंदे उस्समं गाहा । [विमलं गाहा य] कंठा ॥ १८ ॥ १९ ॥ चरमतित्थगरस्स इमा गणहरावली—

[सुत्तं ४]

पढमेत्थ इंदभूती वितिए पुण होति अग्गिभूति ति ।
 ततिए य वाउभूती तंतो वितत्ते सुहम्मे य ॥ २० ॥
 मंडिय-मोरियपुत्ते अकंपिते चेव अयलभाता य ।
 मेतज्जे य पभासे य गणहरा होंति वीरस्से ॥ २१ ॥ [जुम्मं]
 एत्थ गणहरावली ॥ २० ॥ २१ ॥ तो सुहम्मातो धेरावली पवत्ता, जतो [जे० १८९ प्र०] भण्णति—

[सुत्तं ५]

सुहम्मं अग्गिवेसाणं जंवूणां च कासवं ।
 पभवं कचायणं वंदे वच्छं सेज्जंभवं तहा ॥ २२ ॥
 सुहम्मं अग्गिवेसाणं० सिलोगो । समणस्स णं० महावीरस्स कासवगोत्तस्स सुहम्मे अंतेवासी अग्गिवेसायण-
 सगोत्ते । सुहम्मस्स अंतेवासी जंवुणामे कासवे गोत्तेणं । जंवुणामस्स अंतेवासी पभवे कचायणसगोत्ते । पभवस्स
 अंतेवासी सेज्जंभवे वच्छसगोत्ते ॥ २२ ॥

जसभदं तुंगियं वंदे संभूयं चेव माद्वरं ।

भद्ववाहुं च पाइणं थूलभदं च गोयमं ॥ २३ ॥

जसभदं० गाहा । सेज्जंभवस्स अंतेवासी जसभदे तुंगियायणे वग्गयवग्गगोत्ते । जसभदस्स अंतेवासी इमे दो
 धेरा— भद्ववाहु पांय्यागगिसगोत्ते, संभूतविजण य माद्वरसगोत्ते । संभूतविजयस्स अंतेवासी भूतभदे गोतमसगोत्ते ॥ २३ ॥

एलावेंचसगोत्तं वंदामि महागिरिं सुहत्थिं च ।

ततो कासवगोत्तं बहुलस्स सख्वयं वंदे ॥ २४ ॥

१ 'मणंतय' हे० ल० सु० ॥ २ 'णेमि' खं० जे० सु० ॥ ३ 'ए' गाथावृत्तं चण्डिका चाली । 'सुहम्मे' 'सुहम्मे' ।
 पढमित्थ इंदभूई धीप पुण होइ अग्गिभूइ ति । तए य वाउभूई तओ वियत्ते सुहम्मे य । मंडिय मोरियपुत्ते
 अकंपि चैव अयलभाया य । मेतज्जे य सं० हे० सु० मो० ॥ ४ 'वाउभूई' हे० ल० ॥ ५ 'तहा' मो० ॥

६ एकाविसति-द्वाविंशतिगाथयोरन्तराले चण्डिकाऽव्याख्याताऽपि श्रीहरिभट्टसूत्रि-श्रीमलयगिरि-इत्येते एवमेव वदन्ति—
 जिनशासनस्तुतिरूपा इत्येका गाथाऽधिका सर्वेष्वपि सुप्रादर्शेषु वर्तते—

णेव्वुरपहस्तासणयं जयर सया सध्वभावदेसणयं । हुत्तमदमवणान्नमदं जिप्पिद्वर्वात्तसमणयं ।

जयति सु० । जयउ हे० ल० । जिणंदं ल० ॥

७ जंवूणामं सं० ॥ ८ सिज्जंभवं ल० मो० ॥ ९ पायवें हे० ल० ॥ १० 'ए' पण्डितसंज्ञि ७०० । ११ 'यच्छयं'
 सं० हे० ल० । 'वत्सस' सु० ॥ १२ 'गुत्तं' सु० ल० ॥ १३ 'होति' 'सगोत्तं' सु० । श्रीहरिभट्ट-मलयगिरि-इत्येते एवमेव वदन्ति—
 गोरेंद व्याख्यातमिति । चण्डिकास्मात्ता सुप्रादर्शे नोपलभ्यते इत्याह्वयते ।

एलावच्च० गाहा । थूलभद्रस्स अंतेवासी इमे दो येरा-महागिरी एलावसगोत्ते, सुहत्थी य वासिदुसगोत्ते । सुहत्थिस्स सुद्धित-सुपडिबुद्धादयो आवलीते जहा दसासु [अ० ८ सूत्रं २१०] तहा भाणितव्वा, इहं तेहिं अहिगारो णत्थि, महागिरिस्स आवलीए अधिकारो । महागिरिस्स अंतेवासी बहुलो वलिस्सहो य दो जमलभातरो कासवस- गोत्ता । तत्थ वलिस्सहो पावयणी जातो, तस्स थुतिकरणे भणंति-“बहुलस्स सरिस्सवयं वंदे ” । ‘सरिस्सवयं’ ति सरिस्सवयो, वयो य जम्मकालं पडुच्च जा जा सरीरपरिवडिहअवत्था सा सा वतो भण्णति ॥ २४ ॥

हारियंगोत्तं साइं च वंदिमो हारियं च सामज्जं ।

वंदे कोसियगोत्तं संडिलं अज्जजीयधरं ॥ २५ ॥

हारिय० गाहा । वलिस्सहस्स अंतेवासी साती हारियसगोत्तो । सातिस्स अंतेवासी सामजो हारितसगोत्तो चेव । सामजस्स अंतेवासी संडिलो कोसियसगोत्तो, सो य अज्जजीतधरो त्ति अज्जं ति-आर्य आद्यं वा जीतं ति-सुत्तं धरति, सुत्तथस्स अविच्चुत्तिधरणत्तातो, वंदे त्ति वक्कसेसं । पाठंतरं वा “जीवधरं” ति, आर्यत्वात् जीवं धरेति-रक्षती- 10 त्यर्थः । अण्णे पुण भणंति-संडिलस्स अंतेवासी जीवधरो अणगारो, सो य अज्जसगोत्तो ॥ २५ ॥ संडिलस्स सीसो—

तिसमुद्दंखायकिंति दीव-समुद्देसु गहियपेयालं ।

वंदे अज्जसमुद्दं अक्खुभियसमुद्दगंभीरं ॥ २६ ॥

तिसमुद्द० गाहा । पुव्व-दक्खिणा-उपरा ततो समुद्दा, उत्तरतो वेतड्ढो, एतंतरे खातकिंती । सेसं कंठं ॥ २६ ॥ तस्स सीसो [जे० १८९ द्वि०] इमो—

भणगं करगं झरगं पभावगं णाण-दंसणगुणाणं ।

वंदामि अज्जमंगुं सुयसागरपागं धीरं ॥ २७ ॥”

भणगं० गाथा । कालियपुव्वसुत्तत्थं भणतीति भणको । चरण-करणक्रियां करोतीति कारकः । सुत्तथे य मणसा ज्ञायंतो ज्झरको । परप्पवादिजयेण पवयणप्पभावको । नाण-दंसण-चरणगुणाणं च पभावको आधारो य । सेसं कंठं ॥ २७ ॥ तस्स सीसो—

णाणम्मि दंसणम्मि य तव विणए णिच्चकालमुज्जुत्तं ।

अज्जौणंदिलखमणं सिरसा वंदे पसण्णमणं ॥ २८ ॥

१ अत्र चूर्णिरुता हरिभद्रपादैश्च सुहस्ती भगवान् दशाश्रुतस्कन्धाष्टमाध्ययनस्थविरावल्यामिव वासिष्ठगोत्रीयः ख्यापितः, विज मलयगिरिस्वरिचरणैर्यं सूत्रगाथानुलोम्याद् ऐलापत्यसगोत्रीयः ख्यापितः, तदत्र तज्ज्ञा एव प्रमाणम् ॥ २ कोसियगोत्ता दा० ॥ ३ भणियं आ० ॥ ४ “यगुत्तं सायं च दे० शु० ल० ॥ ५ “जीवधर इति चूर्णौ पाठान्तरम् ॥ ६ “तेषां शाण्डिल्या-चार्याणां आर्यजीतधर-आर्यसमुद्दाख्यौ द्वौ शिष्यावभूताम् । आर्यसमुद्दस्याऽऽर्यमङ्गुनामानः प्रभावकाः शिष्याः जाताः” इति हिमवन्तस्थविराचख्याम् पत्र ९ ॥ ७ “खादकिंति ल० ॥ ८ पत्थंतरे आ० ॥ ९ अज्जमंगु ल० ॥ १० अष्टाविंशतितम-गाथानन्तरं शु० प्रति विहाय सार्गं सुत्रप्रतिपु गाथायुगलमिदमधिकमुपलभ्यते—

वंदामि अज्जधम्मं वंदे तत्तो य भद्दगुत्तं च । तत्तो य अज्जवहरं तव-नियमगुणेहिं वयरसमं ॥

वंदामि अज्जरविसयखमणे रक्खियचरित्तसव्वस्से । रयणकरंडगभूओ अणुओगो रक्खिओ जेहिं ॥

एतद्गाथायुगलद्वये जेयु० प्रतापियं टिप्पणी— “वंदामि अज्जधम्मं० “एतदपि गाथाद्वयं न वृत्तौ विद्यतम्, आवलिकान्तर-गम्यन्तिनादिति सम्भाव्यते ।” ११ अज्जानंदिल० गं० ॥

णाणम्मि दं० गाहा । कंठा ॥२८॥ तस्स सीसो—

वड्ढु वायगवंसो जसवंसो अज्जणागहत्थीणं ।

वागरण-करण-भंगी-कम्मप्पयडीपहाणाणं ॥ २९ ॥

वड्ढु० गाहा । 'वड्ढु' ति वृद्धिं यातु । को य सो ? 'वायगवंसो' वायेति सिस्साणं कालिय-पुव्वमुतं 5
ति वातगा-आचार्या इत्यर्थः, गुरुसंणिहाणे वा सिस्सभावेण वाइतं मुतं जेहिं ते वायगा, वंसो ति-पुरिसपव्व-
परंपरेण ठितो वंसो भण्णति । सो चेव जसोवज्जणतो संजमोवज्जणतो वा जसवंसो भण्णति, सो य अणागतवंसो
इत्यर्थः । कस्स सो एरिसो वंसो ? भण्णति, अज्जणागहत्थीणं ति । केरिसाणं ? ति पुच्छा, भण्णति-जीवादिपदत्थ-
पुच्छासु वाकरणे सदपाहुडे वा पहाणाणं, एवं चरणकरणे कालकरणेसु वा सव्वभंगविकप्पणासु य तप्परूवणे य
तहा कम्मप्पगडिपरूवणाए पहाणाणं पुरिसाणं वड्ढु वायगवंसो ॥२९॥ तस्स सीसो—

जच्चंजणधाउसमप्पहाण मुद्दीय-कुवलयनिहाणं ।

10

वड्ढु वायगवंसो रेवड्ढणक्खत्तणामाणं ॥ ३० ॥

जच्चंजण० गाहा । जच्चंजणगगहणं कित्तिमुदासत्थं, सरीरवण्णेण तन्निभो । तहा सरस-पक्कमुद्दियफल्सण्णिभो
य । कुच्छित्तो उव्वलो कुवलयो, सो य कण्हकायो, कुवलयं वा-णीलुप्पलं, कुवलयं वा-रणविसेसो । रेवतिवायगो
ति । सेसं कंठं ॥३०॥ तस्स सीसो—

अयलपुरा णिक्खंते कालियसुयआणुओगिण धीरे ।

15

वंभदीवग सीहे वायगपयमुत्तमं पत्ते ॥ ३१ ॥

अयलपुरा० गाहा । वंभदीवगसाहीणं आयरियाणं नमीवे निक्खंतो सीहवायको. उत्तमवायकत्तणं च तहा-
लमुत्तसंभवं पडुच । सेसं कंठं ॥ ३१ ॥ तस्स सीसो—

जेसि इमो अणुओगो पयइ अज्जावि अइदभग्गम्मि ।

बहुनगरनिग्गयजसे ते वंदे खंदिलायणि ॥ ३२ ॥

20

जेसि इमो० गाहा । कंठं पुण तेसि अणुओगो ? उच्यते-वारम्मसंजण्णि मंते दुभित्तयत्तलं भग्गो
अण्णतो फिडित्ताणं गहण-गुणणा-उणुप्पेदाभावातो मुते विण्णत्ते पुणो मुभित्तयत्तलं जाते मग्गए मंते माहु-
समुदए खंदिलायणियप्पमुहसंघेण 'जो जं संभरति' ति एवं संवडितं ॥ ३० ॥ १९० ॥ वायियमृत्तं । तस्मा य
एतं मधुराए कते तस्मा माधुरा वायगा भण्णति । सा य सीसोवज्जणत्तलं ति कते तस्संतिमां अणुओगो
भण्णति । सेसं कंठं । अण्णे भण्णति जहा-मुतं ण णट्ठं, तस्मि दुभित्तयत्तलं जे अण्णे पडत्ता अणुओगो य २०
विण्णत्ता, एते खंदिलायणि संघरे, तेण मधुराए अणुओगो पुणो माधुमं पडित्तो ति माधुरा वायगा भण्णति,
तस्संतितो य अणुओगो भण्णति ॥ ३२ ॥

१. 'भंगिय-पान्म' २०. सी० रिता । हाति० इति अस्मिन् सार अणुओगो । २. 'सिस्सिदे वा २०० । ३. रेवड्ढण' २०. ४० ॥ ४. कुच्छित्तो उव्वलो कुवलयो आ० ॥ ५. जेसि तिहो वा । ६. अणुओगो वा ।
२०. २

तत्तो हिमवंतमहंतविक्रमे धिइपरकममहंते ।

सज्झायमणंतधरे हिमवंते वंदिमो सिरसा ॥ ३३ ॥

तत्तो हिम० गाहा । हिमवंतपव्वतेण महंतत्तणं तुलं जस्स सो हिमवंतमहंतो, इह भरहे णत्थि अण्णो तत्तुल्लो चि, एस सुत्तिवादो । उत्तरतो वा हिमवंतेण सेसइसामु य समुदेण निवारितो जसो, हिमवंतनिवारणो 5 जसो महंतो चि अतो हिमवंतमहंतो । महंतविक्रमो कंहे ? उच्चयेते—सामत्थतो, महंते वि कुल-गण-संगप्पयोयणे तरति चि, परप्पवादिजण वा विसेसलद्धिसंपणत्तणतो वा महंतविक्रमो । अहवा परीसहोवसग्गे तवविसेसे वा धितिवलेण परकमंतो महंतो । अणंतगम-पज्जवत्तणतो अणंतधरो तं, महंतं हिमवंतणामं वंदे । सेसं कंठं ॥ ३३ ॥

किंच—

कालियसुयअणुओगस्स धारए धारए य पुव्वाणं ।

हिमवंतखमासणे वंदे णागज्जुणायरिए ॥ ३४ ॥

कालिय० गाहा । हिमवंतो चेव हिमवंतखमासमणो । तस्स सीसो णागज्जुणायरितो ॥ ३४ ॥

तस्स इमा गुणकित्तणा—

मिदु-मद्वसंपण्णे अणुपुव्वि वायगत्तणं पत्ते ।

ओहसुयसमायारे णागज्जुणवायए वंदे ॥ ३५ ॥

15 मिदु-मद्व० गाहा । ‘अणुपुव्वी’ सामादियादिमुत्तगाहणेण, कालतो य पुरिमपरियायत्तणेण पुरिसाणु-पुव्वितो य वायगत्तणं पत्तो, ओहसुतं च उस्सग्गो, तं च आयरति । सेसं कंठं ॥ ३५ ॥

णागज्जुणवायगस्स सीसो भूतदिण्णो आयरितो । तस्सिमा गुणकित्तणा तिहिं गाहाहिं—

तंवियवरकणग-चंपय-विमउलवस्कमलगव्वंसखिण्णे ।

भवियजणहिययदइए दयागुणविसारए धीरे ॥ ३६ ॥

अइहभरहपहाणे बहुविहसज्झायसुमुणियपहाणे ।

अणुओगियवरवसहे णाइलकुलवंसणंदिकरे ॥ ३७ ॥

20

१ ‘मणंते’ सं० सं० ल० । जेसु० प्रतो ‘महंते’ इति पाठस्योपरि टिप्पणी यथा— “मणंते” इति वृत्तौ व्याख्यातम् ।” इति ॥
 २ सुत्तिवादो आ० ॥ ३ जसो हिमवंतो चि, अतो हिमवंते महंतविक्रमो, कंहे ? आ० ॥ ४ ‘णत्तो’ अणंतं वा सुतं, महंतं आ० ॥
 ५ ‘णुजोग’ सं० ॥ ६ मिय-मं डे० ॥ ७ पयत्रिशत्तमगाथानन्तरं P प्रति विहाय सर्वास्वपि सूत्रप्रतिपुलभ्यते इदं गाथायुगलमधिकम्—
 गोविंदाणं पि णमो अणुओगे विउलधारणिंदाणं । निच्चं खंति-दयाणं परूवणे तुल्लभिंदाणं ॥
 तत्तो य भूयदिघं निचं तव-संजमे अनिच्चिन्तं । पंडियजणसामघ्नं वंदामी संजमविहन्नु ॥
 एतद्गाथायुगलविषये “इदमपि गाथाद्वयं न वृत्तौ कुतश्चित्” इति जेसु० प्रतो टिप्पणी ॥ ८ पूरिमपरिं आ० । पूरपरिं जे० ॥
 ९ सर्वास्वपि सूत्रप्रतिपु वरकणगतवियचंपयं इति पाठ उपलभ्यते । भगवता हरिभद्राचार्येण “वरकणग० गाहा” इति प्रतीक-
 रूपेण एव पाठः स्वीकृतोऽस्ति । चूर्णी पुनः “तविय० गाहा” इति प्रतीकदर्शनात् चूर्णिकृता तवियवरकणगचंपय० इति पाठ
 आहतः सम्भाव्यते । श्रीमलयगिरिपादस्तु “वरतवियेत्यादि गाथात्रयम्” इति प्रतीकनिष्ठकृतेन वरतवियकणगचंपयं इति
 पाठोऽङ्गीकृतो वर्तते । न तत्रैतत्तच्चूर्णिकृद्-मलयगिरिपादनिर्दिष्टं पाठभेदयुगलं सूत्रादर्शेषु दृश्यते ॥ १० ‘व्यसिरिव’ सं० । ‘व्यसमव’
 १० ॥ ११ ‘णुओयिय’ सं० । ‘णुओइय’ शु० । श्रीहरिभद्र-मलयगिरिभ्यामयमेव पाठः स्वस्ववृत्तौ स्वीकृतोऽस्ति ॥

अथ "गर्भिण्यम्" इति "गर्भिणीनां" मन्त्रादिकम् । इति आदेशमप्यस्तीति ज्ञायते । अथ "गर्भिणीनां" मन्त्रादिकम् । इति आदेशमप्यस्तीति ज्ञायते ।

कहणं ति-अक्खेवमादियाहि कहाहिं धम्मकहणं । तत्थ कुट्ठाण वि आगताणं तरस्स चाणी णेव्वाणि जणेति, किंसंग पुण धम्मस्सवणट्ठमागताणं ? । अहवा पाढो-“सुसवण” ति तत्थ सवण ति-कणा, तेसु मुहं जणेइ ति सुस्सवणा, एवं हकारलोवातो भण्णति । अहवा मुस्सवणा मुहस्सवा इत्यर्थः । सेसं कंठं ॥ ४० ॥ इमा वि दुस्सगणिणो चेव चलणथुती—

सुक्कुमाल० गाहा । पवयणं-दुवालसंगं गणिपिडगं जस्स अत्थि सो पावयणी, गुरयो ति कातुं बहुवयणं भणितं । सेसं कंठं ॥ ४१ ॥ एस णमोक्कारो आयरिययुगप्पहाणपुरिसाणं विसेसग्गहणातो कतो । इमा पुण [जे० १९१ प्र०] सामण्णतो मुतविसिद्धाण केज्जइ—

जे अण्णे भगवंते कालियसुयआणुओगिए धीरे ।

ते पणमिऊण सिरसा णाणस्स पँरूवणं वोच्छं ॥ ४२ ॥

॥ थेरावलिया सम्मत्ता ॥

जे अण्णे० गाहा । कंठा ॥ ४२ ॥

एतं च नाणपरूवणज्जयणं अरिहस्स देज्जति, णो अणरिहस्स देज्जइ । जतो भणितं—

[सुत्तं ६]

सेलघण १ कुडग २ चालणि ३ परिपूणग ४ हंस ५ महिस ६ मेसे ७ य ।

मसग ८ जल्लग ९ विराली १० जाहग ११ गो १२ भेरि १३ आभीरे ॥ ४३ ॥

सा समासओ तिविहा पणत्ता, तं जहा-जाणिया १ अजाणिया २ दुव्वियइहा ३ ।

६. सेलघण० गाहा । एत्थ अरिहा इमे कुडेसु-अप्पसत्थवम्मसारिच्छा, पसत्थभावितेसु य अवम्मसारिच्छा । तहा हंस-मेस-जल्लग-जाहगसारिच्छा अरिहा, गो-भेरी-आभीरेसु य पसत्थोवणतोवणीता अरिहा । सेसा अणअरिहा ॥ ४३ ॥

२० इमस्स य नाणपरूवणज्जयणस्स परूवणे परिसा जाणिगाइ तिविहा जाणितत्त्वा । तत्थ जाणिया— गुण-दोसविसेसण्ण अणभिग्गहिता य कुस्सुइ-मतेसु । सा खलु जाणगपरिसा गुणतत्तिह्हा अगुणवज्जा ॥ १ ॥

[कल्पभा. गा. ३६५]

१ किज्जइ दा० ॥ २ वंदिऊण सं० । वंदित्ण P ॥ ३ परूयणं सं० ॥ ४ आभीरी सर्वास्वपि सूत्रप्रतिपु । एष एव पाठः श्रीहरिभद्र-मलयगिरिभ्यां व्याख्यातोऽस्ति ॥ ५ एतत्सूत्रानन्तरं जे० दे० मो० शुसं० सु० प्रतिपु चूर्णि-वृत्तिकृद्भिरव्याख्यातोऽधिकोऽयं प्रक्षिप्तः सूत्राभासः पाठ उपलभ्यते—

जाणिआ जहा—

खीरमिव जहा हंसा जे घुट्टंति इह गुरुगुणसमिद्धा । दोसे य विवज्जंती तं जाणसु जाणियं परिसं ॥

अजाणिआ जहा—

जा होइ पणइमहुरा मियछावय-सीह-कुक्कुडगभूया । रयणमिव असंठविया अजाणिआ सा भवे परिसा ॥

दुव्वियइहा जहा—

न य कत्थइ निम्माओ न य पुच्छइ परिभवस्स दोसेण । वत्थि व्व वायपुण्णो कुट्ठइ गामेह्वयवियइदो ॥

एतत्संठवियं जेमु० प्रनावियं टिप्पणी केनापि विदुषा टिप्पिता दृश्यते—“जाणियेत्यारभ्य एतद् गायत्रयं वृत्तौ न व्याख्यातम्, अनेक्यकर्तृकं सम्भाव्यते ।” इति ॥ ६ आभीरीसु आ० ॥

इमा अजाणिया—

पगतीमुद्धमजाणिय मियछावय-सीह-कुकुरगभूता । रयणमिव असंठविता सुहसण्णप्पा गुणसमिद्धा ॥ २ ॥

[कल्पभा. गा. ३६७]

इमा दुब्बियइहा—

किंचिम्मत्तगाही पल्लवगाही य तैरियगाही य । दुवितडिहया उ एसा भणिता तिविहा भवे परिसा ॥ ३ ॥ 5

[कल्पभा. गा. ३६९]

एत्थ जाणिया अजाणिया य अरिहा ॥ एवं कतमंगलोवयारो थेरावळिकमे य दंसिए अरिहेसु य दंसितेसु दुत्तसगणिसीसो देववायगो साहुजणहितद्वाए इणमाह —

७. णाणं पंचविहं पण्णत्तं, तं जहा-आभिणिवोहियणाणं १ सुयणाणं २ ओहिणाणं ३ मणपज्जवणाणं ४ केवलणाणं ५ ।

10

७. नाणं पंचविहं० इत्यादि । अस्य व्याख्या—णाती णाणं—अवबोधमेत्तं, भावसाधनो । अहवा णज्जइ अणेणेति नाणं, खयोवसमिय-खाइएण वा भावेण जीवादिपदत्था णज्जंति इति णाणं, करणसाधनो । अहवा णज्जति एतम्मिं चि णाणं, नाणभावे जीवो चि, अधिकरणसाधनो । पंच इति संखा । विधिरिति भेदो । पण्णत्तं पण्णवितं प्ररूपितमित्यनर्थान्तरम्, अत्थतो तित्थकरेहिं, सुत्ततो गणधरेहिं । अहवा पण्णा-बुद्धी, पद्धानपण्णेण अवाप्तं पण्णत्तं, सैम्महिट्ठिणा लद्धमित्यर्थः । अहवा पद्धानपण्णातो अवाप्तं पण्णत्तं, तित्थकरसमीवातो गणधरेहिं 15 लद्धंति वुत्तं भवति । अहवा पण्णा-बुद्धी, तीए अवाप्तं पण्णत्तं, तित्थकर-गणधरा-SSयएहिं कहिज्जंतं [जे० १९१ दि०] बुद्धीए पण्णत्तमिति । तदित्थणेण अधिकतत्थं नाणं संवज्जति । जे पुब्बमुत्तण्णया पंच णाणभेदा तेषां प्रतिपद-मभ्युपगमे जहासदो । अत्थाभिमुहो णियतो बोधो अभिनिबोधः, न एव न्नाधिकप्रत्ययोपादानादाभिनिबो-धिकम् । अहवा अभिनिबोधे भवं, तेण निव्वत्तं, तम्मत्तं तप्पयोगणं वाSSभिणिबोधिकं । अहवा आना तदभिनिबुज्जए, तेण वाSSभिणिबुज्जते, तम्हा वा[SSभिणि]बुज्जते, तम्मिं वाSSभिनिबुज्जए ईयतो अभिनिबोधिकः । न एवाSSभि- 20 णिवोधिकोपयोगातो अनन्यत्वादाभिनिबोधिकम् १ । तदा नन्वुणाति, तेण वा सुणेति, तम्हा वा सुणेति, तम्मिं वा सुणेतीति सुत्तं । आत्मैव वा श्रुतोपयोगपरिणामादनन्यत्वात्सुत्तंतीति धृतम् २ । अवधीयते इति अवधिः, तेण वाSSवधीयते, तम्मिं वाSSवधीयते, अवधानं वा अवधिः, मय्यंटेत्यर्थः । ताए पंचसोपनिबोधणातो दण्वादतो अवधीय(यं)त इति अवधी ३ । परि-सज्जतोभावेण गमणं पज्जयणं पज्जयः, मणमि मणसो वा पज्जयः, मणधर्ययः, न 25 एव नाणं मणपज्जयणाणं । तदा पज्जयणं पज्जयः, मणमि मणसो वा पज्जयः, मणधर्ययः, न एव नाणं मणपज्जयणाणं । तदा आयो पावणं लाभो इत्यनर्थान्तरम्, सज्जतो आतो पज्जातो, मणमि मणसो वा पज्जायो मणपज्जायो, स एव नाणं मणपज्जव(पज्जाव)णाणं । अहवा मणमि मणसो वा पज्जया मणपज्जया, तेषां तेषु वा नाणं मणपज्जवणाणं । तदा मणमि मणसो वा पज्जया [मणपज्जया], तेषां तेषु वा नाणं मणपज्जवणाणं । गमणपरावत्तेगो लाभो भेदा य वतुपरावत्ता । मणपज्जवस्मि नाणे मित्तवयवस्य संचये ॥ १ ॥ ४ ।

[] 30

१ जे होति पण्यमुज्जा मित्तं इति कल्पभाष्ये ॥ २ तुरियं अणं इति ॥ ३ मन्वडिठ्ठिणा अणं ॥ ४ अविश्वं मणिकुपार्यम् इत्यर्थः । “तं जहा” इति सुत्तसो विद्यमानं “तद” इति पदमनुवर्तते तत्रान्वयः । ५ इत्येवमप्युक्तम् ।

“केवलमेगं सुद्धं सकलमसाधारणं अणंतं च ।” [विशेषा. गा० ८४] इत्यर्थः ५ । नाणसद्दो य सव्वत्थाऽऽभिनिबोधिकादीण समानाधिकरणो [जे० १९२ प्र०] दट्ठव्वो, तं जहा—आभिनिबोधिकं च तं नाणं च आभिनिबोधिकनाणं । एवं सव्वेसु देट्ठव्वं । पुच्छा य—किमेस मतिनाणादियो कमो ? एत्थ उत्तरं भणति—एस सकारणो उव्वणासो । इमे य ते कारणा—तुल्लसामित्तणतो सव्वकालाविच्छेदद्वितैत्तणतो इंदिया-ऽणिंदियणिमित्त-
 5 च्छणतो तुल्लखतोवसमकारणत्तणतो सव्वदव्वादिविसयसामणत्तणतो परुखसामन्नत्तणतो य तन्भावे य सेसणाण-संभवातो अतो आदीए मति-सुताइं कताइं । तेसु वि य “मतिपुव्वतं सुतं” [सुत्तं ४३] ति पुव्वं मतिणाणं कतं, तस्स य पिट्ठतो सुतं ति । अहवा इंदिया-ऽणिंदियनिमित्तत्तणमविसिद्धे वि मति-सुतेसु परोवदेसत्तणमेत्तभेदातो अरिहंतवयणकारणत्तणतो य मतिविसेसत्तणतो य सुतस्स मतिअणंतरं सुतं ति । मति-सुयसमाणकालत्तणतो मिच्छ-इंसणपरिगहत्तणतो तव्विवज्जयसाहम्मत्तणतो सामिसाहम्मत्तणतो य कत्थइ कालेगलाभत्तणतो य मति-सुताणंतरं
 10 अवधि ति भणितो । ततो य छउमत्थसामिसामणत्तणतो य पुगलविसयसामणत्तणतो य खयोवसमभावसामणत्तणतो य पच्चखभावसामणत्तणतो य अवहिसमणंतरं मणपज्जवनानं ति । सव्वनाणुत्तमत्तणतो सव्वविंसुद्धत्तणतो य विरत्तसामिसामणत्तणतो य सव्वावसाणलाभत्तणतो य सव्वुत्तमलद्धित्तणतो य तदंते केवलं भणितं ॥

८. तं समासओ दुविहं पणत्तं, तं जहा—पच्चखं च परोखं च ।

८. सव्वं पेतं समासतो दुविधं—पच्चखं च परोखं च० इत्यादि । इह अप्पवत्तव्वत्तणतो पुव्वं पच्चखं
 15 पणविज्जति । इह जीवो अखो । कहं ? उच्यते—“अशू व्याप्तौ” इति, णाणप्पणताए अत्ये असइ ति इच्चेवं जीवो अखो, णाणभावेण वावेति ति भणितं भवति । अहवा “अश भोजने” इच्चेतस्स वा सव्वत्ये असइ ति अखो, पालयति भुङ्क्ते चेत्थर्थः । अखं पति वट्ठति ति पच्चखं, अणिंदियं ति बुत्तं भवति । चसदाओ य से अवधिमादि-भेदा दट्ठव्वा । अखातो [जे० १९२ द्वि०] परेसु जं णाणं उप्पज्जति तं परोखं सभेदं चसदाओ इंदिय-मणो-निमित्तं दट्ठव्वमिति ।

20 ९. से किं तं पच्चखं ? पच्चखं दुविहं पणत्तं, तं जहा—इंदियपच्चखं च णोइंदियपच्चखं च ।

१०. से किं तं इंदियपच्चखं ? इंदियपच्चखं पंचविहं पणत्तं, तं जहा—सोइंदिय-पच्चखं चकिंखदियपच्चखं घाणिंदियपच्चखं रसणेंदियपच्चखं फासिंदियपच्चखं । से तं इंदियपच्चखं ।

25 ९. से किं तं पच्चखं ? पुच्छा । ‘से’ ति स पच्चखनाणभेदो । ‘किं तं’ ति परिपण्हे, कतिभेदं ति बुत्तं भवति । तं च किंखरुवं ? ति आयरियो पभेदमुव्वणसितुं तस्सरुव्वकहणेण पच्चखसरुवं कहितुकामो आह—पच्चखं दुविहं पणत्तं ति ।

१०. इंदियं ति—पुगलेहिं संठाणणिव्वत्तिरुवं दर्व्विंदियं, सोइंदियमादिइंदियाणं सव्वातप्पदेसेहिं स्वा-वरणखतोयसमातो जा लद्धी तं भाविंदियं, तस्स पच्चखं ति इंदियपच्चखं । तं पंचविहं । पर आह—णणु

१ घत्तव्वं मो० ॥ २ ‘द्वितित्तं’ आ० ॥ ३ ‘त्तत्तेण अविसिद्धे वि सति सुते वि परो’ आ० ॥ ४ ‘णतो सम्मत्ता-इवाले’ आ० ॥ ५ चेत्थर्थः आ० ॥ ६ परोखं, तं चेदं, चसं आ० ॥ ७ चक्खुंदियं सं० ॥ ८ जिच्चिंदिय मो० सु० ॥

द्विंदियावत्थियपदेसमेत्तगहणतो सेसप्पदेसेसु अणुवल्ल्ही खयोवसमनित्थता वा भवति । आयरिय आह—ण एवं, पदीवदिट्ठंतसामत्थतो, जहा चतुसालभवणेगदेसजालितो पदीवो सव्वं भवणमुज्जोवेति तहा द्विंदियमेत्तप-
देसविसयपडिवोथओ सव्वातप्पदेसोवयोगत्थपरिच्छेययो खयोपसमसाफलया य भवति चि ण दोसो । भाविंदियो-
वयास्पच्चक्खत्तणतो एतं पच्चक्खं, परमत्थओ पुण चिंतमाणं एतं परोक्खं । कम्हा ? जम्हा परा द्विंदिया,
भाविंदियस्स य तदायत्तप्पणतो ॥

5

११. से किं तं णोइंदियपच्चक्खं ? णोइंदियपच्चक्खं तिविहं पण्णत्तं, तं जहा—ओहि-
णाणपच्चक्खं १ मणपज्जवणाणपच्चक्खं २ केवलणाणपच्चक्खं ३ ।

१२. से किं तं ओहिणाणपच्चक्खं ? ओहिणाणपच्चक्खं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—
भवपच्चतियं च खयोवसमियं च । दोन्हं भवपच्चतियं, तं जहा—देवाणं च णेरतियाणं च ।
दोन्हं खयोवसमियं, तं जहा—मणुस्साणं च पंचेदियतिरिक्खजोणियाणं च ।

10

११-१२. णोइंदियपच्चक्खं ति इंदियातिरिचं । तं तिविहं ओहिमादी । अवहि चि—मज्जाया, सा य
रुविद्वेसु चि, “रुविस्सज्जवे” [तत्त्वा. अ. १ सू. २८] चि वयणातो, तेसु णाणं ओहिनाणं । ‘भवपच्चइतो’
चि भणिते भण्णति—णणु ओधी खयोवसमिते भावे, णरगादिभवो से उदइए भावे, कहं भवपच्चइतो भण्णति ?
चि, उच्यते—सो वि खयोवसमितो चेव, किंतु सो चेव खयोवसमो णरग-देवभवेसु अवस्सं भवति चि, दिट्ठंतो
पक्खीणं आगासगमणं च, एवं भवपच्चइतो भण्णति । खयोवसमियं पुण णर-तिरियाणं, तेसु णावस्सं उपपज्जति 15
चि खयोवसममेवक्खति ॥ खयोवसमसरूवं च सुत्तेणेव [जं० १९३ प्र०] भणितं—

१३. को हेऊ खायोवसमियं ? खायोवसमियं तयावरणिज्जाणं कम्माणं उदिण्णाणं
खएणं अणुदिण्णाणं उवसमेणं ओहिणाणं समुपज्जति । अहवा गुणपडिवण्णस्स
अणगारस्स ओहिणाणं समुपज्जति ।

१३. को हेतु चि इच्चादि । सो य खयोवसमो गुणमंतरेण गुणपडिवणितो वा भवति । गुणमंतरेण जहा 20
गगणवभच्छादिते अद्यापवत्तितो छिद्रेण दिणकरकिरणं च विणिग्गित्ता दग्गमुज्जोवेति तहाउरविभासण
खयोवसमे अवधिलंभो अधापवत्तितो विण्णेतो । गुणपडिवणितो— गुणपडिवण्ण ० इत्यादि । उगमगा-
चरणगुणविगुज्जमाणमवेक्खातो अवधिणाणन्दसणावरणाण खयोवसमो भवति । तस्सोत्तमं य अद्या
उपपज्जति ॥

१४. तं समासओ छुविहं पण्णत्तं, तं जहा—आणुगामियं १ अणुगामियं २
वट्ठमाणयं ३ हायमाणयं ४ पडिवाति ५ अपडिवाति ६ ।

१४. आणुगामियं ति । अणुगमणसीलो अणुगामितो. तदावरणखयोवसमाउत्तमदेसविगुज्जमाणखयो-
लोयणं च ॥

१ गुणमिदं प्रभ-निर्वचनात्मकमपि उपलभ्यते—ते किं तं भवपच्चइयं ? २ दुण्हं, तं जहा—देवाणं च णेरतियाणं च । से
किं तं खयोवसमियं ? २ दुण्हं, तं जहा—मणुस्साणं च पंचेदियतिरिक्खजोणियाणं च । ३ दोन्हं, तं जहा—
रुविद्वेसु चि तं पडिवाति ॥ २ ‘इयं’ ति उच्यते ॥ ३ ‘दिवाति’ इति ।

१५. से किं तं आणुगामियं ओहिणाणं? आणुगामियं ओहिणाणं दुविहं पणत्तं, जहा-अंतगयं च मज्झगयं च ।

१५. अंतगयं ति । जहा जलंतं वणंतं पव्वतंतं, अविस्सिट्ठो अंतसट्ठो । एवं ओराळियसरीरंते ठितं गतं ति एगदं, च आतप्पदेसफट्ठगायहि, एगदिसोवळंभाओ य अंतगतमोधिण्णाणं भण्णति । अहवा सव्वातप्पदेसविमुद्धेसु वि राळियसरीरेगंतेण एगदिसिपासणगतं ति अंतगतं भण्णति । अहवा फुडतरमत्थो भण्णति-एगदिसावधिउवळद-चातो सो अवधिपुरिसो अंतगतो च्ति जम्हा तम्हा अंतगतं भण्णति । मज्झगतं पुण ओराळियसरीरमज्झे ण्णविमुद्धीतो सव्वातप्पदेसविमुद्धीतो वा सव्वदिसोवळंभत्तणतो मज्झगतो च्ति भण्णति । अहवाऽवधिउवळ-खेत्तस्स वा अवधिपुरिसो मज्झगतो च्ति अतो वा मज्झगतो भण्णति ॥

१६. से किं तं अंतगयं? अंतगयं तिविहं पणत्तं, तं जहा-पुरओ अंतगयं ? मग्गओ अंतगयं २ पासतो अंतगयं ३ ।

१७. से किं तं पुरतो अंतगयं? पुरतो अंतगयं से जहानामए केइ पुरिसे उक्कं वा चुडलिअं वा अलायं वा मणिं वा जोइं वा पदीवं वा पुरओ काउं पणोल्लेमाणे पणोल्लेमाणे गच्छेज्जा । से तं पुरओ अंतगयं ।

१८. से किं तं मग्गओ अंतगयं? मग्गओ अंतगयं से जहाणामए केइ पुरिसे उक्कं वा चुडलियं वा अलायं वा मणिं वा जोइं वा पदीवं वा मग्गओ काउं अणुकड्ढेमाणे अणुकड्ढेमाणे गच्छेज्जा । से तं मग्गओ अंतगयं २ ।

१९. से किं तं पासओ अंतगयं? पासओ अंतगयं से जहाणामए केइ पुरिसे उक्कं वा चुडलियं वा अलायं वा मणिं वा जोइं वा पदीवं वा पासओ काउं परिकड्ढेमाणे परिकड्ढेमाणे गच्छेज्जा । से तं पासओ अंतगयं ३ । से तं अंतगयं ।

२०. से किं तं मज्झगयं? से जहानामए केइ पुरिसे उक्कं वा चुडलियं वा अलायं वा मणिं वा जोइं वा पदीवं वा मत्थए काउं गच्छेज्जा । से तं मज्झगयं ।

१६-२०. उक्कं च्ति-दीविया । चुडलि च्ति-तणपिंडी अग्गे पज्जलिता । अलातं ति-दारुयं जलंतं । मणिं वा जलंतं । जोइं च्ति-मल्लगादिठितं अगणिं जलंतं । पदीवो च्ति-दीवतो । 'पुरतो' च्ति अगगतो 'पणोल्लणं' ति

१ सं० प्र० १६-१९ सूत्रेषु सर्वत्र अन्तगयं इति परस्परवर्णनितः पाठो दृश्यते ॥ २ १७-१९ सूत्रेषु चुडलिअं इति पाठो जे० मो० ॥ ३ अत्र १७-१९ सूत्रेषु चुडलिअम्वा अलायम्वा पदीवम्वा मणिम्वा जोतिम्वा इति रूपः पाठः सं० प्र० वर्तते । ४ १७-१९ सूत्रेषु अलायं वा पदीवं वा मणिं वा जोतिं वा पुरतो इति पाठः सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषु दृश्यते । न स गृणि-गृत्तिश्रुत्सम्मतः पाठः कुत्राप्यादर्श उपलभ्यते तथापि व्याख्याकृन्मतानुसारेणास्माभिः परावृत्त्य मूले पाठ उद्धृतोऽस्ति । अलायं वा मणिं वा पदीवं वा जोतिं वा पुरओ इति मु० पाठस्तु नास्मत्समीपस्थेषु आदर्शेषु ईक्ष्यते ॥ ५ काउं समुव्वहमाणे गच्छेज्जा जे० मो० मु० ॥

“णुद भेरणे” इत्थग्घितस्स दंडग्घितस्स वा परंपरेण नयनमित्यर्थः । ‘मग्गतो’ ति पिठ्ठतो ‘अणुकड्ढणं’ ति इत्थग्घितस्स दंडग्घितस्स वा अणु-पच्छयो कड्ढणं ति । ‘पासतो’ ति दाहिणे वामे वा पोसे सा(दी)पा-सय[जे० १९३ द्वि०]जमलट्ठितं । परिकड्ढियं ति-इत्थ-डंडग्घितं वा परि-पासतो द्वितस्स कड्ढणं परिकड्ढणं ॥

सीसो पुच्छति—

२१. अंतगयस्स मज्झगयस्स य को पइविसेसो ? पुरओ अंतगएणं ओहिणाणेणं 5
पुरओ चेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाणि जाणइ पासइ, मग्गओ अंतगएणं
ओहिणाणेणं मग्गओ चेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाणि जाणइ पासइ,
पासओ अंतगएणं ओहिणाणेणं पासओ चेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणां
जाणइ पासइ, मज्झगएणं ओहिणाणेणं सव्वओ समंता संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि
वा जोयणां जाणइ पासइ । से तं आणुगामियं ओहिणाणं । 10

२१. अंतगतस्स० इच्चादि । आयरियाऽऽह-पुरतो० इच्चादि । ‘सव्वतो’ ति सव्वानु वि दिसि-विदिसानु
‘समंता’ इति सव्वानुपदेसेसु सव्वेसु वा विमुद्धफड्ढेसु । अहवा ‘सव्वतो’ तिसव्वानु दिसि-विदिसानु सव्वानुप-
देसफड्ढेसु य । ‘से’ इति निद्वेसे अवधिपुरिसस्स, ‘मंता’ इति णाता । अहवा “समन्ता” इति समं-इच्चादयो तुच्छा
अत्ता इति-प्राप्ता इत्यर्थः ॥

२२. से किं तं अणाणुगामियं ओहिणाणं ? अणाणुगामियं ओहिणाणं से जहा- 15
णामए केइ पुरिसे एगं महंतं जोइट्ठाणं काउं तस्सेव जोइट्ठाणस्स परिपेरंतेहिं परिपेरंतेहिं
परिघोलेमाणे परिघोलेमाणे तमेव जोइट्ठाणं पासइ, अण्णत्य गए ण पासइ, एंवमेव
अणाणुगामियं ओहिणाणं जत्थेव समुप्पज्जइ तत्थेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा
संवद्धाणि वा असंवद्धाणि वा जोयणां जाणइ पासइ, अण्णत्य गए ण पासइ । से तं
अणाणुगामियं ओहिणाणं । 20

२२. णो सच्छंतमणुगच्छति ति अणाणुगामियं, संकलापटिद्वद्वित्तमदीरो एव, तस्स य मेवमादेवममयो-
वममलाभत्तणतो अणाणुगामित्तं । पेरंतं ति-समंततो अणाणिसावणं, तस्स य जोइत्तं सव्वानु दिसि-विदिसानु
समंता परिघोळणं ति-पुणो पुणो इतो इतो परिसवणं ॥

२३. से किं तं वड्ढमाणं ओहिणाणं ? वड्ढमाणं ओहिणाणं पेण्येसु अज्ज-

णिह्वाणेसु वट्टमाणस्स वट्टमाणचरित्तस्स विमुज्झमाणस्स विमुज्झमाणचरित्तस्स
वओ समंता ओही वड्ढइ ।

जावतिया तिसमयाहारगस्स सुहुमस्स पणगजीवस्स ।
ओगाहणा जहन्ना ओहीखेत्तं जहन्नं तु ॥ ४४ ॥

सव्ववहुअगणिजीवा णिरंतं जत्तियं भरेज्जंसु ।
खेत्तं सव्वदिसागं परमोही खेत्तनिदिट्ठो ॥ ४५ ॥

अंगुलमावलियाणं भागमसंखेज्ज दोसु संखेज्जा ।
अंगुलमावलियंतो आवलिया अंगुलपुहत्तं ॥ ४६ ॥

हत्थम्मि सुहुत्तंतो दिवसंतो गाउयम्मि वोद्धव्वो ।
जोयण दिवसपुहत्तं पक्खंतो पण्णवीसोओ ॥ ४७ ॥

भरहम्मि अद्धमासो जंबुद्दीवम्मि साहिओ मासो ।
वासं च मणुयलोए वासपुहत्तं च रुयगम्मि ॥ ४८ ॥

संखेज्जम्मि उ काले दीव-समुद्दा वि होंति संखेज्जा ।
कालम्मि असंखेज्जे दीव-समुद्दा उ भइयव्वा ॥ ४९ ॥

काले चउण्ह बुद्धी कालो भइयव्वु खेत्तबुद्धीए ।
बुद्धीए दव्व-पज्जव भइयव्वा खेत्त-काला उ ॥ ५० ॥

सुहुमो य होइ कालो ततो सुहुमयरं हवइ खेत्तं ।
अंगुलसेदीमेत्ते ओसप्पिणिओ असंखेज्जा ॥ ५१ ॥

से तं वट्टमाणयं ओहिणाणं ।

२३. वर्धनं वड्ढी, पुव्वायत्थातो उव्वरुरि वड्ढमाणं ति, तं च उस्सणं चरणगुणविमुद्धिमपेक्खं, ततो
पसत्थज्झवसाणट्ठाणा तेआदिपसत्थलेसाणुगता भवन्ति, पसत्थदव्वलेसाहि अणुरंजितं चित्तं पसत्थज्झवसाणो भण्णति,
पसत्थज्झवसाणातो य चरणा-ऽऽतविमुद्धी, चरणा-ऽऽतविमुद्धीतो य चरणपच्चतलद्धीणं वड्ढी भवति ।

इमाओ य जहणुक्कोस-विमज्झिमोअिअिद्धदंसणगाहाओ जहा पेडियौण ॥ ४४-५१ ॥

१. 'सायट्ठा' सं० ॥ २. 'वड्ढमाण' ल० ॥ ३. 'वीसं तु ल० । 'वीसंतो डे० ॥ ४. 'वि शु० । य मो० ॥ ५. 'जाणयं
सं० ॥ ६. 'पक्खंतो पसत्थ' आ० दा० ॥ ७. आवश्यकनिर्वुक्तिपीठिकायां गाथाः ३०-३७ ॥

२४. से किं तं हायमाणयं ओहिणाणं ? हायमाणयं ओहिणाणं अप्पसत्थेहि अज्झवसायट्ठाणेहि वद्धमाणस्स वद्धमाणवरित्तस्स संकिलिस्समाणस्स संकिलिस्समाणवरित्तस्स सब्बओ समंता ओही परिहायति । से तं हायमाणयं ओहिणाणं ।

२४. हाणि चि-हस्समाणं, पुव्वावत्थातो अथोऽथो हस्समाणं । तं च वद्धमाणविपक्खतो भाणितव्वं । अप्पसत्थलेस्सोवरंजितं चित्तं अणेगोमुत्तथचित्तणपरं चित्तं संकिलिट्ठं भग्गति ॥

5

२५. से किं तं पडिवाति ओहिणाणं ? पडिवाति ओहिणाणं जण्णं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं वा संखेज्जतिभागं वा वालग्गं वा वालग्गपुहत्तं वा लिक्खं वा लिक्खपुहत्तं वा जूयं वा जूयपुहत्तं वा जवं वा जवपुहत्तं वा अंगुलं वा अंगुलपुहत्तं वा पायं वा पायपुहत्तं वा वियत्थि वा वियत्थिपुहत्तं वा रयणिं वा रयणिपुहत्तं वा कुच्छि वा कुच्छिपुहत्तं वा धणुयं वा धणुयपुहत्तं वा गाउयं वा गाउयपुहत्तं वा जोयणं वा जोयणपुहत्तं वा जोयणसयं वा जोयणसय- 10 पुहत्तं वा जोयणसहस्सं वा जोयणसहस्सपुहत्तं वा जोयणसतसहस्सं वा जोयणसतसहस्सपुहत्तं वा जोयणकोडिं वा जोयणकोडिपुहत्तं वा २-जोयणकोडाकोडिं वा जोयणकोडाकोडिपुहत्तं वा ४-उक्कोसेण लोणं वा पासित्ता णं पडियएज्जा । से तं पडिवाति ओहिणाणं ।

२५. उप्पण्णोहिणाणस्स पुणो पातो चि पडिवाती, नावेन्ययं । तं च खेचविमेमोक्खंमेमं भाणति । ते य इमे-असंखेयंगुलभागादिया । दुप्पभित्ति जाव णय चि अंगुलपुहत्तं भग्गति । दो इय्मा कुच्छी । पडिवातिओ 15 जाव उक्कोमो लोणमेत्ते एव ॥

२६. से किं तं अपडिवाति ओहिणाणं ? अपडिवाति ओहिणाणं जेणं अन्योगस्म एगमवि आगासपदेसं पासेज्जा तेण परं अपडिवाति ओहिणाणं । से तं अपडिवाति ओहिणाणं ।

सव्वाइं खुविदव्वाइं जाणइ पासइ १ । खेत्तओ णं ओहिणाणी जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं जाणइ पासइ, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं अलोए लोयमेत्ताइं खंडाइं जाणइ पासइ २ ।

कालओ णं ओहिणाणी जहण्णेणं आवलियाए असंखेज्जतिभागं जाणइ पासइ, उक्कोसेणं असंखेज्जाओ उस्सप्पिणीओ अवसप्पिणीओ अतीतं च अणागतं च कालं जाणइ पासइ ३ । भावओ णं ओहिणाणी जहण्णेणं अणंते भावे जाणइ पासइ, उक्कोसेणं वि अणंते भावे जाणइ पासइ, सव्वभावाणमणंतभागं जाणइ पासइ ४ ।

२७. वित्थरेण खयोवसमविसेसतो असंखेज्जविधमोधिणाणं, ओधिमादिगतिपज्जवसाणं वा चतुदसविध-
वित्थरो, ते पडुच्च इमं चतुविहं समासतो भण्णति दव्वादि । दव्वओ ओधिणाणी जहण्णेणं तेयाभासंतरे अणंते
दव्वे उवलमति, उक्कोसतो सव्वखुविदव्वाइं । जाणइ त्ति नाणं, तं च जं विसेसग्गाहणं तं णाणं, सागारमित्थर्यः ।
१० पासति त्ति दंसणं, तं च जं सामणग्गाहणं तं दंसणं, अणागारमित्थर्यः । खेत्त-कालतो य सुत्तसिद्धं । भावतो
ओधिणाणी जहण्णेणं अणंते भावे उवलमति, उक्कोसतो वि अणंते, जहण्णपदातो उक्कोसपदं अणंतगुणं । उक्कोसपदे
वि जे भावा ते सव्वभावाण अणंतभागे वट्ठंति ॥

२८. ओही भवपच्चतिओ, गुणपच्चतिओ य वण्णिओ एसो ।

तैस्स य बहू वियप्पा, दव्वे खेत्ते य काले र्य ॥ ५२ ॥

१५ सें तं ओहिणाणं ।

२८. ओही भव० गाथा । दव्वतो बहू विगप्पा परमाणुमादिदव्वविसेसातो । खेत्ततो वि अंगुलअसं-
खेयभागविकप्पादिया । कालतो वि आवलियअसंखेज्जभागादिया । भावतो वि वण्णपज्जवादिया ॥ ५२ ॥

मणपज्जवनानमिदाणि । तस्स सरूवं वण्णितमादीए [पत्रम् १३] । इदाणि सामी विसेसिज्जइ पुंछुत्तरेहि—

२९. [१] से किं तं मणपज्जवणाणं ? मणपज्जवणाणे णं भंते ! किं मणुस्साणं
२० उपपेज्जइ अमणुस्साणं ? गोयमा ! मणुस्साणं, णो अमणुस्साणं । [२] जइ मणु-
स्साणं किं सम्मुच्छिममणुस्साणं गव्वभवकंतियमणुस्साणं ? गोयमा ! णो सम्मुच्छिम-
मणुस्साणं, गव्वभवकंतियमणुस्साणं । [३] जइ गव्वभवकंतियमणुस्साणं किं कम्मभूम-

१ लोयप्पमाणमेत्ताइं खं० सं० विना ॥ २ ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ खं० सं० ॥ ३ 'सेणं पि अणंते खं० ॥
४ 'भागो खं० । चूणिहतां हरिभद्रपादानां चायमेव पाठः सम्मतः ॥ ५ "ओही खेत्त परिमाणे०" इत्याद्यावदयकनिर्युक्तिरु-२७-२८-
गाथायुगलोक्तानि चतुर्दश द्वाराण्यत्रावबोधव्यानि ॥ ६ वण्णिओ दुच्चिहो इति वृत्तिरुद्ग्रां निर्दिष्टः पाठभेदः ॥ ७ तस्सेय खं० ॥
८ द्वापयासत्तमगाथानन्तरं सर्वेऽपि सूत्रादर्शेषु हरिभद्रमृगिपाद-मलयगिरिचरणव्याख्याता एका गाथाऽधिका उपलभ्यते—

जेरतिय-देव-तित्थंकरा य ओहिस्सवाहिरा होत्ति । पासंति सव्वओ खलु सेसा देसेण पासंति ॥
९ सम्मत्ते ओहिं खं० ॥ १० 'णाणपच्चखे सु० ॥ ११ पुच्चसुत्तेहि आ० ॥ १२ 'णाणं भंते ! जे० मो० ॥ १३ मणुस्साणं
खं० । एवमेऽपि अस्मिन् सूत्रे (२९) सर्वत्र हेयम् ॥ १४ उपपेज्जइ इति खं० सं० नास्ति ॥ १५ कम्मभूमिखं० मो० सु० ।
एवमेऽपि सर्वत्र अस्मिन् सूत्रे (२९) हेयम् ॥

गगन्भवकंतियमणुस्साणं अकम्मभूमगगन्भवकंतियमणुस्साणं अंतरदीवगगन्भवकंतियमणु-
स्साणं? गोयमा ! कम्मभूमगगन्भवकंतियमणुस्साणं, णो अकम्मभूमगगन्भवकंतियमणुस्साणं,
णो अंतरदीवगगन्भवकंतियमणुस्साणं । [४] जइ कम्मभूमगगन्भवकंतियमणुस्साणं

किं संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगवभवकंतियमणुस्साणं असंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगवभवकंतियमणुस्साणं ? गोयमा ! संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगवभवकंतियमणुस्साणं, णो 5 असंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगवभवकंतियमणुस्साणं । [५] जइ संखेज्जवासाउयकम्म-

भूमगगवभवकंतियमणुस्साणं किं पज्जतगसंखेज्जवान्नायकम्मभूमगगवभवकंतियमणुस्साणं
अपज्जतगसंखेज्जवासायकम्मभूमगगवभवकंतियमणुस्साणं ? गोयमा ! पज्जतगसंखेज्ज-
वासायकम्मभूमगगवभवकंतियमणुस्साणं, णो अपज्जतगसंखेज्जवान्नायकम्मभूमगगवभ-
वकंतियमणुस्साणं । [६] जइ पज्जतगसंखेज्जवान्नायकम्मभूमगगवभवकंतियमणुस्साणं 10

किं सम्मदिद्विपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगवभवकंतियमणुस्साणं मिच्छदिद्विपज्ज-
त्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगवभवकंतियमणुस्साणं सम्मामिच्छदिद्विपज्जत्तगसंखेज्जवा-
साउयकम्मभूमगगवभवकंतियमणुस्साणं ? गोयमा ! सम्मदिद्विपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयक-
म्मभूमगगवभवकंतियमणुस्साणं, णो मिच्छदिद्विपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगवभव-
कंतियमणुस्साणं, णो सम्मामिच्छदिद्विपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगवभवकंतियमणु- 13
स्साणं । [७] जइ सम्मदिद्विपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगवभवकंतियमणु-

स्साणं किं संजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगवभवकंति यमणुस्साणं अगंज-
यसम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगवभवकंति यमणुस्साणं संजयागंजयसम्मदि-
ट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगवभवकंति यमणुस्साणं । गोयसा ! संजयसम्मदिट्ठि-
पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगवभवकंति यमणुस्साणं, यो असंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तग-
संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगवभवकंति यमणुस्साणं, यो संजयासंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखे-
ज्जवासाउयकम्मभूमगगवभवकंति यमणुस्साणं । [८] जह संजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तग-

मंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगवभवपंतियमणुस्साणं किं पमत्तमंजवममदिद्रिपत्तनममंजेज्ज-
वासाउयकम्मभूमगगवभवपंतियमणुस्साणं अपमत्तमंजवममदिद्रिपत्तनममंजेज्जवासाउय-
कम्मभूमगगवभवपंतियमणुस्साणं ? गोपमा ! अपमत्तमंजवममदिद्रिपत्तनममंजेज्जवासाउय-
कम्मभूमगगवभवपंतियमणुस्साणं, णो पमत्तमंजवममदिद्रिपत्तनममंजेज्जवासाउयक-

म्मभूमगगवभवकंतियमणुस्साणं ।

[९] जइ अपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखे-

ज्जवासाउयकम्मभूमगगवभवकंतियमणुस्साणं किं इट्ठिपत्तअपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तग-
संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगवभवकंतियमणुस्साणं अणिट्ठिपत्तअपमत्तसंजयसम्मदिट्ठि-
पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगवभवकंतियमणुस्साणं ? गोयमा ! इट्ठिपत्तअपमत्तसंजय-
सम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगवभवकंतियमणुस्साणं, णो अणिट्ठिपत्तअपम-
त्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगवभवकंतियमणुस्साणं मणपज्जवणाणं
समुपज्जइ ।

२९. किं मणुस्सा० इत्यादि । सम्मुच्छिमणुस्सा गवभवकंतियमणुस्साण चेव वंत-पित्तादिषु संभवन्ति ।

कम्मभूमगा पंचसु भरहेसु पंचसु एरवदेसु पंचसु महाविदेहेसु य । हेमवतादिषु मिथुणा ते अकर्मभूमगा । तिण्णि
जोयणशते लवणजलमोगाहिता चुल्लहिमवंतसिहरिपादपतिट्ठिता एगूरुगादि छप्पणं अंतरदीवगा । किं पज्जत्ताणं
अपज्जत्ताणं ? ति । पज्जत्ती णाम-सत्ती सामत्थं । सा य पुग्गलद्वोयचया उपपज्जति । ताओ य छ पज्जत्तीतो-
आहार-सरीर-इंदिय-आणापाणू-भासा-मणपज्जत्ती चेति । तत्थ एमिंदियाणं चउरो, विगल्लिंदियाणं पंच, अस्सण्णीणं
संववहारतो पंच चेव, सण्णीणं च छ । तत्थ आहारपज्जत्ती नाम खल-रसपरिणामणसत्ती आहारपज्जत्ती । सत्तावातुतया
परिणामणसत्ती सरीरपज्जत्ती । पंचण्हमिंदियाणं [जे० १९४ द्वि०] जोग्गा पोग्गलै चियित्तु अणाभोगनिव्वत्तित-
विरियकरणेण तव्भावाणयणसत्ती इंदियपज्जत्ती । [उस्सास] पोग्गलजोग्गाणापाणूण गहण-णिसिरणसत्ती आणा-
पाणुपज्जत्ती । वइजोग्गे पोग्गले वेत्तूण भासत्ताए परिणामेत्ता वइजोगत्ताए निसिरणसत्ती भासापज्जत्ती । मण-
जोग्गे पोग्गले वेत्तूणं मणत्ताए परिणामेत्ता मणजोगत्ताए निसिरणसत्ती मणपज्जत्ती । एताओ पज्जत्तीओ पज्ज-
त्तयणामकम्मोदएणं णिव्वत्तिज्जंति, ता जेसिं अत्थि ते पज्जत्तया । अपज्जत्तयणामकम्मोदएणं अणिव्वत्तातो
जेसिं ते अपज्जत्तया । अप्पमत्तसंजता जिणकप्पिया परिहारविमुद्धिया अहालंदिया पडिमापडिवणगा य, एते
सततोवयोगोवउत्तत्तणतो अप्पमत्ता । गच्छवासिणो पुण पमत्ता, कण्हुइ अणुवयोगसंभवतातो । अहवा गच्छवासी
णिग्गता य पमत्ता वि अप्पमत्ता वि भवन्ति परिणामवसओ । 'इड्ढिपत्तस्से'ति आमोसहिमादिअण्णतरइड्ढिपत्तस्से
मणपज्जवणाणं उपपज्जइ ति । अहवा 'ओहिनाणिणो मणपज्जवणाणं उपपज्जति' ति अण्णे नियमं भणन्ति ॥

३०. तं च दुविहं उप्पज्जइ, तं जहा-उज्जुमती य विउलमती य ।

३०. रिज्जु मती उज्जुमई, सामण्णागाहिणि चि भणितं होति । एस मणोपज्जायविसेसो चि । ओसण्णं
विसेसविमुहं उवलभति, णातीववहुविसेसविसिहं अत्थं उवलभइ चि भणितं होति, घडो णेण चित्तिओ चि
जाणति । विपुला मती विपुलमती, वहुविसेसग्गाहिणि चि भणितं भवति । मणोपज्जायविसेसे जाणति, दिट्ठतो
जहा-णेण घडो चित्तितो, तं च देस-कालादिअणेगपज्जायविसेसविसिहं जाणति ॥ अहवा रिज्जु-विपुलमतीणं इमं
दव्यादीहिं विसेससखं भणति—

१ सामत्थतो य आ० ॥ २ 'ला विचिणिसु अणा' आ० ॥ ३ तव्भावापायण' आ० दा० ॥ ४ अणिट्ठिता
ता जेसिं आ० ॥ ५ तं च दुविहं उपपज्जइ इति सं० सं० नास्ति ॥ ६ उपपज्जइ इति शु० नास्ति ॥ ७ विमलमती तं ॥

- ३१-३२. सण्णिणा मणत्तेण मणिते मणोखंधे अणंतं अणंतपदेसिए दव्वट्ठताए तग्गते य वण्णादिए २
मणपज्जयनाणेणं पच्चक्खं पेक्खमाणो जाणाति च्चि भणितं । मणितमत्थं पुण पच्चक्खं ण पेक्खति, जेण मणालं
मुत्तममुत्तं वा, सो य छदुमत्थो तं अणुमाणतो [जे० १९५ प्र०] पेक्खति च्चि अतो पासणता भणिता । अ
छदुमत्थस्स एगविहखयोवसमलंभे वि विविधोपयोगसंभवो भवति, जहेत्थेव रिजु-विपुलमतीणं उवयोगो,
५ विसेस-सामण्णत्थेसु उवउज्जतो जाणति पासइ च्चि भणितं, ण दोसो । विपुलमती पुण दव्वट्ठताए वण्णादिए
अधिगतं जाणतीत्यर्थः । उवरिमहेट्ठिआइं खुड्ढागपतराइं ति इमस्स भावणत्थं इमं पणविज्जति-ति
लोगस्स उड्ढाऽहअट्ठारसजोयणसइयस्स वहुमज्जे एत्थ असंखेयंगुलभागमेत्ता लोगागासप्पयरा अलोणेण संवा
सव्वखुड्ढलतरा खुड्ढागपतर च्चि भणिता, ते य सव्वतो रज्जुप्पमाणा । तेसिं जे वहुमज्जे दो खुड्ढागपतरा तेसिं
वहुमज्जे जंबुद्वीवे रतणप्पभपुढविबहुसमभूमिभागे मंदरस्स वहुमज्जे एत्थ अट्ठपदेसो रुयगो,—जत्तो दिसि-
१० सिविभागो पंचत्तो,—एतं तिरियलोगमज्झं । एतातो तिरियलोगमज्झातो रज्जुप्पमाणखुड्ढागपतरहेत्तितो उ
तिरियं असंखेयंगुलभागअसंखेयंगुलभागवड्ढी, उवरिहुत्तो वि अंगुलअसंखेयभागारोहो चेव, एवं तिरियमुक्खं
अंगुलअसंखेयभागवड्ढीए ताव लोगवड्ढी जेतव्वा जाव उड्ढलोगमज्झं, तातो पुणो तेणेव कमेणं संवट्ठो कात
उवरिलोगंतो रज्जुप्पमाणो । ततो य उड्ढलोगमज्झातो उवरिं हेट्ठा य कमेण खुड्ढागपतरा भाणितव्वा
जाव रज्जुप्पमाणा खुड्ढागपतर च्चि । तिरियलोगमज्झरज्जुप्पमाणखुड्ढागपतरहेत्तितो पि हेट्ठा अंगुलअसंखेयभागव
१५ तिरियं, अहोवगाहेण वि अंगुलस्सअसंखभागो चेव, एवं अहेलोगो वड्ढेतव्वो जाव अहेलोगंतो सत्त रज्जु
सत्तरज्जुपयरेत्तितो उपरुपरिं कमेण खुड्ढागपतरा भाणितव्वा जाव तिरियलोगमज्झरज्जुप्पमाणा खुड्ढागपतर
एवं खुड्ढागपक्खणे कते इमं भणति-उवरिमं ति-तिरियलोगमज्झातो [जे० १९५ द्वि०] अहो जाव णव जो
सता ताव इमीए रयणप्पभपुढवीए उवरिमखुड्ढागपतर च्चि भणंति । तदहो अहेलोगे जाव अहेलोइयगामव
ते हेट्ठिमखुड्ढागपतर च्चि भणंति, रिजुमती अधो ताव पश्यतीत्यर्थः । अहवा अहेलोगस्स उवरिमा खुड्ढागप
२० तिरियलोगस्स य हेट्ठिमा खुड्ढागपतरा ते जाव पश्यतीत्यर्थः ।

अण्णे भणंति—उवरिमं च्चि—अंघोलोगोपरिट्ठिता जे ते उवरिमा । के य ते ? उच्यते—सव्वतिरियल
वत्तिणो तिरियलोगस्स वा अहो णवजोतणसतवत्तिणो ताण चेव जे हेट्ठिमा ते जाव पश्यतीत्यर्थः, इमं ण वड
अहेलोइयगाममणपज्जवणाणसंभैवपाहणत्तणतो । उक्तं च—

इहाधोलौकिका ग्रामा न तिर्यग्लोकवर्त्तिनः । मनोगतांस्त्वसौ भावान् वेत्ति तद्वर्त्तिनामपि ॥ १ ॥

२५

[]

- अड्ढातिरियंगुलगाहणं उस्सेहंगुलमाणतो । कहं णज्जति ? उच्यते—“उस्सेहपमाणतो मिणे देहं” [वृहत्सं
गा. ३३५.] ति वयणातो । अंगुलादिया य जे पमाणा ते सव्वे देहनिष्फण्णा इति, णाणविसयत्तणतो य णं....
रिजुमतिखेत्तोवल्भप्पमाणातो विपुलमती अंभतियतरागं खेत्तं उवलभइ च्चि । एगदिसिं पि अंभतियसंभवो भ
च्चि समंततो जम्हा अंभइयं ति तम्हा विपुलतरागं भण्णति । अहवा जहा घडो घडातो जलाहारत्तणतो अंभति
३० सो पुण नियमा घडागासखेत्तेण विउलत्तरो भवति एवं विउलमती अंभतियतरागं मणोलद्धिजीवदव्वाधारं
जाणति, तं च नियमा विपुलतरं इत्यर्थः । अहवा आयाम-विक्खंभेणं अंभइयतरागं वाहलेण विउलतरं

१ अंतेलोगोपरिट्ठितो जे जे० ॥ २ संभववाहद्वत्तणतो आ० दा० हरिभद्रवृत्ती च ॥ ३ ण दोसो । रिजु
मत्तमगिरिवृत्ती च । ण दो सा० रिजु आ० ॥ ४ आ० दा० आशुच्योः एतत्सव्वर्णो सर्वत्र अंभतिय स्थानं अंभइय इति व

उपलभत इत्यर्थः । अह्वा दो वि पदा एगट्टा । विसिद्धविमुद्धिविसेसदंसगो तरसदो चि, यथा श्रुतः श्रुतर इति । किंच-जहा पगासगद्वविसेसातो खेचविमुद्धि(द्धी) विसेसेणऽक्खिज्जति तहा मणपज्जवनाणचरणविसेसातो रिजुमणपज्जवणाणिसमी[जे० १९६ प्र०]वातो विपुलमणपज्जवणाणी विमुद्धतरागं जाणति, मणपज्जवनाणावरणवयोवसमुत्तमलंभत्तणतो वा वितिमिरतरागं ति भण्णति । अह्वा पुव्ववद्धमणपज्जवनाणावरणवयोवसमुत्तमलंभत्तणतो विमुद्धं ति भणितं तस्सेवाऽऽवरणवज्झमाणस्सऽभावत्तणतो पुव्ववद्धस्स य अणुदयत्तणतो वितिमिरतरागं-ति भण्णति । अह्वा दो वि एते एगट्टिया पदा । मणपज्जवनाणस्स सेसं कटं ॥ इदानीं केवलगाणं भण्णति, मणपज्जवनाणाणंतरं मुत्तकमुद्धित्तणतो विमुद्धिल्लामुत्तमयो य केवलं भण्णति—

३३. से किं तं केवलगाणं ? केवलगाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-भवत्थकेवलगाणं च सिद्धकेवलगाणं च

३३. से किं तं केवलेत्यादि सूत्रम् । केवलगाणमभेदे वि भेदो भव-निद्रावन्यादिर्हि अणेगया इमो 10 कज्जति-मणुस्सभवद्वितस्स जं केवलगाणं तं भवत्थकेवलगाणं । चणदो उम्सणं भेददंसणे । सव्वकम्मविप्पमुको सिद्धो, तस्स जं गाणं तं सिद्धकेवलगाणं ॥

३४. से किं तं भवत्थकेवलगाणं ? भवत्थकेवलगाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-सजोगिभवत्थकेवलगाणं च असजोगिभवत्थकेवलगाणं च ।

३४. मणादितो जोगो, सो य जहासंभवातो, तेण नह जोगेण असजोगी, तस्स जं नाणं तं असजोगिभवत्थ- 15 केवलगाणं । असजोगी-सव्वजोगानिरुद्धो सइत्थेसमावद्वितो, तस्स जं गाणं तं असजोगिभवत्थकेवलगाणं ॥

३५. से किं तं सजोगिभवत्थकेवलगाणं ? सजोगिभवत्थकेवलगाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-पदमसमयसजोगिभवत्थकेवलगाणं च अपदमसमयसजोगिभवत्थकेवलगाणं च, अह्वा चरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलगाणं च अचरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलगाणं च । से तं सजोगिभवत्थकेवलगाणं ।

३६. से किं तं असजोगिभवत्थकेवलगाणं ? असजोगिभवत्थकेवलगाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-पदमसमयअसजोगिभवत्थकेवलगाणं च अपदमसमयअसजोगिभवत्थकेवलगाणं च, अह्वा चरिमसमयअसजोगिभवत्थकेवलगाणं च अचरिमसमयअसजोगिभवत्थकेवलगाणं च । से तं असजोगिभवत्थकेवलगाणं ।

३५-३६. पदमसमयो-केवलगाणप्पत्तिमयो वेद, अपदमो विविधविशेषो-जहा सजोगिभवत्थकेवलगाणं 20 इत्यर्थः । अह्वा एतेवऽर्थो समयविशेषेण अणाता वणिज्जति-सजोगिभवत्थकेवलगाणं च अपदमसमयसजोगिभवत्थकेवलगाणं च, परं असजोगी भाविष्यतीत्यर्थः । अचरिमो चि-चरिमो न भवति, अचरिमो अविशेषणो-अह्वा चरिमसमयो पदमसमयो ताव अचरिमसमयो भण्णति, एतेसु जं गाणं तं असजोगिभवत्थकेवलगाणं । से तं ३६

१. 'दिल्लिविसेसो लक्खि' अ० ८४ ॥ २. 'सजोगो' अ० ८४ ॥

३७. से तं किं सिद्धकेवलणाणं ? सिद्धकेवलणाणं दुविहं पण्णत्तं केवलणाणं च परंपरसिद्धकेवलणाणं च ।

३७. से किं तं सिद्धकेवलनाणेत्यादि सूत्रम् । तत्थ सिद्धकेवलणाणं दुविहं-
णो समयंतरं पत्तं, सिद्धत्वप्रथमसमयवर्तिन इत्यर्थः ॥

३८. से किं तं अणंतरसिद्धकेवलणाणं ? अणंतरसिद्धकेवलणा
तं जहा-तित्थसिद्धा १ अतित्थसिद्धा २ तित्थगरसिद्धा ३ अतित्थ
सिद्धा ४ पत्तेयबुद्धसिद्धा ५ बुद्धबोहियसिद्धा ७ इत्थिलिंगसिद्धा
णपुंसगलिंगसिद्धा १० सलिंगसिद्धा ११ अणलिंगसिद्धा १२ गिहिर्लि
१४ अणेगसिद्धा १५ । से तं अणंतरसिद्धकेवलणाणं ।

३८. ते पंचदसविधा तित्थसिद्धा इत्या । 'तित्थसिद्धा' इति जे तित्थे सिद्धा
चातुवण्णो समणसंघो पढमादिगणधरा वा, भणितं च आरिसे—“तित्थं भंते ! तित्थं ? [जे०
गोतमा ! अरहा ताव तित्थंकरे, तित्थं पुण चातुवण्णो समणसंघो” [भग. श. २८
तित्थकालभावे उप्पण्णे ततो वा तित्थकालभावातो जे सिद्धा ते तित्थसिद्धा १ । अति-
तित्थकालभावस्स वा अभावो । तम्मि अतित्थकालभावे अतित्थकालभावातो वा जे रि
१५ अतित्थं तित्थंतरे तित्थे वा अणुप्पण्णे जहा मरुदेविसामिणिप्पभित्तयो २ । रिसमादयो नि
णामकम्मुदयभावे द्विता तित्थकरभावातो वा सिद्धा तम्हा ते तित्थकरसिद्धा ३ ।
गोतमादि, तम्मि अतित्थकरभावे द्विता अतित्थकरभावातो वा सिद्धा अतित्थकरसिद्धा
बुद्धा, सत्तं अप्पणिज्जं वा जाइसरणादि कारणं पडुच बुद्धा सत्तंबुद्धा । स्फुटतरमुच्यते—
द्धास्ते स्वयंबुद्धा । ते य दुविहा-तित्थगरा तित्थगरवतिरित्ता वा । इह वइरित्तेहि अ-
२० वारसविहो वि उवही भवति, पुव्वाधीतं से सुतं भवति वा ण वा । जति से नत्थि ।
पडियज्जइ, गच्छे य विहरति । अह पुव्वाधीतसुतसंभवो अत्थि तो से लिंगं देवता
पडियज्जति । जइ य एंगविहारविहरणजोग्गो, इच्छा व से तो एको चेव विहरति, अ-
एतम्मि भावे द्विता सिद्धा एतातो वा भावातो सिद्धा सयंबुद्धसिद्धा ५ । 'पत्तेयबुद्धा' प-
भिसमीक्ष्य बुद्धाः प्रत्येकबुद्धाः । वहिःप्रत्ययप्रतिबुद्धानां च पत्तेयं नियमा विधारो ज-
२५ जहा करकंडुमादयो । किंच-पत्तेयबुद्धानां जहण्णेण दुविहो उक्कोसेण णवविधो उवही नि
किंच-पत्तेयबुद्धानां पुव्वाधीतं सुतं नियमा भवति, जहण्णेण एक्कारसंगा, उक्कोसेण नि
देवता पयच्छति, दिग्गज्जितो वा भवति । जतो [जे० १९७ प्र०] भणितं—“रुप्पं पत्ते-
इति । एतम्मि भावे एतातो वा सिद्धा पत्तेयबुद्धसिद्धा ६ । बुद्धबोधिता-जे सत्तंबुद्धा
पत्तेयबुद्धेहि वा कविलादिएहि बोधिता ते बुद्धबोधिता । अहवा बुद्धबोधिएहि बोधित
३० दिएहि जेवणामादयो भवति । अहवा बुद्ध इति-प्रतिबुद्धा, तेहि प्रतियोधिता बुद्धबो-

४०. तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा-द्वओ खेत्तओ व
तैत्थ द्वओ णं केवलणाणी सव्वदव्वं जाणइ पासइ । खेत्तओ
सव्वं खेत्तं जाणइ पासइ । कालओ णं केवलणाणी सव्वं कालं
भावओ णं केवलणाणी सव्वे भावे जाणइ पासइ ।

५ ४०. तं सव्वं पि चतुव्विहं दव्वादियं । 'सव्वदव्व' त्ति धम्मा-अधम्मा-अग्गासात्तयो
अणंतगुणा, तेहिंतो वि पुग्गलदव्वा अणंतगुणा, एते सव्वे सरूवतो जाणति । खेत्तं पि लं
णंतं सरूवतो जाणति । कालं पि समया-अल्लियादियं तीयमणागतसव्वद्वं वा सरूवतो स
वि दुविधा भावा-जीवभावा अजीवभावा य । तत्थ जीवभावा कम्मदयसतत्तपरिणामितल
दिया कम्मदयलक्खणा अणेगविधा, उवसम[जे० १९८ प्र०]-खय-खयोवसमजीवसतत्तल
१० पारिणामिता य जीव-भव्वा-अभव्वत्तादिया, अजीवाअमुत्तदव्वेसु धम्मा-अधम्मा-अग्गासा गति-
अगुरुलहुगा य अणंता, पुग्गलदव्वा य सुहुम-वादर-विस्ससापरिणता अन्निभदधणुमादिया
मादीण य वण्णादिपज्जवा एगादिया अणंता । एते दव्वादिया सव्वे सव्वधा सव्वत्थ सव्वक
अग्गासारलक्खणेहिं णाण-दंसणेहिं जाणति पासति य । एत्थ केवलणाण-दंसणोवयोगेहिं
आयवुद्धीए पक्खेता इमं भणंति—

१५ केयी भणंति जुगवं जाणइ पासति य केवली नियमा ।
अण्णे एगंतरियं इच्छंति सुतोवदेसेणं ॥ १ ॥
अण्णे ण चेव वीसुं दंसणमिच्छंति जिणवरिंदस्स ।
जं चिय केवलनाणं तं चिय से दंसणं वेति ॥ २ ॥ [विशेषण. गा.]

तत्थ जे ते भणंति 'जुगवं जाणति पासति य' ते इमं उववत्ति उवदिसंति—
२० जं केवलाहं सादी-अपज्जवसिताहं दो वि भणिताहं ।
तो वेति केइ जुगवं जाणति पासति य सव्वणू ॥ ३ ॥

किंच—

इह्राअग्गी-णिहणत्तं मिच्छाअवरणक्खयो त्ति व जिणस्स ।
इतरेतरावरणया अहवा णिक्कारणावरणं ॥ ४ ॥

२५ तह य असव्वणुत्तं असव्वदरिसित्तणप्पसंगो य ।
एगंतरोवयोगे जिणस्स दोसा बहुविधीता ॥ ५ ॥ [विशेषण. गा. १]

एवं परेण बहुधा भणिते आगमवादी उत्तरं इमं आह—

भण्णति, भिण्णमुहुत्तोवयोगकाले वि तो तिनाणिस्स ।

मिच्छा छावट्ठी सागरोवमाहं खयोवसमो ॥ ६ ॥ [विशेषण. गा. २]

१ दव्वओ ४ । दव्वओ ल० ॥ २ तत्थ इति ख० सं० ल० शु० नास्ति ॥ ३ दव्वति जा
सं० ॥ ५ 'णु-दुयणुमादीण आ० दा० ॥

जहा छउमत्यस्स मति-मुता-ऽवधिणाणेनु अंतमुहुत्तकानोवयोगसंभवे उवयोगा-ऽणुवयोगेण य छावट्टिसागरा
से ठितिकालो दिट्ठो, तद्वा जति जिणस्स णाण-दंसणा सादिअपज्जवसाणा उवयोगा-ऽणुवयोगेण भवंति तो को
दोसो ? । जति एतं ते णाणुमतं तो इमं ते कहं अणुमतं भविस्सइ ?—

अहं ण वि एतं तो सुण, जहेव खीणंतराहओ अरहा ।

संते वि अंतरायक्खयम्मि पंचप्पगारम्मि ॥ ७ ॥

सततं ण देह [जे० १९८ छि०] लभइ व भुंजइ उवभुंजइ य मच्चणू ।

कज्जम्मि देह लभइ व भुंजइ व तहेव इहयं पि ॥ ८ ॥

किंच—

दितस्स लभंतस्स व भुंजंतस्स व जिणस्स एम गुणो ।

खीणंतराहयत्ते जं से चिग्यं ण संभवति ॥ ९ ॥

उवउत्तस्सेमेव य णाणम्मि व दंसणम्मि व जिणस्स ।

खीणावरणगुणोऽयं, जं कम्मिणं सुणइ पाम्मति वा ॥ १० ॥ [विज्जया. का. २०३-६]

पुणो पर आह—

पासंतो वि न जाणइ, जाणं व ण पाम्मती जति जिणिंदो ।

एवं ण कदाह वि सो मच्चणू मच्चदग्गिमी य ॥ ११ ॥

उत्तरं आचार्य आह—

जुगवमजाणंतो वि ह्य चतुर्हि वि नाणेहि उह चतुस्सतती ।

भण्णइ, तहेव अरहा मच्चणू मच्चदग्गिमी य ॥ १२ ॥

पर एवाऽह—

तुल्ले उभयाररणयययम्मि पुंनययययययती ययय ।

दुयिधुययोगाभावे जिणस्स जुगवं ? ति सोदंति ॥ १३ ॥

उत्तरं आचार्य आह—

भण्णति, ण एस निग्गमो जुगवप्पणोसु जुगवोदंति ।

तोयन्वं उवओगेण, एत्थ सुण हाव दितं ॥ १४ ॥

जह जुगवप्पत्तीय पि सुत्ते मग्गल-मति-मुतादीसं ।

णात्थ जुगवोपयोगो मग्गंस्स तांय वेदवित्थे ॥ १५ ॥

विश—

भणितं पि य पण्णती पण्णवदीसु जह जिणो मग्गं

जं जाणती ण पाम्मति तं अणुत्तणप्पनादीसि ॥ १६ ॥ [विज्जया. का. २०३-६]

जे भणंति केवलणाण-दंसणाण एगत्तं ते इमं हेतुजुत्तिं भणंति —
जह किर खीणावरणे देसन्नाणाण संभवो ण जिणे ।
उभयावरणातीते तह केवलदंसणस्सावि ॥ १७ ॥

5 एस ते हेतुजुत्ती जहा अत्थसाधणं ण संसहइ तहा उत्तर(रं) हेतुजुत्तीए चेव भण्णति-
देसण्णाणोवरमे जह केवलनाणसंभवो भणितो ।
देसदंसणविगमे तह केवलदंसणं होतु ॥ १८ ॥
अह देसनाण-दंसणविगमे तव केवलं मतं नाणं ।
ण मतं केवलदंसणमिच्छामेत्तं णणु तवेदं ॥ १९ ॥ [विशेषण. गा.

किंच—

10 भण्णति जहोहिणाणी जाणति पासति य भासितं सुत्ते ।
ण य णाम ओद्धिदंसण-नाणेगत्तं तह इमं पि ॥ २० ॥ [विशेषण.
एवं पराभिष्पाये पडिसिद्धे एगंतरोवयोगता सिद्धा तह विमं भण्णति —
जह पासतु तह पासतु, पासति सो जेण दंसणं तं से ।
जाणइ य जेण अरहा तं से णाणं ति घेत्तव्वं ॥ २१ ॥ [विशेषण.

15 किंच-सिद्धऽधिकारे एगंतरो[जे० १९९ प्र०]वयोगदंसिगा इमा फुडा गाहा —
नाणम्मि दंसणम्मि य एत्तो एगतरयम्मि उवउत्ता ।
सव्वस्स केवलस्सि जगवं दो णत्थि उवयोगा ॥ २२ ॥ [विशेषण.

किंच भगवतीए—

20 उवयोगो एगतरो पणुवीसतिमे सते सिणायस्स ।
भणितो विगडत्थो चिय छट्ठुद्देसे विसेसेतुं ॥ २३ ॥ [विशेषण. :

किंच—

कस्स व णाणुमतमिणं जिणस्स जति होज्ज दो वि उवयोगा ।
णूणं ण होत्ति जुगवं जतो णिसिद्धा सुत्ते चहुसो ॥ २४ ॥ [विशेषण.

४१. अह सव्वदव्वपरिणामभावविण्णत्तिकारणमणंतं ।

25 सासयमप्पडिवाती एगविहं केवलं णाणं ॥ ५४ ॥
केवलणाणेणऽत्थे णाउं जे तत्थ पणवणजोग्गे ।
ते भासइ तित्थयरो, वइजोग तयं हंवइ सेसं ॥ ५५ ॥
से तं केवलणाणं । से^१ तं पच्चक्खणाणं ।

१ वइजोग सुयं हवइ तेसिं इत्ययं पाठः श्रुतिरुद्धयां पाठान्तरत्वेन निर्दिष्टोऽस्ति । तथाहि—“अ-
सुय हवइ तेसिं” स वासयोगः श्रुतं भवति ‘तेषां’ धोतृणाम् ।” इति हारि० वृत्तौ । “अन्ये त्वेवं पठन्ति-
तत्रायमर्थः—‘तेषां’ धोतृणां भावध्रुवकारणम्यात् स वासयोगः श्रुतं भवति, श्रुतमिति व्यवह्रियते इत्यर्थः ।” इति
मु० ॥ ३ अत्र चर्चि-श्रुतिरुद्ध्यां से तं पच्चक्खं इत्येव पाठः सम्मतः । नोपलब्धोऽयं कस्यांचिदपि प्रतीतिः ॥

४१. अहं सच्चिदानन्दं गाढा । केवलनाणेन गाढा । एतावो जहा पद्विया ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ तत्सं कंठं ॥ इदानीं कमागतं बहुवचनं पारोक्ष्यं भणति —

४२. से^१ किं तं परोक्षणाणं ? परोक्षणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-आभिणिबोहियणाणपरोक्षं च सुयणाणपरोक्षं च ।

४२. अक्षस्स इन्द्रिय-मणा परा, तेसु जं णाणं तं परोक्षं । मति-श्रुते परोक्षमात्मनः, परनिमित्तत्वात्, अनुमानवत् । णणु मुत्ते इन्द्रियपञ्चकत्वं भणितं ? उच्यते—मच्चमिणं, एत्थं जं इन्द्रिय-मणेहिं वद्विहं पञ्चयमुपज्जति नमेगंतेणेव इन्द्रियाण अत्तणो य परोक्षं, अनुमानजनतो, धृमाओ अग्निणाणं च । जं पुण मक्खवा इन्द्रिय-मणो-निमित्तं तं तेसिं चेव पञ्चकत्वं, अल्लिगत्तणतो, अत्तणो अवधिमादि व्व, अत्तणो तु तं एगंतेणेव परोक्षं । इन्द्रियाणं पि तं संववहारतो पञ्चकत्वं, ण परमत्थतो । कम्हा ? जम्हा वद्विहं अचेतणा इति । तं दुविहं—मतिणाणं सुत्तनाणं च । इह मति-सुत्ताणमुत्तणासकमे कारणं पुब्बुत्तं वद्वत्त्वं ॥ मति-सुत्ताण य अमेदग्गामिपित्तवत्तयं इमं मुत्तं— 10

४३. जंत्थाऽऽभिणिबोहियणाणं तत्थ सुयणाणं, जत्थ सुयणाणं तंत्थाऽऽभिणिबोहियणाणं । दो वि एयाइं अण्णमण्णमणुगयाइं तह वि पुण एत्थाऽऽयरिया णाणत्तं पण्णवेंनि-अभिणिबुज्झइ त्ति आभिणिबोहियं, सुण्णतीति मुत्तं ।

“मतिपुब्बयं सुयं, ण मती सुयपुब्बिया ।”

णंगाभेदभिण्णं अणेगहा । अहवा मति-सुताणं इंदियोवल्हिविभागतो भेदो इमो-मोतिं
[विशेषा. गा. १२२] पूर्ववद् व्याख्येया । अहवा मति-सुतभेदं भणंति—बुद्धीदिष्टे० गाहा ।
एतीए गाहाए अत्थो मति-सुतविसेसो य जहा विसेसावस्सगे तहा भाणितव्वो । अण्णे वागसमं
सुतणाणं भणंति तं च ण घडति, जम्हा वाग-मुंवदिट्ठेणं मइनाणस्सेव सुतं परिणामो दंसि
5 जुज्जते इत्यर्थः । अहवण्णो मतिसुतभेदो—अक्खराणुगतं सुतं, अणक्खरं मतिनाणं ति ।
मतिणाणं, स्व-परप्रत्यायकं सुतनाणं । अहवा मति-सुताण आवरणभेदातो [जे० २०० प्र०] भेद
वसमविसेसातो चेव मति-सुताण भेदो भवति ॥ भणितो मति-सुतविसेसो । इदाणि जहा मति
कारणभेदेहि भेदो दिट्ठो तहा मतीए सुतस्स य सम्म-मिच्छंविसेसो दंसणपरिग्गहातो भवइ चि ३

४४. अविसेसिया मती मतिणाणं च मतिअण्णाणं च । विसेसिया मती
10 मती मतिणाणं, मिच्छादिट्ठिस्स मती मतिअण्णाणं । अविसेसियं सुयं सु
अण्णाणं च । विसेसियं सुयं सम्मदिट्ठिस्स सुयं सुयणाणं, मिच्छदिट्ठिस्स सु

४४. अविसेसिता मतीत्यादि । सामिणा अविसेसिता मती इमं वत्तव्वा—आ
चसदो समुच्चये । विसेसिता मतीत्यादि । जता पुण इमेण सामिणा विसेसिता मती भवति
सम्मदिट्ठिस्स मतीत्यादि सूत्रसिद्धं । अविसेसितं सुतमित्यादि एतं पि उवउज्जिउं एवं चेव क
15 विसेसणेण अविसेसिता मती ताव मती चेव वत्तव्वा । सचेव मती णाण-अण्णाणसद्विसेसण
आभिनिबोधिकेत्यादि सूत्रसिद्धं । णाण-अण्णाणसद्विसेसणं कदं ? भणति—सम्मत्त-मिच्छसामिण
स्स मतीत्यादि सुत्तसिद्धं । सुत्ते वि एवं चेव वत्तव्वं । पर आह—तुल्लखयोवसमत्तणतो घडाइ
च्छेदत्तणतो सदादिविसयाण य समुवल्हमातो कदं मिच्छदिट्ठिस्स मति-सुता अण्णाणं ति भणित
सदसद्विसेसणातो भवहेतु जतिच्छित्तोवल्हमातो । नाणफलाभावातो मिच्छदिट्ठिस्स अण्णा
20 मतिपुव्वं सुतं ति कातुं मतिणाणं चेव पुव्वं भणामि—

४५. से किं तं आभिनिबोधियणाणं ? आभिनिबोधियणाणं दुविहं प
सुयणिसियं च असुयणिसियं च ।

४५. से किं तं आभिनिबोधिकेत्यादि सुत्तं । तत्थ 'सुतनिस्सितं' ति सुतं ति—सुत्तं
विदुसारपज्जवसाणं । एतं दव्वसुतं गहितं । तं अणुसरतो जं मतिणाणमुप्पज्जति तं सुतणिस्साए
25 वा णिसुत्तं तं सुतणिस्सितं भण्णति । तं च उग्गहेहा-अवाय-धारणाठितं चतुभेदं । 'अस्सुतनिस्सि
दव्व-भावसुतणिरवेक्खं आभिनिबोधिकमुप्पज्जति तं अमुयभावातो समुप्पण्णं ति असुतनिस्सि
उप्पत्तियादियुद्धिचउक्कं ॥ इमं—

१ जम्हा जे० दा० ॥ २ 'विसेसदंसण' आ० दा० ॥ ३ अयं मूले स्वापितः सूत्रपाठः सं० मो० ॥
१९५ पत्रे नन्दीसूत्रपाठोद्धरणे उपलभ्यते । श्रीहरिभद्रसूरिणापि स्ववृत्तावयमेव सूत्रपाठो व्याख्यातोऽस्ति । विसे
मती मतिणाणं, मिच्छादिट्ठिस्स मती मतिअण्णाणं । एवं अविसेसियं सुयं सुयणाणं च सुयण
सम्मदिट्ठिस्स सुयं सुयणाणं, मिच्छदिट्ठिस्स सुयं सुयअण्णाणं । जे० डे० ल० शु० । अयमेव स
गिरिणा स्वीकृतो व्याख्यातथाप्यन्ति । विसेसिया मती सम्मदिट्ठिस्स मतिणाणं, मिच्छदिट्ठिस्स मति
सुयं सुयणाणं सुयअण्णाणं च । विसेसियं सुयं समदिट्ठिस्स सुयणाणं, मिच्छदिट्ठिस्स सुयअ

४६. से किं तं असुयगित्सियं ? असुयगित्सियं चउव्विहं पणत्तं, तं जहा—
उप्पत्तिया १ वेणइया २ कम्मया ३ पारिणामिया ४ ।

वुद्धी चउव्विहा वुत्ता पंचमा नोवल्लभइ ॥ ५६ ॥

पुव्वं अदिट्ठमसुयमवैइयतक्खणविसुद्धगहियत्था ।

अव्वाहयफलजोगा वुद्धी उप्पत्तिया णाम ॥ ५७ ॥

भरहसिल १ पणिय २ रुक्खे ३ खुड्डुग ४ पड ५ सरड ६ काय ७ उच्चारे ८ ।

गय ९ घयण १० गोल ११ खंभे १२

खुड्डुग १३ मग्गि १४ त्थि १५ पंति १६ पुत्ते १७ ॥ ५८ ॥

भरह सिल १ मिट्ठ २ कुंकुड ३ वालुय ४ हत्थी ५ [य] अगड ६ वणमंडे ७ ।

पायस ८ अइया ९ पत्ते १० खाडहिल्ला ११ पंच पियरो १२ य ॥ ५९ ॥

महुसित्थ १८ मुद्दि १९ यंके २० य णाण २१ भिक्खु २२ चेडगणिहाणे २३ ।

सिक्खा २४ य अत्थसत्थे २५ इच्छा य महं २६ न्तमहस्से २७ ॥ ६० ॥ १ ।

भरणित्थरणसमत्था तिवग्गमुत्तयगहियपेयाला ।

उभयोलोगफलवती विणयसमुत्था हवति वुद्धी ॥ ६१ ॥

णिमित्ते १ अत्थसत्थे २ य लेहे ३ गणि ४ य क्व ५ अग्ने ६ य ।

गद्धम ७ लक्खण ८ गंठी ९ अंग १० रत्ति ११ गलिया १२ ॥ ६२ ॥

सीया साडी दीहं च तणं अवग्गवयं च पुंन्दम १३ ।

निव्वोदणं १४ य गोणे घोडग पडणं च खल्लाओ १५ ॥ ६३ ॥ २ ।

उवओगदिट्ठसारा कम्मपसंगपरिपोल्लणकिमाला ।

साहुषारफलवती कम्मसमुत्था हवति वुद्धी ॥ ६४ ॥

हेरणिण १ करिण २ कोलिय ३ डोण ४ य सुत्ति ५ पड ६ गण ७ ।

तुण्णाग ८ वड्ढती ९ पूति १० य पड ११ चित्तसं १२ य ॥ ६५ ॥ ३ ।

अणुमाण-हेउ-दिहंतसाहिया वयविवागपरिणामा ।

हिय-णीसेसफलवती बुद्धी परिणामिया णाम ॥ ६६ ॥

अभए १ सेट्टि २ कुमारे ३ देवी (?वे) ४ उदिओदए हवति

साहू य णंदिसेणे ६ धणदत्ते ७ साव(?वि)ग ८ अमच्चे ९ ॥

5

खमए १० अमच्चपुत्ते ११ चाणके १२ चेव थूलभदे १३ य ।

णासिक्खुंदरीनंदे १४ वइरे १५ परिणामिया बुद्धी ॥ ६८ ॥

चलणाहण १६ आमंडे १७ मणी १८ य सप्पे १९ य खग्गि २० थू

परिणामियबुद्धीए एवमादी उदाहरणा ॥ ६९ ॥ ४ ।

से तं असुयनिस्सियं ।

10

४६. पुव्वं० गाहा । [भरहसिल० गाहा] । भरह० गाहा । मधु० गाहा ॥ ५७ ॥ ५

उप्पत्तिया गता १ । इमा वेणत्तिया—

भरणि० गाहा । निमित्ते० गाहा । सीता० गाहा ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ विण[दे

मुत्था गता २ । इमा कम्मइया—

उवओग० गाहा । हेरणिण० गाहा ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ कम्मइया गता ३ । इमा पारिणा

15 अणु० गाहा । अभए० गाहा । खमए० गाहा । चलणा० गाहा । एताओ सव्वाओ जहा णमो

९३८-५१) तहा दट्ठवाओ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ४ । इदाणि सुतणिस्सितं उग्गहाइयं स

४७. से किं तं सुयणिस्सियं मतिणाणं ? सुयणिस्सियं मतिणाणं च

तं जहा-उग्गहे ? ईहा २ अवाए ३ धारणा ४ ।

४७. इह सामणस्स खंवादिअत्थस्स य विसेसनिरवेक्खस्स अणिहेसस्स अवग्रहणमवग्र

20 विचारणविसेसणसणमीहा । तस्स विसेसणविसिट्ठस्सत्थस्सं व्यवसातोऽवायः, तव्विसेसाव

सेसावगतत्थस्स धरणं-अविचुत्ती धारणा इत्यर्थः ॥ तत्थ—

४८. से किं तं उग्गहे ? उग्गहे दुविहे पणत्ते, तं जहा-अत्थोग्गहे य

४८. ओग्गहो दुविहो—अत्थोग्गहो वंजणओग्गहो य ॥ एत्थ वंजणोग्गहस्स पच्छ

ग्गहातो या पुव्वं वंजणओग्गहो भवइ' ति वंजणोग्गहमेव पुव्वं भणामि—

१ 'विवक्कापरि' सं० सं० टे० ल० शु० ॥ २ 'णिस्सेस' शु० मो० मु० ॥ ३ खवगे मो० ॥ ४

५ रुवादिअसेसविसेसनिर' आ० दा० । श्रीमलयगिरिपादेस्तु आवदयकवृत्तौ नन्दिवृत्तौ चायं चूर्णि

“यदाह चूर्णिकृत्—“गामसस रुवादिविसेसणरहियस्स अनिहेसस्स अवग्रहणमवग्रह' इति । ” [आव० टी

पत्र १६८-१] ॥ ६ 'णविसेसेणेहणमीहा आ० दा० ॥ ७ 'स्स अवसातो आ० दा० ॥

तव्विसेसावगमस्स धरणं आ० दा० ॥

४९. से किं तं वंजणोगहे ? वंजणोगहे चउच्चिहे पणत्ते, तं जहा-सोत्तिदियवंज-
णोगहे १ वाणेंदियवंजणोगहे २ जिच्चिंदियवंजणोगहे ३ फासेंदियवंजणोगहे ४ । से
तं वंजणोगहे ।

४९. वंजणाणं अवग्गहो वंजणावग्गहो, एत्थं वंजणग्गहणेण मद्यापगित्ता दव्वा वेत्तव्वा । वंजणे अवग्गहो
वंजणावग्गहो, एत्थं वंजणग्गहणेण द्विचिंदियं वेत्तव्वं । एतेमिं दोहं वि मयान्ताणं इमो अन्थो-जेण करणभूतेण
अन्थो वंजिज्जहं तं वंजणं, जहा पदीयेण यडो । एवं मद्यापगित्तेहिं दव्वेहिं उक्कगणिंदियत्तेहिं चित्तेहिं मंदेहिं
मंयत्तेहिं जम्हा अत्थो वंजिज्जहं चि तम्हा ते दव्वा वंजणावग्गहो भवन्ति । एत्थं वंजणावग्गहो मुत्तमिदो चउच्चिदो ॥

५०. [१] से किं तं अत्थोगहे ? अत्थोगहे छविहे पणत्ते, तं जहा-सोत्तिदिय-
अत्थोगहे १ चिच्चिंदियअत्थोगहे २ वाणेंदियअत्थोगहे ३ जिच्चिंदियअत्थोगहे ४
फासिंदियअत्थोगहे ५ सोत्तिदियअत्थोगहे ६ । [२] तस्स पं इमे एगद्धिया जाणा-
योसा जाणावंजणा पंच नामधेया भवन्ति, तं जहा-ओगिण्हणया १ उव्वारगया २ सव्वगता
३ अवलंघणता ४ मेहा ५ । से तं उग्गहे ।

५०. [१] से किं तं अत्थोगहेत्यादि सूत्रम् । अत्थस्स ओगहो अत्थोत्तमो । सो व वंजणावग्गहो
चिच्चिंदियमयाणंतरं एवमस्यं अचिच्चिंदियमस्यं गेहत्तो अत्थावग्गहो भवन्ति । चिच्चिंदियस्स मत्तो व वंजणावग्गहो
पदमे चैव जं अचिच्चिंदियमत्थग्गहणं काययो एवमस्यं सो अत्थोगहो भवन्तिवदो । मत्तो वेम विमत्तो व चिच्चिंदियो
दंमिज्जति, ण पुण तस्सोत्तमस्य काये मद्यापिचिच्चिंदियो अत्थि । सोत्तिदियो चि-मत्तो । सो व जाणावग्गहो जाणावग्गहो
य । तन्थ मणपज्जत्तिणामथग्गद्वयातो जाणो मणोदव्वं येत्तं मत्तोत्तमं । मत्तोत्तमं मत्तोत्तमं दव्वा जाणावग्गहो भवन्ति ।
जायो पुण मणपज्जत्तिणामक्रियावणो भावमणो । एत्थं उव्वारगया १ उव्वारगयातो जीस्स मत्तोत्तमं जाणावग्गहो
भवन्ति । तस्स जो उव्वारगिंदियद्वारागिन्दियवग्गहो मत्तोत्तमं जाणावग्गहो भवन्ति । उव्वारगया २ सव्वगता
न्यावग्गहो भवन्ति ।

भण्णति ४ । उत्तरुत्तरविसेससामण्णत्थावग्गहेसु जाव मेरया धावइ ताव मेधा भण्णइ ५ । जत्थ वंजणावग्गहो
तत्थ सव्वणादिया तिण्णि एगट्ठिता भवन्ति । आह—णणु भिण्णत्थेदंरणे एगट्ठित चि विरुद्धं? उच्यते, न चि
जतो सव्वविकेप्पेसु उग्गहस्सेव सरूवं दंसिज्जति ॥ इदाणि उग्गहसमणंतरं ईहा—

५१. [१] से किं तं ईहा? ईहा छव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—सोतेंदियईहा १ चैवि
५ दियईहा २ घाणेंदियईहा ३ जिर्विंधियईहा ४ फासेंदियईहा ५ णोइंदियईहा ६ ।

[२] तीसे णं इमे एगट्ठिया णाणाघोसा णाणावंजणा पंच णामधेयां भवन्ति, तं ज
आभोगणया १ मग्गणया २ गवेसणया ३ चिंता ४ वीमंसा ५ । से तं ईहा ।

५१. [१] सा छव्विहा सुत्तसिद्धा ।

[२] इमे तस्सेगट्ठिया, ते वि ईहासामण्णतो एगट्ठिता चेव, अत्थविकप्पणातो पुण भिण्णत्था ।
10 विधिणा—आभोगणता इत्यादि । ओग्गहसमयाणंतरं सव्वभूतविसेसत्थाभिमुहमालोयणं आभोग
भण्णति १ । तस्सेव विसेसत्थस्स अण्णय-वइरेगधम्मसमालोयणं मग्गणा भण्णति २ । तस्सेवऽत्थस्स वइरेग
परिच्चाओ अण्णयधम्मसमालोयणं च गवेसणता भण्णति ३ । तस्सेव तद्धम्माणुगतत्थस्स पुणो पुणो समालोय
चिंता भण्णति ४ । तमेवत्थं णिच्चा-ऽणिच्चादिऐहिं द्व्व-भावेहिं विमरिसतो वीमंसा भण्णति ५ । एवं व
अत्थमालोयंतस्स उक्कोसतो अंतमुहुत्तकालं सव्वा ईहा भवति ॥ ईहाणंतरं अवातो—

५२. [१] से किं तं अवाए? अवाए छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदियावा
१ चैक्सिंदियावाए २ घाणेंदियावाए ३ जिर्विंधियावाए ४ फासेंदियावाए ५ णोइंदियावा

[२] तस्स णं इमे एगट्ठिया णाणाघोसा णाणावंजणा पंच णामधेयां भवन्ति, तं ज
आउट्टणया १ पच्चाउट्टणया २ अवाए ३ बुद्धी ४ विण्णाणे ५ । से तं अवाए ।

५२. [१] सो छव्विहो सुत्तसिद्धो ।

20 [२] तस्सेगट्ठिता इमे पंच, ते य अवायसामणत्तणतो णियमा एगट्ठिता चेव, अभिघाणभिण्णत्तणतो
भिण्णत्था । [जे० २०१ द्वि०] इमेण विधिणा—आउट्टणता इत्यादि । ईहणभावनियत्तस्स अत्थसरूवपडि
बुद्धस्स य परिच्छेदमुप्पादंतस्स आउट्टणता भण्णति १ । ईहणभावनियत्तस्स चि तमत्थेमालोयंतस्स पुणो
णियट्ठणं पच्चाउट्टणं भण्णति २ । सव्वहा ईहाए अवणयणं कातुं अवधारणावधारितत्थस्स अवधारयतो अवातो
भण्णइ ३ । पुणो पुणो तमत्थावधारणावधारितं बुज्झतो बुद्धी भवइ ४ । तम्मि चेवावधारितमत्थे विसेसे पेक्क
25 अवधारयतो य विण्णाणे चि भण्णति ५ ॥ अवायाणंतरं धारणा—

१ 'त्थत्ताओ एग' आ० ॥ २ 'विधिक' जे० ॥ ३ चक्खुंदि' सं० ॥ ४ 'धेज्जा मो० सु० ॥ ५ 'पट्ठि दंदभ
जे० । " विमपेणं विमपेः, धयोपशमविशेषादेवोर्ध्वं स्पष्टतरावबोधतः सद्भूताध्वविशेषाभिमुत्तमेव व्यतिरेकधर्मपरित्यागतोऽन्वयधर्मालोचनं वि
मिस्सा-ऽमित्यादिद्रव्य-भावालोचनमित्यन्ये । " इति हारि० वृत्तौ । 'तत् उर्ध्वं धयोपशमविशेषात् स्पष्टतरं सद्भूताध्वविशेषाभिमु
व्यतिरेकधर्मपरित्यागतोऽन्वयधर्मापरित्यागतोऽन्वयधर्मविमर्शनं विमर्शः " इति मलयगिरिवृत्तौ ॥ ६ 'यअवाए' जे० ॥ ७ चक्खुं
सं० ॥ ८-९-१०-११-१२ 'यअवाए' जे० ॥ १३ 'धेज्जा मो० सु० ॥ १४ आवट्टणया पच्चावट्टणया सं० सु० हारि० म
हत्त्वोप । आउट्टणया पच्चाउट्टणया सं० ल० ॥ १५ विण्णाणं सं० सं० ॥

५३. [१] से किं तं धारणा ? धारणा अविहा पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदियधारणा १ चक्खिंदियधारणा २ घाणिंदियधारणा ३ जिह्मिंदियधारणा ४ फास्सिंदियधारणा ५ णोइंदिय-
धारणा ६ । [२] तीसे णं इमे एगद्धिया णाणाघोत्ता णाणावंजणा पंच णामधेया
भवन्ति, तं जहा—धरणा १ धारणा २ ठवणा ३ पतिट्ठा ४ कोट्ठे ५ । से तं धारणा ।

५३. [१] ना य उन्विष्टा मुनविष्टा ।

[२] तस्मैनाद्विना पञ्च । ते य मामग्नधारणं पटुञ्च नियमा एगद्विधा, धान्तन्यत्रिकपत्तनाप् भिन्नान्या । इमेन विधिना—धरणा इत्यादि । अत्रायान्तरे तमन्यं अदिक्षुर्नाप जहानुकोमेन अंतमुद्रुनं धर्मग्न धरता भणति १ । तमेव अस्थं अणुयोनत्तनतो विक्षुतं जहण्णेन अंतमुद्रुनातो पततो दिव्यादिकाग्निसामेन नमग्नतो य धारणा भणति २ । 'ठवणं' चि ठावणा, ता य अवायावयान्तिमस्थं दुष्ठावरमायोऽयं दिव्यतमि ठाव्यंतम् ठवणा भणति, पूर्णयदस्थायनाश्च ३ । 'पतिट्टे' चि नो चित अत्रयान्तिम्यो दितयमि प्रमेदेन पद्मावमातो ४ । पतिट्टा भणति, जण्डे उपत्यप्रक्षेपप्रतिष्ठाश्च ४ । 'कोट्टे' चि जहा कोट्टेन माग्मिाद्विधा पवित्रता अस्मिन्ना धान्तिजेति तदा अवातावयान्तिमस्थं गुन्चदिट्टं मुत्तमन्यं वा अदिपट्टं धान्तनो धान्ता नोदमनस चि कानुं कोट्टे चि यत्तया ५ ॥

५४. इच्चैतस्मिन् अद्वावीसतिविहस्य आभिषिषोद्विज्जन्तस्य वंजोऽगहस्य पत्तवणं करि-
म्यामि पद्भिवोहरादिद्वंतेण सत्त्वरदिद्वंतेण च ।

५४. दृष्टेयस्येत्यादि श्रुतं । 'अग्नि' उपसर्गनि । 'तुल्य' 'वि' च 'अग्नि' च 'अद्वैत' च 'अद्वैत' । ये च ते
 त्रयीसं वेदा ? उत्तरमे-चउत्पिद्यो ध्रुवणादगमो, अग्निवो अगमस्यो, अग्निवो अगमस्य, अग्निवो अगमस्य, अग्निवो
 एणा, एने नये अद्वैतसं । एतथ अद्वैतस्येति स्य अद्वैतस्येति स्य अद्वैतस्येति स्य अद्वैतस्येति स्य अद्वैतस्येति स्य
 यणा ॥

[illegible]

गच्छंति, जाव णो दससमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति, णो संखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति, असंखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति । से तं पवोहगदिट्ठंतेणं ।

५५. से जहाणासयेत्यादि । 'से' ति पडिवोयकस्स णिदेसे । 'जहाणामये' ति जहाणा [२०२ प्र०]म, संभवतः आत्माभिप्रायकृतादित्यर्थः । सञ्चण्णुषणीयमत्थं तदणुमारि सुत्तं वा अप्पचुद्धिविण्णत्तणयो अणयगच्छमाणो सीसो पुच्छाचोदणातो चोदको, अहवा तमेय सुत्तमत्थं वा 'अग्रडमाणं' ति मण्णम तदोसचोदयो य चोदगो भण्णति । पवयणमविरुद्धं निदोसं सुत्तत्थं पण्णवेतो पण्णवगो, विरुद्ध-पुणरुत्तमुत्तं अत्थतो अविरुद्धं दरिसेतो पण्णवेति जो सो वा पण्णवगो भण्णति, यथावत् संशयच्छेदीत्यर्थः । चोदको संमायणो पण्णवगं पुच्छति—'किं एगसमयादिपविट्ठा' इत्यादि कंठं । एवं चोदकं पुच्छाभिप्रायेण वदंतं पवोहगदिट्ठंतेणं ।
- १० वगाऽऽह—'णो एगसमयपविट्ठा' इत्यादि । जो एस पडिसेहो कतो एस सदाइकुडविण्णानजणत्तेणं ति गहणमागच्छंति, इहवा पोग्गला गहणमागच्छंत्येवेत्यर्थः । एवं एगादिसमयपविट्ठपोग्गलपडिसिद्धेसु इमा अणु 'असंखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति' ति । इमस्स अणुयोगत्थो अणुयोगत्थो य । तत्थ आयोगो इमो—जहा पवासी सगिहमेतो अद्धाणं पंचाहेण दसाहेण वा वीतीयत्तिता सगिहं पविट्ठो ति, एवं असंखेज्जहिं समयेहिं आगता पविट्ठा कण्णविलेसु पोग्गला गेण्हति ति, एवं अणुयोगो भवति । इमो अणुयोगत्थो पवोहगदिट्ठंतेणं ।
- १५ पवोहगदिट्ठंतेणं पविसमयं पविसमाणेसु असंखेज्जइमे समए जे पविट्ठा ते गहणमागच्छंति, ते य सदाविण्णानजणत्ति कातुं, अतो तेसिं गहणमुवदिट्ठं । सो य असंखेज्जइसमयो किंपमाणे असंखेज्जए भवं उच्यते—जहण्णेणं आवलियाए असंखेज्जइभागमेत्तेसु समयेसुं गतेसुं ति, उक्कोसेणं [जे० २०२ द्वि०] संखेज्ज आवलियासु आणापाणुकालपुहत्ते वा, उभयथा वि अविरुद्धं ॥ गतो पडिवोयकदिट्ठंते । इदाणिं औवागदिट्ठंते—

५६. [१] से किं तं मल्लगदिट्ठंतेणं ? मल्लगदिट्ठंतेणं से जहाणामए केई पुरिसे आवसीसाओ मल्लगं गहाय तत्थेगं उदगविट्ठं पक्खिवेज्जा से णट्ठे, अण्णे पक्खिवेत्ते से वि एवं पक्खिप्पमाणेसु पक्खिप्पमाणेसु होही^१ से उदगविट्ठं जे णं तं मल्लगं रावेहिति, होही^२ से उदगविट्ठं जे णं तंसि मल्लगंसि ठाहिति, होही^३ से उदगविट्ठं जे^४ णं तं मल्लगं रावेहिति, होही^५ से उदगविट्ठं जे^६ णं तं मल्लगं पवाहेहिति, एवामेव^७ पक्खिप्पमाणेहिं पक्खिप्पमाणेहिं अणंतेहिं पोग्गलेहिं जाहे तं वंजणं पूरितं होति ताहे 'हुं'^८ ति करेति णो^९

१ गहयत्तमा^१ जे० ॥ २ 'आवागदिट्ठंते' इति मल्लकदृष्टान्तस्य नामान्तरम् ॥ ३ 'तेणं जहा को दिट्ठंते ? से सं० ॥ ४ केयि सु० ॥ ५ अण्णे वि पं सं० विना ॥ ६ 'माणे पक्खिप्पमाणे होही' सं० ॥ ७-९-११ होहिति सं० होहिइ सं० ॥ ८ रावेहिइ सं० ल० सु० । रवेहिइ जे० ॥ १० मल्लगो सं० सं० ॥ १२-१४ जो णं सं० । एहिइत्तो ॥ १३ भरेहिति इत्यनन्तरं विदोपावदयकमहाभाष्यमल्लधारीयटीकायां १४८ पत्रे नन्दीपाठोद्धरणे होही से उदगविट्ठं तंसि मल्लगंसि न ठाहिहिति इत्यधिकं 'न ठाहिहिति' सूत्रमुपलभ्यते, नोपलभ्यते इदं सूत्रं सर्वास्वपि सूत्रप्रतिपु ॥ १५ पवमेव सं० । सु० ॥ १६ 'मेव पक्खिप्पमाणेहिं अणंतेहिं पोग्गं' ल० विआमल्लवृत्ती १४८ पत्रे नन्दीसूत्रपाठोद्धरणे । 'मेव पक्खिप्पमाणेहिं' सं० । 'मेव पक्खिप्पमाणेहिं पक्खिप्पमाणेहिं पोग्गं' सं० ॥ १७ 'हो' ति सं० ॥ १८ ण उण जां सं०

णं जाणति के वेसं सदाइ ? तओ ईहं पविमति तओ जाणइ अमुगे एस सदाइ ? तओ अवायं पविसइ तओ से उवगयं हवइ, तओ णं धारणं पविसइ तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं ।

[२] से जहाणामए केइं पुरिमे अव्वत्तं सुइं सुणेज्जा तेणं सदे ति उग्गहिण, णो चेव णं जाणइ के वेस सदे ति, तओ ईहं अणुपविमइ ततो जाणति अमुगे एस सदे, ततो णं अवायं पविसइ ततो से उवगयं हवति, ततो धारणं पविसइ तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं । एवं अव्वत्तं रुयं, अव्वत्तं गंधं, अव्वत्तं रसं, अव्वत्तं फासं पडिमंवेदेज्जा < ।

[३] से जहाणामए केइं पुरिमे अव्वत्तं सुमिणं पडिमंवेदेज्जा, तेणं सुमिणे ति उग्गहिण, ण पुण जाणति के वेस सुमिणे ति, तओ ईहं पविमइ तओ जाणति अमुगे एस सुमिणे ति, ततो अवायं पविसइ ततो से उवगयं हवइ, ततो धारणं पविसइ तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं । ये चं मल्लगदिद्विती ।

५६. [१] तत्थ आवागस्सीसगं ति[आ]वागद्वाणमेव, अहवा आपागद्वाणस्स आसण्णं समंता परिपेरंतं, अहवा आपागमुत्तारियाणं जं ठाणं तं आपागसीसयं भण्णति । 'अणंतेहिं' ति प्रथमसमयादारभ्य प्रतिसमयं अणंता प्रविशंतीत्यतो अणंता । 'जाहे तं वंजणं पूरितं भवति' ति, एत्थ वंजणग्गहणेण सदाइपुग्गलदब्बा दब्बिदियं वा उभयसंवंधो वा वेतव्वं, तिधा वि ण विरोधो । वंजणं पूरियं ति क्हं ? उच्यते—जदा पुग्गलदब्बा वंजणं तदा पूरियं ति पभूता ते पोग्गलदब्बा जाता, स्वं प्रमाणमागता सविसयपडिवोधसमत्था जाता इत्यर्थः १ । जदा पुण दब्बिदियं वंजणं तदा पूरियं ति क्हं ? उच्यते—जाहे तेहिं पोग्गलेहिं तं दब्बिदियं आवृतं भरितं वावितं तदा पूरियं ति भण्णति २ । जदा तु उभयसंवंधो वंजणं तया पूरियं ति क्हं ? उच्यते—दब्बिदियस्स पुग्गला अंगीभावमागता, पुग्गला य दब्बिदि ए अन्नपक्ताः, एस उभयभावो, एतस्मि उभयभावे पुग्गलेहिं इंदियं पूरितं, इंदिएण वि सविसयपडिवोधकप्पमाणा पुग्गला गहिता, एवं उभयसामत्थतो विण्णाणभावो भवतीत्यर्थः ३ । 'हुं ति करेइ' ति वंजणे पूरिते तं अत्थं गेण्हइ ति वुत्तं भवति । एस एकसमयिओ अत्थावग्गहो । तं पुण किं पंगारं गेण्हति ? उच्यते—'नो चेव णं जाणति के वि एस सदादी' तक्काले सामण्णमणिदेसं, सदादिविसेसं ण जाणइ ति वुत्तं भवति । किंच—सरूव-णाम-जाति-गुण-किरिया-विकप्पविमुहं अनाख्येयं गृह्णातीत्यर्थः । एत्थ पडिवोधकालातो [जे० २०३ प्र०] पुव्वं वंजणोग्गहो से भवति । एसा एवं वंजणोग्गहस्स परवणा कता । वंजणोग्गहस्स परतो 'हुं ति करेति' ति एतस्मि पडिवोधकाले एग-समइयो अत्थावग्गहो से भवति, ततो से कमेण ईहा-डवाय-धारणाओ ति । एत्थ पडिवोध-मल्लगदिट्ठंतेहिं वंजणो-ग्गहस्स अत्थोग्गहस्स य भिण्णकालता फुडं दंसिता । पर आह—साधु मे पडिवोध-मल्लगदिट्ठंतेहिं वंजण-डत्थावग्गहाण भेदो दंसितो, जागरओ पुण सदाइअत्थे पडुप्पणे णः वंजणोग्गहो लक्खिज्जति, जतो पुव्वामेव सदाइअत्थ-विण्णाणमुप्पज्जते, भणितं च सुत्ते 'से जहाणामये केयि पुरिसे'त्यादि । अहवा इमस्स सुत्तस्स इमो संवंधो—पर आह—यदुक्कं भवता सरूव-णाम-जाति-गुण-क्रियाविकल्पविमुहं अनाख्येयं गृह्णातीत्येतद् विरुध्यते, कुतः ? यतः सुत्तेऽभिहितं—से जहाणामतेत्यादि । अहवा इमो संवंधो—प्रसुप्तप्रतिबोधक-मल्लगदिट्ठंतेहिं वंजण-डत्थावग्गहाण भेदो दंसितो, इह पुण सुत्ते मल्लगदिट्ठंतेणेव वंजण-डत्थावग्गहाण भेदो दंसिज्जति—

[२] 'से जहाणामते'त्यादि । सुत्तुच्चारणसवणाणंतरमेव पर आह—एत्थ सुत्ते वंजण-डत्थावग्गहेहा ण लक्खिज्जति, जतो 'अव्वत्तं सद्दं सुणेइ' ति भणितं, सद्दमेत्तेऽवधारिते पढमतो अवाय एव लक्खिज्जति ति । आयरियं आह—ण तुमं सुत्ताभिप्पायं जाणसि, णणु अव्वत्तसद्दसवणातो अत्थावग्गहग्गहणं कतं, जतो अव्वत्तमणिदेसं सामण्णं विकप्परहियं ति भण्णति, तस्स य पुव्वं वंजणावग्गहेण भवितव्वं, जतो एतग्गाहिणो सोतादिइंदियस्स अत्थोग्गहो वंजणोग्गहमंतरेण २५ ण भवति ति नियमसो, सो य कालसुहुमत्तणतो उप्पलसतपत्तछेज्जदिट्ठंततो ण लक्खिज्जति । चोदक आह—जति एवं तो जं सुत्ते भणितं "तेणं सद्दे ति ओग्गहिते" तं क्हं ? उच्यते—इहतं "तेणं सद्दे ति ओग्गहिते" ति वक्खा-सूत्रकारोऽभिधत्ते इति करणनिदेसातो सच्चविसेसविमुहं शब्दमात्रमुक्तं [जे० २०३ द्वि०] भवति, णो चेव णं जाणति के वेस सद्दे ? ति, ण तु शब्दोऽयमित्येवं बुध्यते, कम्हा ? उच्यते—एकसमयत्तातो अत्थावग्गहस्स, किंच पण्णवैतो य पण्णवगो संववहाराभिप्रायतो "तेणं सद्दे ति ओग्गहिते" ति वृत्ते, ण दोसो । जति वा "सद्दोऽय" ३० मिति बुद्धी भवे तो अवातो चेव भवे, तच्च न, क्हं ? उच्यते—णो जतो अत्थावग्गहसमयमेत्ते काले "सद्द" इति

१ पुण उचगरणिदियं मलय० नन्दिवृत्तौ चूर्णिपाठोद्धरणे ॥ २ आपुण्णं भरितं आ० । "आमृतं" इति हारि० वृत्तौ ॥ ३ अभिपक्ताः इत्यर्थः, तदा पूरियं ति भण्णइ इति मलय० नन्दिवृत्तौ चूर्णिपाठोद्धरणे ॥ ४ 'पतारं आ०' ॥ ५ 'जाति-किरिया' इ० ॥ ६ जतो पत्तग्गाहिणो जे० दा० ॥

विसेसणाणमतिथि, अह तस्मि वि समए सद्योऽयमिति बुद्धी दवेज्ज तो फुडं अवाय एव भवेज्ज. पो यं तवान्ते अवातो इच्छिज्जति, जतो अत्थपरिच्छेदो असंखेज्जसमयकालिओ भवइ ति । अणो पुण वायसिया जतं मुत्तं विसेसत्यावगाढे भणंति—‘अव्वत्तं सइं सुणेज्ज’ ति एव— विसेसत्यावगाढो, ‘तेण गदे ति उग्गादिने’ ति, एतं सुत्तखंडं सामण्य-सद्व्यावगाहदंसंगं, कइं ? उच्यते—जतो भणति “पो चेइ पं जाणति के दि एव गदे” ति संख-संग-सोत्ति-कर-यादिको ति, एसो वि अविरुद्धो सुत्तथो । ‘ततो’ अत्यावगाहसमयपर्यन्तरं प्रथममयादिषु ‘ईदं अनुवदिमति’ ‘ईदं’ ति केइ संखयं भणंते, तं ण भवति, संखयस्स अण्णाणमावचणतो, मतिपायसो य इह ति । आह—सो पुण संखयेद्याण विसेसो ? उच्यते—इह जं थाणु-गुरियादिअन्धेमुं पेदितं चित्तं तदन्तराडिवोदयेण पडिदत्तं मुत्त इव वेतो संखयो भणति, तं च अण्णाणं, जं पुण हेतुवचनित्थायेणेहिं गच्छत्तसंखयस्स विसेसयन्माभिसुवायोत्तं तस्सेऽज्ज-स्स अयम्मविमुदं असम्मोहमविफलमन्यपरिच्छेदकं चित्तं जं तं ईदा भणति । अयु ति—अवगततो पत्त्यामावे अमे-खेज्जसमइयं परिमाणतो ईदोवयोगं अविच्छेद्यत्ततो अंतमुद्भुतकालं ईदति, ततो विगिहमदितात्तवयोगेवसमाच-
 चणतो अंतमुद्भुतकालमंतर एव जाणति ‘अमुते एव गदे’ संख-संगादिषु ति । दृक्चोवत्ततो पुण अयम्म अवि-
 सिद्धमद्विषणाणखयोवसमत्ततो वा ईदोवयोगअंतमुद्भुतचुतो अणकगतन्यो उतो वि अणं अंतमुद्भुते ईदति, [वे. २०४ प्र०] [एवं] ईदोवयोगाविच्छेदसंताणतो वहुए वि अंतमुद्भुते ईदत्ता, ए दोसो । ततो ईदोवदं अवातो । सो य सदाअन्धपटुप्पणस्स जे परथम्मा तंमु विमुदस्स गच्छस्से य अवावत्ततो वा एव संखयतो, सिद्धमद्वि-
 र्गोर्भाचणतो संखसद्योऽयमित्येवमवगतन्यो [जहणतो] असंखेज्जसमयितो उवंगतो तिस्स एवेवद्विषयो यो
 अवयोथो अत्थपरिच्छेदो सो अवातो भवति । ततो अवयवार्णत्तं अवातं पडिमि ति । एव य अवयव-चरणतो
 असंखेज्जसमते अविच्छुत्तोए तसगं धरेति, उवोमतो अंतमुद्भुतं, अवयवोमत्तो पुण तसगो विच्छेदो पुणो ति संख-
 ति धारणा । एवं सा संखेज्जासाउयाणं मुद्भुत-विग्यादिव्यापकत्वात् संखेज्जं इति भवेत्, अतएव सा संखेज्जासाउयाणं

र्थग्रहणं भवेत् । तस्य च प्रथमसमयार्थप्रतिबोधकालेऽर्थावग्रहः, तस्य पूर्वमसंख्येयसमयेषु व्यञ्जनावग्रहः । शेषमी-
हादि पूर्ववत् । सीसो पुच्छति-उग्गहादीणं उ कमातिक्रमे एगतरअभावे वा किं सदादिवत्पुपरिच्छेदो ण भवति ?
आचार्याह-आमं, ण भवति, अत एव च क्रमे नियमः, जम्हा णो अगहितं ईहति तम्हा पुवं उग्गहो, जम्हा य
अणीहितं णो अवगच्छति ईहाणंतरं तम्हा अवायो, जम्हा य अणावातं ण धारिज्जति वत्थुं अवायाणंतरं तम्हा
5 धारणा । जम्हा य एस क्रमनियमो तम्हा सव्वो आभिणिबोधियणाणावगमो नियमा एव भवति, अत एव च
कारणा सव्वे अवगगहादयो मतिनाणभेदा भवंतीत्यर्थः ॥

५७. तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा-दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ ।
तत्थ दव्वओ णं आभिणिबोहियणाणी आएसेणं सव्वदव्वाइं जाणति ण पासति १ ।
खेत्तओ णं आभिणिबोहियणाणी आएसेणं सव्वं खेत्तं जाणइ ण पासइ २ । कालओ णं
10 आभिणिबोहियणाणी आएसेणं सव्वं कालं जाणइ न पासइ ३ । भावओ णं आभिणि-
बोहियणाणी आएसेणं सव्वे भावे जाणइ ण पासइ ४ ।

५७. तं समासतो चतुर्विहेत्यादि सुत्तं । 'तं च' मतिनाणं खयोवसमख्वतो एगविहं पि होतुं णेयभेद-
क्षणतो नाणाभेदा दव्वादिया से भवति । 'दव्वतो णं' ति दव्वतो वत्तव्वे 'णं' ति वयणालंकारे, देसीवयणतो वा
'णं' अहवा, अपादानान्ते पञ्चमी विभक्तिः, तत्थ पायतवयणसेलीतो दव्वतो णं एवं आभिनिबोधियणाणी लभति-
15 'आदेसेण'मित्यादि, इहाऽऽदेसो नाम-प्रकारो । सो य सामण्णतो विसेसतो य । तत्थ दव्वजातिसामण्णादेसेणं
सव्वदव्वाणि धम्मत्थिकायादियाणि जाणति, विसेसदव्वे वि जहा धम्मत्थिकाये धम्मत्थिकायस्स देसे धम्मत्थि-
कायस्स पदेसेत्यादि केयी जाणति, सव्वे ण याणति, जहा सुहुमपरिणता अविसेसतथा अप्पणवणादिया य । 'ण
पस्सइ' ति सव्वे सामण्ण-विसेसादेसद्वित्ते धम्मादिए, चक्खु-अचक्खुदंसणेण खू-सदाइते केयिं पासति त्ति वत्तव्वं ।
अहवाऽऽदेसो-सुत्तं, तस्सादेसतो सव्वदव्वे जाणतीत्यादि । चोदक आह-जति सुत्तं कहं मतिनाणं ? ति, उच्यते-
20 सुतोव्वलद्धमत्थेसु अणुसरतो तव्भावनवुद्धिसामत्थतो [जे० २०५ प्र०] सुतोवयोगणिरवेक्खा वि मती पवत्तइ
त्ति ण सुत्तादेसो विरुज्जते १ । खेत्तं पि सामण्ण-विसेसादेसतो । तत्थ सामण्णतो खेत्तमागासं, तं चेगं सव्वग-

१ दव्वओ ४ । दव्वओ ल० ॥ २ तत्थ इति पदं खं० सं० डे० ल० नास्ति, जे० शु० मो० सु० विआमलवृत्तौ नन्दुद्धरणे
२३० पत्रे पुनर्वर्तते ॥ ३-४-५-६ अत्र द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावविषयकेषु चतुर्ष्वपि सूत्रांशेषु जाणति पासति इति पाठो जाणति ण
पासति इति पाठभेदेन सह भगवत्यां अष्टमशतकद्वितीयोद्देशके ३५६-२ पत्रे वर्तते । अत्राभयदेवसूरेष्टीका—“दव्वओ णं” ति द्रव्यमा-
ध्रित्य आभिनिबोधिकविषयद्रव्यं वाऽऽध्रित्य यद् आभिनिबोधिकज्ञानं तत्र ‘आएसेणं’ ति आदेशः-प्रकारः सामान्य-विशेषरूपः तत्र च ‘आदे-
शनं’ ओषतो द्रव्यमात्रतया, न तु तद्रतसर्वविशेषापेक्षयेति भावः, अथवा ‘आदेशेन’ धृतपरिकर्मिततया ‘सर्वद्रव्याणि’ धर्मास्तिकायादीनि
‘जानाति’ अवाय-धारणापेक्षयाऽवबुध्यते, ज्ञानस्यावाय-धारणारूपत्वात्, ‘पासइ’ ति पश्यति अवग्रहेहापेक्षयाऽवबुध्यते, अवग्रहेहयोर्दर्शनत्वात् ।
.....‘खेत्तओ’ ति क्षेत्रमाध्रित्य आभिनिबोधिकज्ञानविषयं क्षेत्रं वाऽऽध्रित्य यद् आभिनिबोधिकज्ञानं तत्र ‘आदेसेणं’ ति ओषतः
धृतपरिकर्मणया वा ‘सव्वं खेत्तं’ ति लोका-ऽलोकरूपम् । एवं कालतो भावतथेति ।.....इदं च सूत्रं नन्द्यां इहैव च वाचनान्तरे
‘न पासइ’ ति पाठान्तरेणापीतम् । एवं च नन्दिटीकाकृता [हरिभद्रधरिणा] व्याख्यातम्—“आदेशः-प्रकारः, स च सामान्यतो
विशेषतया । तत्र द्रव्यजातिगामान्यादेशेन ‘सर्वद्रव्याणि’ धर्मास्तिकायादीनि जानाति, विशेषतोऽपि यथा धर्मास्तिकायो धर्मास्तिकायस्य देश
इत्यादि, ‘न पश्यति’ नवान् धर्मास्तिकायादीन्, द्रव्यादीन् योऽवग्रहावस्थितान् पश्यत्यपीति ।” ३५८ पत्रे ॥ ७ अवि सत्तथा
उप्पणवणादिया आ० दा० । अविशदार्था अप्रज्ञापनादिका इत्यर्थः ॥ ८ ‘सेसा दसविहे धम्मादिप आ० दा० ॥

तममुत्तं अवगाहन्कृत्तुं सत्त्वं जाणति । विमेलतो वि लोका-उत्तोगृह-उह-तिरियादिविमेलने जाणति. य जाणइ
य केयी, धेवं न पश्यत्येव २ । काले वि आदेसो नामण-विमेलतो । तस्य नामणतो इमं भवति. य य दृग्मिलतो,
णिचमणिचं वा मुत्तममुत्तं वा कलासमूहं मच्चदृशणि वा काले इति कलयं वा कालो, तमेवंविधं नामणतो मच्च-
कालं जाणति । विमेलसादेसो-समया-उत्तवल्किनादि उत्तमपिणीमादि वा विमेलसादे केयि जाणति. य जाणति केयि,
कालं न पश्यत्येव ३ । भाव इति भवनं भूतिर्वा भावः, एवं मच्चमावे भावजातिमेतन्नामणतो जाणति । विमेलसादेसतो
जीवा-जीवभावे । तस्य नाण-कमायादिया जीवे, अजीवे कजवज्जादिषु अणेगहा वीसम-वयंगरगितने, एत्थ मति-
णाणविमयत्थे जे ते जाणति, नेमे न याणति, मच्चमावे न याणइ इति, मतिणाणस्य भवत्थ नेयविमयत्तयो ॥

५८. उग्गह ईहाञ्चाओ य धारणा एव होंति चत्तागि ।

आभिषिषोहियणाणस्य मेययत्थ् नमानेणं ॥ ७० ॥

अत्थाणं उग्गहणं तु उग्गहो, तह चियाल्लं ईहं ।

ववसायं तु अवायं, धरणं पुण धारणं विनि ॥ ७१ ॥

उग्गह एकं समयं, ईहा-ञ्चाया मुहुत्तमहं तु ।

कालमयंयं संयं च धारणा होति जायच्चा ॥ ७२ ॥

पुहं सुणेति म्हां, म्हां पुण पायसी अहुहं तु ।

संयं सयं च पायं च वद्ध-पुहं चियाणं ॥ ७३ ॥

भासायममेदीओ म्हां जं म्हाह मीमयं म्हाह ।

वीमेदी पुण म्हां मुणेति पियमा म्हाह ॥ ७४ ॥

ईहा अपोह वीभंसा मग्गणा य मग्गणा ।

सण्णा मत्ती मत्ती पण्णा म्हां म्हाह म्हाह ॥ ७५ ॥

से" सं आभिषिषोहियणाणस्येव ।

५८. उग्गह ईहा० गाहा । अत्थाणं० गाहा । उग्गह एकं० गाहा । पुट्टं सुणेइ० गाहा । भासा-
सम० गाहा । ईहा० गाहा । एताओ गाहाओ जहा पेढियाए [आव० नि० गा० २-६ तथा गा० १२] तहा भाणितव्वा
इति ॥७०॥७१॥७२॥७३॥७४॥७५॥

“से किं तं मतिणाणं ?” [सुत्तं ४५] ति एस आदीए जा पुच्छा तस्स सव्वहा सरूवे वण्णिते इमं परिसमत्ति-
दंसगं णिगमणवाक्यम्—“से तं मतिणाणं” ति । अहवा सीसो पुच्छति—जो एस वण्णियसरूवेण ठितो णाणविसेसो
सो किंवत्तव्वो ? आचार्य आह—‘से’ इति निद्देसे, ‘तं’ ति पुव्वपण्हामरिसणे, तं एतद् ‘मतिणाणं’ ति स्वनामाख्यान-
मित्यर्थः । अहवा ‘से’ ति अस्य व्यञ्जनलोपे कृते एतं मतिणाणं ति भवति, एतावद् मतिज्ञानमित्यर्थः ॥

इदार्णि सव्वचरण-करणक्रियाधारं जधुद्धिं कमप्पत्तं सुतणाणं भण्णति—

५९. से किं तं सुयणाणपरोक्खं ? सुयणाणपरोक्खं चोद्दसविहं पण्णत्तं, तं जहा—
अक्खरसुत्तं १ अणक्खरसुत्तं २ सण्णिसुयं ३ असण्णिसुयं ४ सम्मसुयं ५ मिच्छसुयं ६ सादीयं ७
अणादीयं ८ सपज्जवसियं ९ अपज्जवसियं १० गमियं ११ अगमियं १२ अंगपविट्ठं १३
अणंगपविट्ठं १४ ।

५९. से किं [जे० २०४ द्वि०] तं सुतनाणेत्यादि । तं च सुतावरणखयोवसमत्तणतो एगविहं पि तं
अक्खरादिभावे पडुच्च जाव अंगवाहिरं ति चोद्दसविधं भण्णति । तत्थ अक्खरं त्रिविहं—नाणक्खरं अभिलावक्खरं
वण्णक्खरं च । तत्थ नाणक्खरं “क्षर संचरणे” न क्षरतीत्यक्षरम्, न प्रच्यवते अनुपयोगेऽपीत्यर्थः, आतभावत्तणतो,
तं च णाणं अविसेसतो चेतनेत्यर्थः । आह—एवं सव्वमविसेसतो णाणमक्खरं कम्हा सुत्तं अक्खरमिति भण्णति ?
उच्यते—रूढिविसेसतो १ । अभिलौववण्णा अक्खरं भणिता, पङ्कजवत्, एवं ताव अभिलावहेतुगहणतो सुतविण्णा-
णस्स अक्खरता भणिता २ । इदार्णि वण्णक्खरं—वण्णिज्जति अणेणाभिहेतो अत्थो इति वण्णो, स चार्थस्य, कुड्ये
चित्रवर्णकवत्, अहवा द्रव्ये गुणविशेषवर्णकवत् । वर्ण्यते—अभिलप्यतेऽनेनेति वर्णाक्षरम् ३ ॥ एत्थ सुत्तं—

६०. से किं तं अक्खरसुत्तं ? अक्खरसुत्तं त्रिविहं पण्णत्तं, तं जहा—सण्णक्खरं १ वंजण-
क्खरं २ लद्धिअक्खरं ३ ।

६०. से किं तं अक्खरसुत्तं इत्यादि । अक्खरसदं सुणतो भासतो वा अक्खरसुत्तं । तत्थऽक्खरलंभो
अभिलावो वा दव्वसुत्तं, खयोवसमलद्धी भावसुत्तं । तच्च वर्णाक्षरं त्रिविधं सण्णक्खरादि ॥ तत्थ—

६१. से किं तं सण्णक्खरं ? सण्णक्खरं अक्खरस्स संठाणा-ऽऽर्गिती । से तं सण्णक्खरं ।

६१. ‘सण्णक्खरं’ अक्खरागारविसेसो । सो य ब्रह्मादिलिविविधानो अणेगविधो आगारो । तेसु आ(अ)-
कारादिआगारेसु जम्हा अकारे अकारसण्णा एव भवति, एवं सेसेसु वि, तम्हा ते सण्णक्खरा भणिता, जहा वट्ठं
घडागारं दट्ठं ठकारसण्णा उप्पज्जतीत्यर्थः १ ॥

१ चउद्दसं मो० ॥ २ अक्खरं ति दुविहं—नाणक्खरं अभिलाववण्णक्खरं च । तत्थ नाणं “क्षर जे० ॥
३ लावणा अक्खरं आ० ॥ ४ ती सण्णक्खरं । से तं तं० सं० ६० ल० सु० ॥

६६. से किं तं कालिओवएसेणं ? कालिओवएसेणं जस्स णं अत्थि ईहा अणोहो मग्गणा गवेसणा चिंता वीमंसा से णं सण्णि चि लब्भइ, जस्स णं णत्थि ईहा अणोहो मग्गणा गवेसणा चिंता वीमंसा से णं असण्णीति लब्भइ । से तं कालिओवएसेणं ?

६६. 'कालितोवदेसेणं' ति इहाऽऽदिपदलोपो दट्ठव्वो, तस्सुच्चरणे 'दीहकालितोवदेसेणं' ति वत्तव्वं । दीहं-
 ५ आयतं, कालितो चि विसेसणं । कस्स ? उच्यते-उवदेसस्स, जहा जिणभवणे मुहुत्तकालितो दीहकालितो वा पूयामंडवो
 कतो तहा दीहकालितोवदेसेणं ति भाणितव्वो । उवदेसणमुवदेसो, उपदेसो चि वा आदेसो चि वा पण्णवण चि वा
 परवण चि वा एगट्ठा । दीहकालिओ उवदेसो दीहकालिओवदेसो, तेण दीहकालितोवदेसेणं जस्स सण्णा भवति सो
 आदिपदलोवातो कालिओवदेसेणं सण्णीत्यर्थः । अहवा कालियं-आयारादि सुत्तं तदुवदेसेणं सण्णी भण्णाति । सो य
 इमेरिसो-जो य अतीतकाले सुदीहे वि [जे० २०६ द्वि०] इदं तदिति कृतमणुभूतं वा सुमरति, वट्टमाणे य इंदिय-
 १० णोइंदिएणं वा अण्णतरं सदाइअत्थमुवलद्धं अण्णत-वइरेगधम्मोहिं ईहइ चि ईहा । तस्सेव परधम्मपरिचारे सधम्माणु-
 गतावधारणे य 'अवोहो' चि अवातो । विसेसधम्मणोसणा मग्गणा, जहा मधुर-गंभीरत्तणतो एस संखसइ इति ।
 वीसस-प्पयोगुव्वणिच्चमणिच्चं चेत्यादि गवेसणा । जो यऽणागते य चिंतयति 'कहं वा तं तत्थ कातव्वं ?' इति
 अण्णोण्णालंघणाणुगतं चित्तं चिंता । आत-पर-इह-परत्थयहिता-ऽहितविमरिसो वीमंसा । अहवा 'किमेयं ?' ति ईहा ।
 णिच्छयावधारितो अत्थो अवोधो । अभिलसियत्थस्स मणो-वयण-काएहिं जायणा मग्गणा । अभिलसितत्थे चैव
 १५ अपडुप्पज्जमाणे गवेसणा । अणेगहा संकप्पकरणं चिंता । द्वन्द्वमर्थेषु वीमंसा, जहा णिच्चमणिच्चं हितमहितं धूरं
 कृशं थोवं वहुं इत्यादि । अहवा संकप्पतो चैव विविधा आमरिसणा वीमंसा । अहवा 'अवोहो' चि अवातो । सेसा
 ईहाएगट्ठिया । जस्सेवं अण्णयरविकप्पेण मणोदव्वमणुगतं चित्तं धावति एस कालिओवदेसेण सण्णि चि । सो य
 अणंते मणोजोगे खंधे वेत्तुं मणेति, एतलद्धिसंण्णो मणविण्णाणावरणखयोवसमंजुत्तत्तणतो य जहा चक्खुमतो
 पदीवादिप्पगासेण फुडा रूवोवलद्धी भवति तहा मणखयोवसमलद्धिमतो मणोदव्वपगासेण मणोच्छेहिं इंदिएहिं
 २० फुडमत्थं उवलभतीत्यर्थः । कालितोवदेससण्णीविक्खवे असण्णी, जहेह अविमुद्धचक्खुमतो मंदमंदप्पगोसे रूवोवलद्धी
 असुद्धा एवं सम्मुच्छिमपंचेदियअसण्णिस्स, उकोसखयोवसमे वि अप्पमणोदव्वग्गहणसामत्थे मंदपरिणामत्तणतो य
 असण्णिणो अविमुद्धमप्पा य अर्थोपलब्धीत्यर्थः । ततो वि अविमुद्धा चतुरिंदियाणं, ततो तेइंदियाणं, ततो वि
 अविमुद्धा वेइंदियाणं अत्थुवलद्धी । जस्स य जइ इंदिया स तहा तेसु अवग्गहादिसु पवत्तते । विगलिंदियाण वि
 आदेसंतरतो मणोदव्व[जे० २०७ प्र०]ग्गहणं असुद्धमप्पत्तणतो य भाणितव्वं । सो य मणो तेसिं अमणो चैव
 २५ दट्ठव्वो, असुद्धत्तणतो, असीलवद् अज्ञानवद्धा । तयो वेइंदियेहितो वि समीवातो अव्वत्तरं विण्णाणं एगिंदियाण,
 जहा मत्त-मुच्छिय-विसभावितस्स य तहा एगिंदियाण सव्वधा मणाभावे विण्णाणं सव्वजहण्णं । कालितोवदेससण्णिणो
 एते सम्मुच्छिमादयो सव्वे असण्णी भवंतीत्यर्थः १ ॥ इदाणि—

६७. से किं तं हेऊवएसेणं ? हेऊवएसेणं जस्स णं अत्थि अभिसंधारणपुव्विया

१ 'स्स' अत्थि सं० सं० ल० शु० ॥ २ अवोहो जे० मो० सु० ॥ ३ सण्णीति जे० मो० सु० ॥ ४ 'स्स' णत्थि सं० सं० शु०
 ल० ॥ ५ अवोहो जे० मो० सु० ॥ ६ 'ण्णी' लं सं० सं० डे० ल० शु० ॥ ७ आत्म-परेह-परत्रजहिता-ऽहितविमर्ष इत्यर्थः ॥
 ८ 'हुप्प'णमाणे दा० । 'हुच्च'माणे आ० ॥ ९ 'त्तं' वा वत्तति पस्स जे० आ० दा० । धावति इति पाठस्तु मो० चूर्णादिशंगतो शेषः ॥
 १० 'महेतु'त्तणतो आ० दा० ॥ ११ 'गासा' रूवो आ० ॥ १२ अघनवद्धा आ० ॥ १३ जस्स अत्थि सं० सं० ल० शु० ॥

करणसंती से णं सैण्णीति लब्धम्, जस्य णं णत्वि अभिसंधारणपुत्रिव्या करणसंती से णं
असर्णि त्ति लब्धम् । से तं हेतुवत्सेणं २ ।

६७. 'हेतुवत्सेणं' ति हेतुः कारणं निमित्तमित्यनर्थान्तरम्, 'उत्प्रेक्षेणं' ति पूर्वम् । हेतुतो मंगला भवति
ति जेण तेण गो हेतुउत्प्रेक्षेण मंगला भवति । 'जस्य' ति जीस्य, 'णं' वाक्यान्तरं देसोदयगतो वा अस्म
स्वल्पमदर्शनवचनोपन्यासे वा, अव्यक्तेन चिदानेन अभिसन्धाय पूर्व ततः चिदान्तरैव 'करणजन्तिः' कर्ण-विच
जन्तिः-नामर्थ, अथवा करणे जन्तिः करणजन्तिः, अथवा करण एव जन्तिः कर्णजन्तिः । तच्च अभिसंधारण
संचित्य संचिन्य हेतुवत्सम्यक् आदारादिषु प्रवर्तते, अपिहेतुवत् य पियर्तते । एवं सदेवगणितान्तेतो प्रव
र्तते । ते य पायं पदप्रणयान्ते, ण तीता-ज्जागदकाव्यवर्तितो भवति, उत्तरात्मेवं, तेहिं तु तीता-ज्जागदका
वर्तितो वि भवति, ते पुण ण दीदकाव्यवर्तितो । विच-हेतु दि आगतो मङ्गलो मङ्गलाचोदको अभिसन्धायो
दृष्टव्यो । एवं ते विचोदित्या मस्युच्छिद्योदित्या यात्य । हेतुवत्सम्यक् संचित्य, ते प्रवृत्त आगतो ते विचोद
इहा-अपिहेतुवत्[अ]विणियद्वयादारा मन-सुच्छिद्य-विचोदित्यादिगणितान्तेतो दिना सुवृत्तविचोदित्या इत्यर्थः २ ।

इदानीं—

६८. से किं तं दिद्विवाओवत्सेणं ? दिद्विवाओवत्सेणं नति मुद्योग नओवत्सेणं
सर्णी लब्धति, असर्णिणमुद्योग्य स्वओवत्सेणं अस्मात् लब्धति । से तं दिद्विवाओवत्से
णं ३ । से तं सर्णिणमुत्तरं ३ । से तं असर्णिणमुत्तरं ४ ।

[२] ईचेताइं सम्मदिट्ठिस्स सम्मत्तपरिगहियाइं सम्मसुयं । ईचेयाइं मिच्छदिट्ठिस्स मिच्छत्तपरिगहियाइं मिच्छंसुतं ।

[३] अहवा मिच्छदिट्ठिस्स वि एँयाइं चेव सम्मसुयं, कम्हा ? सम्मत्तहेउत्तणओ, जम्हा ते मिच्छदिट्ठिणो तेहिं चेव सम्मएहिं चोइया समाणा केइ सपक्खदिट्ठीओ वमेति । से तं मिच्छंसुयं ६ ।

७०. [१] से किं तं मिच्छंसुतं इत्यादि । अण्णाणं इतेहिं [जे० २०९ प्र०] अण्णाणितेहिं । अण्णाणं-अवोधो विवरीयत्थवोधो वा तेण इतो-अणुगतेत्यर्थः । मिच्छादिट्ठिं इतेहिं मिच्छादिट्ठितेहिं, मिच्छ चि-अनृतं, दिट्ठि चि-दरिसणं, मिच्छादिट्ठिणा अणुगतेहिं ति भणितं भवति । स-इत्यात्मनिर्देशः, छन्दः-अभिप्रायः, तैत्थमतत्थेण वा अत्थस्स जो वोहो स बुद्धिः-अवग्रहमात्रम्, उत्तरच ईहादिविकप्पा सव्वे मती । अहवा नाणावरणखयोवसमभावो बुद्धी, सो चेव जहा मणोदव्वणुसारतो पवत्तइ तदा मती भणति । एवं आत्माभिप्रायबुद्धि-मतिभिः यच्छ्रुतं विविधकल्पनाविकल्पितमिति रचितं, तच्च भारवादि जाव चत्तारि य वेदा संगोवंगा, सव्वेते लोगसिद्धा, लोगतो चेवेतेसि सरुवं जाणितव्वं । एतं सव्वं मिच्छभावट्ठितं ति कातुं मिच्छंसुतं भाणितव्वं । एतम्मि सम्म-मिच्छंसुत-विकप्पे चतुरो विकप्पा भाणितव्वा इमेण विधिणा—

[२] सम्मंसुतं सम्मदिट्ठिणो सम्मंसुतं चेव १, सम्मंसुतं मिच्छदिट्ठिणो मिच्छंसुतं २, मिच्छंसुतं सम्मदिट्ठिणो सम्मंसुतं ३, मिच्छंसुतं मिच्छदिट्ठिणो मिच्छंसुतं चेव ४ । 'ईचेताइं सम्मदिट्ठिस्स सम्मत्तपरिगहिताइं सम्मंसुतं' एत्थ सुत्ते पढम-तइयविकप्पा दट्ठव्वा । 'ईचेयाइं' ति सम्म-मिच्छंसुताइं, अहवा मिच्छंसुताइं चेव । सेसं कंठं । 'मिच्छदिट्ठिस्स' इच्चादिमुत्ते वितिय-चतुत्थविकप्पा दट्ठव्वा । तत्थ पढमविकप्पे सम्मंसुतं सम्मत्तगुणेण सम्मं परिणामयतो सम्मंसुतं चेव भवति १ वितियविकप्पे वि जहा खंडसंजुतं खीरं पित्तजरोदयतो ण सम्मं भवइ तहा मिच्छत्तुदयतो सम्मंसुते मिच्छाभिणिवेसतो मिच्छंसुतं भवति २ ततियविकप्पे तिफलादिमणिट्ठं पि उवउत्तं उवका-स्कारित्तणतो सम्मं भवति तहा मिच्छंसुते मिच्छभावोवलंभातो सम्मंसुते दहतरभावुप्पायकरणत्तणतो तं से सम्मंसुतं भवति ३ चरिमविकप्पे मिच्छंसुतं, तं चेव मिच्छाभिणिवेसतो मिच्छंसुतं चेव भवति ४ ।

[३] तस्स वा मिच्छदिट्ठिणो तं चेव मिच्छंसुतं सम्मंसुतं भवति । कम्हा एवं भणति ? उच्यते-परिणाम-विसेसतो, जम्हा ते मिच्छदिट्ठिणो 'तेहिं [जे० २०९ दि०] चेव' पुव्वावरविरुद्धेहिं मिच्छंसुतभणितेहिं 'चोदिता' भणिता 'समाणा' इति सन्तः, चोदणानंतरं आत्मेकालावस्थायां सन्त इत्यर्थः । पुव्वं जं सासणं पडिक्खणो 'तं से सपक्खो, तम्मि जा दिट्ठी तं 'वमेति' परिचयंति, छट्ठेति चि वुत्तं भवति । जम्हा एवं तम्हा तं पुव्वमिच्छंसुतं सम्मंसुतं से भवति । पर आह-तत्तावगमसंभावसामण्णे सम्मत्त-सुताणं को पतिविसेसो जेण भणति 'सम्मत्त-परिगहिताइं सम्मंसुतं' ? उच्यते-जहा णाण-दंसणाणं अववोधसामण्णे भेदो तहा सम्म-सुताणं पि भविस्सति ।

१ पयाणि चेव सम्मं सर्वासु सूत्रप्रतिषु । श्रुतिकर्त्रोरयमेव सूत्रपाठः सम्मतोऽस्ति ॥ २ पयाइं मिच्छं सर्वासु सूत्रप्रतिषु । श्रुतिकर्त्रोरयमेव सूत्रपाठः सम्मतः ॥ ३ 'च्छदिट्ठिपरि' खं ॥ ४ मिच्छासुयं दे० मो० मु० । अपि च-सम्यक्श्रुत-मित्र्याश्रुतविवेचकोऽयं गुणाः सर्वासु सूत्रप्रतिषु दृश्योरपि च क्रमव्यत्यायेन वर्तते ॥ ५ पयाइं चेव इति खं सं० जे० दे० ल० शु० नास्ति । श्रीहरिमद्राचार्यैरपि नाप्ययं पाठः स्वीकृतः ॥ ६ 'ट्ठिया तेहिं दे० ल० विना ॥ ७ ससमएहिं जे० ॥ ८ चयंति जे० मो० । श्रीमलयनिरिपादे-रत्नभाटानुसारेणैव व्याख्यातमस्ति ॥ ९ मिच्छासुयं दे० मो० मु० ॥ १० तत्थ आतत्थेण वा अत्थस्स आ० दा० ॥ ११ 'तमकलावस्थायाः स' आ० ॥ १२ तस्सेस पक्खो जे० ॥ १३ 'सम्भाव' आ० दा० ॥

कठं? उच्यते—जदा विमेषाणं बोधमश्रुत-याग्ये नाणं, अच्युतेदावर्षे च श्रुतं तदा इमं । ततो जा रती तं सम्मनं, तत्प्रेय जं रोचयं तं सुतं । एवं मिच्छन्परिणिघे वि वच्यते ६ ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां—

७१. से किं तं सादीयं सपज्जवसियं ? अणादीयं अपज्जवसियं च ? ईद्वयं दुवालस्यं गणपिपिडगं विउन्नित्तिगयद्वयाण् सादीयं सपज्जवसियं, अविउन्नित्तिगयद्वयाण् अणादीयं अपज्जवसियं ।

७१. ने किं नं म्यादीयं इत्यादि । इह पञ्चानुष्ठितो शैवसिद्धिः, तस्मै शैवेन पञ्चानुष्ठिते पि म्यादि
अपञ्चकत्वात् । कतः ? जहा गङ्गादिभ्यश्चमयेनानो जातो यः । इहानुष्ठितो तुल्य अन्वयसिद्धिः, तस्मै शैवेन पञ्चा-
नुष्ठिते पि 'अणादि अपञ्चकत्वात् च' त्रिकालव्यवस्था, जहा पञ्चमिदं यः ॥ तस्मै शैवेन पञ्चानुष्ठिते पञ्च-
चित्तज्जति । तस्य—

७२. नं समानओ चउच्चिहं पणनं. नं जहा-द्वयो खेओ कालओ भावओ ।
 नैत्य द्वयो णं सम्मनुयं एगं पुग्गिं पडुअ गादीयं मपज्जवगियं. ववने पुग्गिं पडुअ अणादीयं
 अपज्जवगियं १ । खेतओ णं पंच भग्गाहं पंच पैयव्वाहं पडुअ गादीयं मपज्जवगियं. पंच
 महाविदेहाहं पडुअ अणादीयं अपज्जवगियं २ । कालओ नं औत्तरिओ उत्तरिओ न
 पडुअ गादीयं मपज्जवगियं. णोउत्तरिणि णोउत्तरिणो च पडुअ अणादीयं मपज्जवगियं
 ३ । भावओ णं जे जया त्रिणपण्णत्ता भावा आरविज्जंति ताविज्जंति पत्तिज्जंति
 दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उयदंसिज्जंति ते । महा पडुअ गादीयं मपज्जवगियं. मा सोत्त
 गियं पुण भावं पडुअ अणादीयं अपज्जवगियं ४ ।

‘आघेविज्जंति’ आख्यायन्ते सामण्णतो [विसेसतो] विसेससामण्णतो वा, पण्णविज्जंति भेदप्रभेदेहिं, तेसिं भेदप्र-
भेदाणं सरुवमक्खाणं परुवणा, दंसिज्जंति उव्वमामेत्तेण जहा गो तहा गवय इति, णिदंसणं हेतु-दिट्ठंतेहिं, उव्वदंसणा
उव्वणयोवसंधारेहिं सव्वणएहिं वा । अहवा एगट्ठिता एते । ‘ते’ इति पण्णवणिज्जाण णिहेसो । ‘तहा’ इति पण्णवगं
पण्णवणिज्जे वा पडुच्च सादि सपज्जवसाणं भवति । तत्थ पण्णवगं पडुच्च उव्वयोगतो सरविसेसतो पयत्तयो आसण-
5 विसेसतो य सादि सपज्जवसाणं । पण्णवणिज्जे पडुच्च गतीतो ठाणतो दुपदेसादिभेदतो तहेगपदेसादिमवगाहतो
एगसमयादिमवत्थाणतो वण्णादिपज्जवे य आसज्ज सादि सपज्जवसाणं । पाढंतरं वा “ते तदा पडुच्च” ‘तया’ इति
कालं अनाद्यपर्यवसितम् । भावतः श्रुतज्ञानं क्षायोपशमिके भावे नित्यं वर्तते स्वामित्वसम्बन्ध इति ।

७३. अहवा भवसिद्धीयस्स सुयं सार्इयं सपज्जवसियं, अभवसिद्धीयस्स सुयं अणा-
दीयं अपज्जवसियं ।

10 ७३. अहवा सादि सपज्जवसाणं सपडिपक्खपदेसु भंगचतुक्के पढमभंगे सम्मसहितसुतभावो चित्तेयव्वो,
अणेगविहं वा खयोवसमभावं पडुच्च दव्वादिव्वयोगं वा पडुच्च पढमभंगो भवति । वितियभंगो सुण्णो, अहवा
अभव्वाणं अणागतद्वसंजोगेण सुतभावो भाणितव्वो । चरिम-ततियभंगेसु अविसिद्धसुतभावो अभव्व-भव्वे पडुच्च
जोएतव्वो । अभवसिद्धीयस्स इत्यादि सुतसिद्धं । इह चरिम-ततियभंगेसु अणादिसुतभावो दिट्ठो सुताधि-
कारतो, इधरा मतिभावो वि दट्ठव्वो, मति-सुताण अण्णोण्णाणुगतत्तणतो । सो य अणादिणाणभावो जहण्णो
15 अजहण्ण[जे० २१० द्वि०]मणुक्कोसो वा हवेज्ज, उक्कोसो ण भवति, कम्हा ? जम्हा उक्कोसनाणभावो केवल्लिणो
भवति ॥ तस्स य सुत्ते इमं पमाणं पढिज्जति—

७४. सव्वागासपदेसग्गं सव्वागासपदेसेहिं अणंतगुणियं पज्जवग्गक्खरं णिप्फज्जइ ।

७४. सव्वागासपदेस इत्यादि सूत्रं । सव्वमिति—अपरिसेससव्वग्गं अधिकिच्चेवं भण्णति, सव्वं आकासं
सव्वाकासं, सव्वागासस्स पदेसा सव्वागासपदेसा, जं एतेसिं अग्गं—जं परिमाणं ति वुत्तं भवति, एतं सव्वागासप्प-
20 देसरासियग्गं अणंतेण रासिणा अण्णेण गुणितं ताहे जं रासिपमाणं लब्धमिति तं सव्वपज्जवाण अग्गं भवति ।
पज्जाया णाम—एक्केक्कसाऽऽगासपदेसस्स जावंतो अगुरुलहुयादी पज्जवा ते पण्णाए सव्वे संपिडिता, तेसिं
संपिडिताणं जं अग्गं एतप्पमाणं अक्खरं लब्धमिति ।

[अक्खर पडलं]

इह अक्खरं ति दुविहं-णाणं अकारादिद्वसुतक्खरं च । तत्थ नाणमक्खरं ति अविसेसतो सव्वनाणमक्खरं,
25 जम्हा तं जीवातो उप्पण्णं अण्णभावत्तणतो णो क्खरति त्ति, इह पुण सव्वपज्जायतुल्लत्तणतो केवल्लणाणं
वेत्तव्वं, जम्हा केवलं सव्वदव्वपज्जायविण्णत्तिसमत्थं भवति । तं च केवलं णेये पवत्तइ, तस्स वि परिमाणं इमेणं
चेव विधिणा भाणितव्वं—‘सव्वागासपदेसग्गं’ इत्यादि पूर्ववत् । ते य सव्वदव्वपज्जाया समासतो तीसं इमेण
विधिणा—गुरु ल्हू गुरुल्हू अगुरुल्हू एते चतुरो, पंच वण्णा, दो गंधा, पंच रसा, अट्ठ फासा, अणित्थंत्थ-
संठाणसहिता छ संठाणा, एते सुत्तदव्वे सव्वे संभवन्ति । अमुत्तदव्वेसु अगुरुल्हू चेव एक्को पज्जायो संभवइ ।

१ “आपविज्जंति” ति प्राकृतदौल्या आख्यायन्ते, सामान्य-विशेषाभ्यां कथ्यन्ते इत्यर्थः” इति ह्यारि० नन्दिवृत्तौ । “अग्वविज्जंति”
ति प्राकृतत्वाद् आख्यायन्ते, सामान्यरूपतया विशेषरूपतया वा कथ्यन्ते इत्यर्थः” इति मलय० नन्दिवृत्तौ ॥ २ सायि सपं सं० ।
सार्इ सपं ल० ॥ ३ पज्जवक्खरं जे० मो० सु० विआमलवृत्तौ २६८ पत्रे नन्दिस्वप्नाठोद्धरणे । नायं पाठश्चूणि-वृत्तिकृतां सम्मतः ॥

रुवि-अरुविदव्वाण य पज्जायअप्पवहुत्तं इमं भण्णति-रुविदव्वाणं जे य अगुरुलहुपज्जाया ते पण्णाच्छेदेण पंडिता, एतेहिंतो एकस्स चेव अमुत्तदव्वस्स जे अगुरुयलहुपज्जाया ते अणंतगुणा भवंतीत्यर्थः । एत्थ सीसो भण्णति-केवतितेहिं पुण भागेहिं मुत्तदव्वाणं पिंडितपज्जाएहिंतो अमुत्तदव्वाणं अगुरुलहुपज्जाया अणंतगुणा भवंति ? उच्यते-नास्त्यत्र परिमाणं, बहुधा वि अणंतएणं गुणिज्जमाणे अमुत्तदव्वपज्जाएमु णत्थि परिमाणं ॥

एवंगते परिमाणार्थे इमं भण्णति—

केण हवेज्ज निरोधो अगुरुलहुपज्जायाण तु अमुत्ते ? ।

अच्चंतमसंजोगो जहितं पुण तव्विवक्खस्स ॥ ३ ॥ [कल्पभा. गा. ६९]

जतो अमुत्तदव्वाणं बहुधा वि अणंतएण गुणिज्जमाणे पेज्जायणं ण भवति । ततो 'केनेति' केनान्येन प्रकारेण 'हवेज्ज' त्ति भवे 'निरोधो णाम' परिमाणं ? परिच्छेदेत्यर्थः, किं मुत्तदव्वेहिंतो अमुत्तदव्वाणं अगुरुयलहुपज्जायपरिमाणं भविस्सति ? त्ति, नेत्युच्यते, 'अच्चंतमसंजोगो' 'अच्चंतं' अतीव अयुज्जमाणो जम्हा संजोगो । [जे० २१२ प्र०] 'जहियं' ति यत्र । 'पुण' विसेसणे । किं विसेसयति ? रुविदव्वे । तदित्यनेन अमुत्तदव्वपक्खो, तस्स विक्खो-मुत्तदव्वपगारो, तेसु पज्जायथोवत्तणतो अमुत्तदव्वेसु य पज्जायाण अतीववहुयत्तणतो, अतो मुत्तदव्वेहिंतो अमुत्तदव्वपज्जायाण परिमाणकरणसंजोगो एगंतेणेव ण जुज्जते, ण यट्तेत्यर्थः ॥

एवं तु अणंतैहिं अगुरुलहुपज्जाएहिं संजुत्तं ।

होति अमुत्तं दव्वं अरुविकायाण तु चतुण्हं ॥ ४ ॥ [कल्पभा. गा. ७०]

'एवमिति' यथेदमुत्तं । सेसं कंठं । णव्वरिं 'अरुविकाताण तु चतुण्हं' ति धम्मा-धम्मा-ऽऽगास-जीवाणं ति एतेसिं चतुण्हं वि नियमा पत्तेयं अणंता अगुरुयलहुयपज्जाया भवंति । कंठं ? उच्यते-जम्हा एतेसिं एक्केको पदेसो अणंतैहिं अगुरुयलहुयपज्जाएहिं संजुत्तो तम्हा धम्मा-धम्ममेगजीवस्स य असंखेज्जपदेसत्तणतो असंखेज्जमणंता पत्तेयं भवंति । आगासपदेसअपरिमाणत्तणतो पुण तस्स नत्थि परिमाणं, तद्वा वि संववहारतो अणंता उक्ता इत्यर्थः ॥

एवं ताव ज्ञेयमनंतमुत्तम् । अथेदानीं तत् केवलज्ञानं यथाऽनन्तं तथेदमुच्यते—

उवल्लङ्गी० गाहा । [कल्पभा. गा. ७१] सव्वे रुविदव्वा-रुविदव्वाण य जावत्तिया गुरुलहुपज्जाता सव्वे अरुविदव्वाण य जे अगुरुलहुपज्जाया एते सव्वे जुगवं जाणति पासतिं य जतो, एवमणंतं केवलनाणमक्खरं ति सप्रसंगमभिहितम् ।

इदानीं 'अकारादिदव्वसुत्तमक्खरं' ति जति अविसेसतो णाणमक्खरमुत्तं णेयं वा तद्वा वि रुद्विसतो जद्वा पंकयं तद्वा सरक्खरं वंजणक्खरं वण्णक्खरं वा भण्णति । तत्थ 'सरक्खरं' अक्खरं अक्खरं सरंति-गच्छंति सरंति वा इत्यतो सरक्खरं अकारादि, वंजणस्स वा फुडमभिधाणं सरंति, ण वा सरक्खरमंतरेण अत्थो संभरिज्जइ त्ति सरक्खरं । ककारादि वंजणक्खरा, व्यज्यते तेनार्थं इति प्रदीपेन घटादिचद् व्यंजनाक्षरम् । तेहिं चेव सर-वंजणक्खरेहिं जद्वा अत्थो वण्णिज्जति अभिलप्यते वा तद्वा ते वण्णक्खरं भण्णंति । इह एक्केक्कस्स अकारादिहकारांतमक्खरस्स स-परप-ज्जायभेदा इमे-अकारस्स य पज्जाया जद्वा दीह-इस्व-प्लुतास्सयः, तत्थ दीहो [जे० २१२ द्वि०] उदात्ता-ऽनुदात्त-स्व-रित्तभेदः, एवं इस्व-प्लुतायपि, पुनरप्येक्केको सानुनासिको निरनुनासिकश्च, इत्येवं अष्टादशभेदः । एवं सेसक्खराण वि जद्वासंभवं भेदा भावितव्या । अहवा सरविसेसतो एक्केक्कमक्खरस्स अणंता सपज्जाया । एत्थ अकारस्स

१ पज्जायणं जे० दा० ॥ २ अपुज्जमाणो आ० ॥ ३ तसरक्खरस्स आ० दा० ॥ ४ तस्सिमेदः, जे० दा० ॥

तभागो निजुग्घाडियतो, सो केवलस्स न संभवति, केवलस्स अविभागसंपुण्णत्तणतो य; ओधीणं वि ण संभवति, अणंतभागस्स अभावत्तणतो, अवघेः असंख्येयप्रकृतिसंभवादित्यर्थः; मणपज्जयनाणे वि रिजु-विपुलदुभेदसंभवतो अणंतभागो ण भवति, किंच अवधि-मणपज्जयाणं निजुग्घाडअभावत्तणतो इह अणधिकारो; परिसिट्ठे मति-मुते च्छि 'अक्खरस्स अणंतभागो निजुग्घाडियतो' अधिकतमुतस्स वा अक्खरस्स अणंतभागो निजुग्घाडियतो । जत्थ 5 सुतं तत्थ मतिणाणं पि वेत्तव्वं । 'णिच्चं' ति सव्वकालं । 'उग्घाडित्तो' च्छि णाऽऽवरिज्जति । सो य अणंतभागो पुढवादिएगिंदियाणं वि पंचण्हं निजुग्घाडो, अहवा सव्वजहण्णो अणंतभागो निजुग्घाडो पुढविकाइए, चैतन्यमात्र-मात्मनः । तं च उक्कोसथीणिद्धिसहितनाण-दंसणावरणोदए वि णो आवरिज्जति ।

जति पुण सो वि वरिज्जेज्ज तेण जीवो अजीवयं पावे । सुट्ठु वि मेहसमुदए होति पढा चंद-सूराणं ॥१॥

[कल्पभाष्ये गा. ७४]

10 जम्हा सो णाऽऽवरिज्जति तम्हा जीवो जीवत्तं ण परिचयति । सो य कम्हा णाऽऽवरिज्जति? उच्यते-दव्व-सभावसरुवत्तणतो । इह दिट्ठंतो जहा—सुट्ठु वि मेहच्छादिए णभे चंद-सूरप्पढा मेहपडले भेत्तुं दव्वे ओभासति, तहा अणंतहिं णाण-दंसणावरणकम्मपुग्गलेहिं एक्केको आतप्पदेसो आवेदियपरिवेदितो ते कम्मावरणपडले भेत्तुं नाणस्स अणंतभागो उव्वरति, [जे० २१३ द्वि०] ततो य से अव्वत्तं नाणमक्खरं सव्वजहण्णं भवति । ततो पुढविकाइ-तेहिं तो आउक्कातियाणं अणंतभागेण विसुद्धतरं नाणमक्खरं, एयं कमेणं तेउ-वाउ-वणस्सति-वेइंदिय-तेइंदिय-चतुरि- 15 दिय-असण्णिपंचेदिय-सण्णिपंचेदियाणं य विसुद्धतरं भवतीत्यर्थः । ७ । ८ । ९ । १० ॥ भणितं सादि सपज्जवसितं अणादि अपज्जवसितं च । एत्थेय प्रसंगतो अक्खरपडलं भणितं ।

एयं बहुवत्तव्वं अक्खरपडलं समासतोऽभिहितं । वित्थरतो से अत्थं जिण-चोदसपुब्बिया कए ॥ १ ॥

[॥ अक्खरपडलं सम्मत्तं ॥]

इदार्णि गमिया-अगमियं—

20 ७६. से किं तं गमियं? गमियं दिट्ठिवाओ । अगमियं कालितं सुयं । से तं गमियं । से तं अगमियं ११ । १२ ।

७६. गमयहुलत्तणतो गमियं । तस्स लक्खणं—आदि-मज्झ-अवसाणे वा किंचिविसेसजुत्तं मुत्तं दुगादिस-तग्गसो तमेय पढिज्जमाणं गमियं भण्णति, तं च एवंविहमुस्सण्णं दिट्ठिवातो । अण्णोण्णक्खराभिधानट्ठितं जं पढिज्जति तं अगमियं, तं च प्रायसो आयारादि कालियमुत्तं ११ । १२ ॥

25 उक्तं गमिया-अगमियं । इदार्णि अंगा-अणंग-पविट्ठं—तं च गमिया-अगमियं चेव समासतो अंगा-अणंगपविट्ठं भण्णति । कटं ? उच्यते—सव्वमुत्तस्स तव्भावंतगतत्तणतो ।

७७. अहवा तं समासओ दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-अंगपविट्ठं अंगवाहिरं च ।

७७. अहवा अरिहंतमग्गोचदिट्ठाणुसारि सुतं जं तं समासतो दुविहं इत्यादि मुत्तं ।

१ 'पडलं आ० दा० ॥ २ एत्थं यहु' आ० दा० ॥ ३ अहवा इति सं० सं० ल० शु० नास्ति ॥ ४ 'ट्ठं च अंगं' जे० ॥ ५ अणंगपविट्ठं च ग० सं० डे० ल० शु० ॥

पायदुर्गं जंयोनं गानदुर्गदं तु दो व चाह्यो । गोघा मिं च तुम्यो वाग्यधेयो नृत्तविमिदो ॥ १ ॥

चित्तम् नृत्तप्रगल्भम् जं नृत्तं अंगमावमावद्वितं नं अंगवाहिरं भवति । जं तु वा पदमेव नृत्तप्रगल्भम् चाने-
गाद्वितं नं अंगवाहिरं ति भवति । अथा—

गणद्वयतमंगगतं जं वन केरेहिं वाहिरं नं च । त्रियतं अंगवाहिरं अत्रियतं नृत्तं वाहिरं भवति ॥ १ ॥

७८. से किं तं अंगवाहिरं ? अंगवाहिरं दृष्टिहं भवति, तं जवा-आवम्यगं च आव-
म्यगवद्वितं च ।

७९. से किं तं आवम्यगं ? आवम्यगं छविहं भवति, तं जवा-आवम्यगं १ चउ-
दीन्यथो २ वंदेणयं ३ पट्टिकयं ४ कोउम्यगो ५ पट्टिकयं ६ । से तं आवम्यगं ।

७८-७९. से किं तं अंगवाहिरमिच्छति । वंदे ॥

८०. से किं तं आवम्यगवद्वितं ? आवम्यगवद्वितं दृष्टिहं भवति, तं जवा-आवम्यगं
च उक्तान्ये च ।

८१. आवम्यगवद्वितं दृष्टिहं—दृष्टिहं भवति, तं जवा-आवम्यगं १ चउ-
दीन्यथो २ वंदेणयं ३ पट्टिकयं ४ कोउम्यगो ५ पट्टिकयं ६ । से तं आवम्यगं ।

कप्पसुतं ४ । एमेव [पण्णवणा] पण्णवणत्थो सवित्थरो ८ । अण्णे य सवित्थरत्था जत्थ भणिता सा महा-
 पण्णवणा ९ । मज्जादियो पंचविहो पमातो, तेसु चेव आभोगपुब्बिया उवरती अप्पमातो, एते जत्थ सवित्थरत्था
 दंसिज्जति तमज्झयणं पमादप्पमादं १० । सूरचरितं पण्णविज्जते जत्थ सा मूरपण्णत्ती १६ । पुरिसो चि-संक्क
 पुरिससरीरं वा, ततो पुरिसातो निष्फण्णा पोरिसी, एवं सव्वस्स वत्थुणो जदा स्वप्पमाणा च्छाया भवति तदा
 ५ पोरिसी भवति, एतं पोरिसिप्पमाणं उत्तरायणस्स अंते दक्खिणायणस्स य आदीए एक्कं दिणं भवति, अतो परं अट्ठ
 एकसट्ठिभागा अंगुलस्स दक्खिणायणे वड्ढंति, उत्तरायणे य हस्संति, एवं मंडले मंडले अण्णोण्णा पोरिसी जत्थ
 अज्झयणे दंसिज्जति तमज्झयणं पोरिसिमंडलं १७ । चंदस्स सूरस्स य दाहिणुत्तरेसु मंडलेसु जहा मंडलातो मंडले
 पवेसो तहा वण्णिज्जति जत्थज्झयणे तमज्झयणं मंडलप्पवेसो १८ । विज्ज चि-नाणं, चरणं-चारित्तं, विविधो
 विसिट्ठो वा णिच्छयो-सव्भावो स्वरूपमित्यर्थः, फलं वा निच्छयो, तं जत्थज्झयणे वण्णिज्जति तमज्झयणं विज्जा-
 १० चरणविणिच्छयो १९ । सवाल-बुद्धाडलो गच्छो गणो, सो जस्स अत्थि सो गणी, विज्ज चि-णाणं, तं च
 जोइसनिमित्तगतं णातुं पसत्थेसु इमे कज्जे करेति, तं जहा-पव्वावणा १ सामाइयारोवणं २ उवट्ठावणा ३ सुतस्स
 उद्देस-समुद्देसा-ज्जुण्णातो ४ गणारोवणं ५ दिसाणुण्णा ६ खेत्तेसु य णिग्गम-पवेसा ७, एमाइया कज्जा जेसु तिहि-
 करण-णक्खत्त-मुहुत्त-जोगेसु य जे जत्थ करणिज्जा [जे० २१४ द्वि०] ते जत्थज्झयणे वण्णिज्जति तमज्झयणं
 गणिविज्जा २० । थिरमज्झवसाणं ज्ञाणं, विभयणं विभत्ती, सभेदं ज्ञाणं जत्थ वण्णिज्जति अज्झयणे तमज्झयणं
 १५ ज्ञाणविभत्ती २१ । मरणं-पाणपरिचागो, विभयणं-विभत्ती, पसत्थमपसत्थाणि सभेदाणि मरणाणि जत्थ
 वण्णिज्जति अज्झयणे तमज्झयणं मरणविभत्ती २२ । आत चि-आत्मा, तस्स विसोही तवेण चरणगुणेहिं य
 आलोयणाविहाणेण य जहा भवति तहा जत्थ अज्झयणे वण्णिज्जति तमज्झयणं आतविसोही २३ । सरागो
 वीतरागो य एतेसिं जत्थ सख्खकहणा, विसेसतो वीतरागस्स, तमज्झयणं वीतरागसुतं २४ । वाघातो निव्वाघातो
 वा भत्तसंलेहो कसायादिभावसंलेहो य जो जहा कातव्वो तहा वण्णिज्जते जत्थज्झयणे तमज्झयणं संलेहणासुतं
 २५ । विहरणं विहारो, तस्स कप्पो-विधि चि वुत्तं भवति, सो जिणकप्पे थेरकप्पे वा, जिणकप्पे पडिम-अहालंद-
 परिहारिया य दट्ठव्वा, एतेसिं सवित्थरो विधी जत्थ अज्झयणे [वण्णिज्जति] तमज्झयणं विहारकप्पो २६ ।
 चरणं-चारित्तं, तस्स विही चरणविही, सभेदो चरणविही वण्णिज्जति जत्थ अज्झयणे तमज्झयणं चरणविही २७ ।
 आउरो-गिलाणो, तं किरियातीतं णातुं गीतत्था पच्चक्खावेति, दिणे दिणे दव्वहासं करेता अंते य सव्वदव्वदात-
 णताए भत्ते वेरगं जणेतो भत्ते नित्तहस्स भवचरिमपच्चक्खाणं कारेति, एतं जत्थज्झयणे सवित्थरं वण्णिज्जइ
 २५ तमज्झयणं आउरपच्चक्खाणं २८ । थेरकप्पेण जिणकप्पेण वा विहरित्ता अंते थेरकप्पिया वारस वासे संलेहं
 करेत्ता, जिणकप्पिया पुण विहारेणेव [जे० २१५ प्र०] संलीढा तहा वि जहाजुत्तं संलेहं करेत्ता निव्वाघातं सचेट्ठा
 चेव भवचरिमं पच्चक्खंति, एतं सवित्थरं जत्थज्झयणे वण्णिज्जति तमज्झयणं महापच्चक्खाणं २९ । एते
 अज्झयणा जहाभिघाणत्था भणिया ॥

उक्तं उक्कालियं । इदाणि कालियं—

८२. से किं तं कालियं ? कालियं अणेगविहं पण्णत्तं, तं जहा-उत्तरज्झयणाइं १
 दसाओ २ कप्पो ३ ववहारो ४ णिसीहं ५ महाणिसीहं ६ इसिभासियाइं ७ जंबुद्वीवपण्णत्ती

१ “जीवादीनां प्रज्ञापनं प्रज्ञापना” इति ह्यस्मिन्वृत्तौ ॥ २ कालियं अणंगपविट्ठं ? कालियं अणंगपविट्ठं अणेगं सं०
 सं० ३० । नायं पाठ्यचूर्णि-वृत्तिरुतां सम्मतोऽस्ति ॥

८ दीवसागरपण्णत्ती ९ चंदपण्णत्ती १० खुट्टियाविमागरविभत्ती ११ महन्नियाविमागरविभत्ती
 १२ अंगचूलिया १३ वैसगचूलिया १४ विवाहचूलिया १५ अरुणोववाण १६ गरुलोववाण १७
 धरणोववाण १८ वेममणोववाण १९ देविदोववाण २० देल्लेदगेववाण २१ उट्टाणमुयं २२ ममु-
 ट्ठाणमुयं २३ नागपरियाणियाओ २४ निर्यावलियाओ २५ कयवडिमियाओ २६ पुत्तियाओ
 २७ पुण्णचूलियाओ २८ वण्णीदयाओ २९ ।

- १७ घरणे १८ वेसमणे १९ सक्के-देवेन्दे २० वेलंधरे २१ य चि । 'उट्ठाणसुते' ति अज्झयणं सिंगणाइयकज्जे जस्स णं गामस्स वा जाव रायहाणीए वा एगकुलस्स वा समणे आगुरुत्ते रुट्ठे उवउत्ते तं उट्ठाणसुते चि अज्झयणं परियट्ठेति एकं दो तिणिण वा वारे ताहे से गामे वा जाव रायहाणी वा कुलं वा उट्ठेति, उव्वराइ चि वुत्तं भवति २२ । से चेव समणे [जे० २१५ द्वि०] तस्स गामस्स वा जाव रायहाणीए वा तुट्ठे समाणे पसण्णे पसण्णलेस्से
- 5 सुहांसणत्थे उवउत्ते समुट्ठाणसुते परियट्ठेइ एकं दो तिणिण वा वारे ताहे से गामे वा जाव रायहाणी वा आवासेति । समुवट्ठाणसुये चि वत्तव्वे वगारलोवातो समुट्ठाणसुये चि भणितं । अप्पणा पुव्वुट्ठियं पि कतसंकप्पस्स आवासेति २३ । 'णागपरियाणिय' चि अज्झयणे णाग चि-नागकुमारे, तेसु समयनियद्धं अज्झयणं, तं जदा समणे उवयुत्ते परियट्ठेति तया अकतसंकप्पस्स वि ते णागकुमारा तत्थत्था चेव परियाणंति, वंदंति णमंसंति भत्तिवहुमाणं च करेति, सिंगणाइयकज्जेसु य वरया भवंतीत्यर्थः २४ । निरयावलिआसु आवलियपविट्ठेतरे य निरया तग्गामिणो
- 10 य णर-तिरिया पसंगतो वणिज्जंति २५ । सोहम्मीसाणकप्पेसु जे कप्पविमाणा ते कप्पवड्डेसया ते वणिज्जता, तेसु य देवीओ जा जेण तवोविसेसेण उववण्णा ता वणिज्जता, ताओ य कप्पवड्डेसियां भणिया २६ । संजमभाव-विगसितो पुप्फितो, संजमभावविचुतोऽवपुप्फितो, अगारभावं परिट्ठवेत्ता पव्वज्जाभावेण विगसितो पच्छा सीयइ जो, तस्स इहभवे परभवे य विलंबणा दंसिज्जइ जत्थ ता पुप्फिया २७ । एसेवड्ठ्यो सविसेसो पुप्फचूलाए दंसिज्जति २८ । अंधगवण्हिणो जे कुले ते अंधगसइलोवातो वण्हिणो भणिया, तेसिं चरियं गती सिज्झणा य
- 15 जत्थ भणिता ता वण्हिदसातो । दस चि-अवत्था अज्झयणा वा २९ ॥

८३. एवमाइयाइं चउरासीतीपइण्णगसहस्साइं भंगवतो अरहओ उंसहस्स आइतित्थय-रस्स, तहा संखेज्जाणि पइण्णगसहस्साणि मज्झिमगाणं जिणवराणं, चोइस पइण्णगसह-स्साणि भगवओ वद्धमाणसामिस्स । अहवा जस्स जत्तिया सिस्सा उप्पत्तियाए वेणतियाए कम्मयाए पारिणामियाए चउव्विहाए बुद्धीए उववेया तस्स तत्तियाइं पइण्णगसहस्साइं, पत्तेय-

20 बुद्धा वि तत्तिया चेव । से तं कालियं । से तं आवस्सयवइरित्तं । से तं अणंगपविट्ठं ।

८३. भगवओ उसमस्स चउरासीतिसमणसाहस्सीतो होत्था, पइण्णगज्झयणा वि सव्वे कालिय-उक्कालिया चतुरासीतिसहस्सा । कहं ? जतो ते चतुरासीतिं समणसहस्सा अरहंतमग्गउवदिट्ठे जं सुतमणुसरत्ति किंचि णिज्झहंते ते सव्वे पइण्णगा, अहवा सुतमणुसरतो अप्पणो वयणकोसल्लेण जं धम्मदेसणादिसु भासंते तं सव्वं पइण्णगं, जम्हा अणंतगमपज्जयं सुत्तं दिट्ठं । तं च वयणं नियमा अणंतरगमाणुपाती भवति तम्हा तं [जे० २१६ प्र०]

25 पइण्णगं । एवं चतुरासीती पइण्णगसहस्सा भवंतीत्यर्थः । एतेण विधिणा मज्झिमत्तित्थगराणं संखेज्जा पइण्णगस-हस्सा । समणस्स वि भगवतो जम्हा चोइस समणसाहस्सीतो उक्कोसिया समणसंपदा तम्हा चोइस पइण्णगज्झय-

१ 'याति सं० ॥ २ भगवओ अरहओ सिरिउसहसामिस्स, मज्झिमगाणं जिणाणं संखेज्जाणि पइण्णगसह-स्साणि, चोइस' सं० ३० । भगवओ अरहओ उसहस्स समणाणं, मज्झिमगाणं इत्यादि शु० । भगवओ उसहरिसि- (सिरि'स्स समणस्स, मज्झिमगाणं इत्यादि सं० ८० । त्रयाणामप्येषां पाठभेदानां मज्झिमगाणं इत्याद्युत्तरांशेन समानत्वेऽपि नैकत्रोऽपि पाठो घृत्तिकृतोः सम्मतः । श्रुतिकृद्ग्रां तु मूले आहत एव पाठो गृहीतोऽस्ति । चूर्णिकृता पुनः सं० ३० पाठानुसारेण व्याख्यातमस्तीति सम्भाव्यते ॥ ३ सिरिउसहसामिस्स आइ' सं० । अत्र चूर्णिकृता उसहस्स इति, हरिभद्रसूरिणा सिरिउ-सहस्स इति मलपगिरिणा च सिरिउसहसामिस्स इति पाठोऽङ्गीकृतोऽस्ति ॥ ४ सीसा सं० सं० चूर्णिं विना ॥

णसहस्ता भवन्ति । अह्वा 'जत्तिया सिस्सा' इत्यादि सुत्तं । इह सुत्ते अपरिमाणा पङ्णगा पङ्णगसामिअपरिमाण-
त्तणतो, किंच इह सुत्तं पत्तेयबुद्धप्पणीतं पङ्णगं भाणितव्वं । कम्हा ? जम्हा पङ्णगपरिमाणेण चैव पत्तेयबुद्धपरि-
माणं कीरइ त्ति भाणितं 'पत्तेयबुद्धा वेत्तिया चैव' त्ति । चोदक आह-णण पत्तेयबुद्धा सिस्सभावो य विरुज्जते ?
आचार्याह-तित्थगरप्पणीयसासणपडिवन्नत्तणतो तस्सीसा भवन्तीत्यर्थः ॥

भाणितं कालितमुत्तं अंगवाहिरं च । इदाणि अंगपविट्टं—

८४. से किं तं अंगपविट्टं ? अंगपविट्टं दुवालसविहं पण्णत्तं, तं जहा-आयारो १ सूय-
गडो २ ठाणं ३ समवाओ ४ वियाहपण्णत्ती ५ णायाधम्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अंतगड-
दसाओ ८ अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ पण्हावागरणाइं १० विवागसुत्तं ११ दिट्ठिवाओ १२ ।

८४. से किं तं अंगपविट्टं इत्यादि सूत्रम् ॥

८५. से किं तं आयारे ? आयारे णं समणाणं णिरगंथाणं आयार-गोयर-विणय-वेणइय-
सिक्खा-भासा-अभासा-चरण-करण-जाया-माया-वित्तीओ आवविज्जन्ति । से समासओ पंच-
विहे पण्णत्ते, तं जहा-णाणायारे १ दंसणायारे २ चरित्तायारे ३ तवायारे ४ वीरियायारे ५ ।
आयारे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेदा, संखेज्जा सिलोगा,
संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्ठयाए पढमे अंगे, दो
सुयक्खंधा, पणुवीसं अज्झयणा, पंचासीती उद्देसणकाला, पंचासीती समुद्देसणकाला, अट्ठा-
रस पयसहस्साइं पदरगेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा,
अणंता थावरा । सासत-कड-णिवद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आवविज्जन्ति पण्ण-
विज्जन्ति पखुविज्जन्ति दंसिज्जन्ति णिदंसिज्जन्ति उवदंसिज्जन्ति । से णवंआया, एवं नाया,
एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपखुर्वणा आवविज्जइ । से तं आयारे १ ।

८६. [से किं तं आयारे इत्यादि सुत्तं] । आवरणं आयारो । गोमरो-निरुत्तान्तवविमाणं । विणयो-
णाणातियो तिविहो वाचणविधानो वा । वेणइया-सोसा, वेणि जहा भासरेवमिस्सता । भासा-गया भगवामोया
य । अभासा-मोसा सवामोसा य । चरणं-"वतमसिति०" गाता [] । कणं-"दिग्ग ज्ञा

१ इह तित्थे अपरिमाणा इति पाठो मलयनिगिरिमुज्जयणमुत्तमो ॥ २ सूयगड २० ॥ ३ वियाह २० ॥ ४ ठाणं २० ॥ ५ चूर्णा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, इह पाठो कसमिअ उवाचपण्णत्ती ॥
६-७ सीहं २० ॥ ८ रसति २० । रस्ताणि २० ॥ ९ इह पाठो पण्हावा इति पाठो न सुविदि ॥ १० विवागसुत्तं २० ॥ ११ दिट्ठिवाओ २० ॥
विन्दु धीदरिभद्रविरिणा धीमलयमिरिणा च एव पाठो सुविदि ॥ १२ अणुत्तरोववाइयदसाओ २० ॥ १३ उवासगदसाओ २० ॥ १४ अंतगडदसाओ २० ॥
समवाओ २० ॥ १५ वियाहपण्णत्ती २० ॥ १६ णायाधम्मकहाओ २० ॥ १७ दंसणायारे २० ॥ १८ चरित्तायारे २० ॥ १९ तवायारे २० ॥ २० वीरियायारे २० ॥
जहा-आयारो २० ॥ २१ अंगपविट्टं २० ॥ २२ अंगपविट्टं २० ॥ २३ अंगपविट्टं २० ॥ २४ अंगपविट्टं २० ॥ २५ अंगपविट्टं २० ॥ २६ अंगपविट्टं २० ॥ २७ अंगपविट्टं २० ॥ २८ अंगपविट्टं २० ॥ २९ अंगपविट्टं २० ॥ ३० अंगपविट्टं २० ॥ ३१ अंगपविट्टं २० ॥ ३२ अंगपविट्टं २० ॥ ३३ अंगपविट्टं २० ॥ ३४ अंगपविट्टं २० ॥ ३५ अंगपविट्टं २० ॥ ३६ अंगपविट्टं २० ॥ ३७ अंगपविट्टं २० ॥ ३८ अंगपविट्टं २० ॥ ३९ अंगपविट्टं २० ॥ ४० अंगपविट्टं २० ॥ ४१ अंगपविट्टं २० ॥ ४२ अंगपविट्टं २० ॥ ४३ अंगपविट्टं २० ॥ ४४ अंगपविट्टं २० ॥ ४५ अंगपविट्टं २० ॥ ४६ अंगपविट्टं २० ॥ ४७ अंगपविट्टं २० ॥ ४८ अंगपविट्टं २० ॥ ४९ अंगपविट्टं २० ॥ ५० अंगपविट्टं २० ॥ ५१ अंगपविट्टं २० ॥ ५२ अंगपविट्टं २० ॥ ५३ अंगपविट्टं २० ॥ ५४ अंगपविट्टं २० ॥ ५५ अंगपविट्टं २० ॥ ५६ अंगपविट्टं २० ॥ ५७ अंगपविट्टं २० ॥ ५८ अंगपविट्टं २० ॥ ५९ अंगपविट्टं २० ॥ ६० अंगपविट्टं २० ॥ ६१ अंगपविट्टं २० ॥ ६२ अंगपविट्टं २० ॥ ६३ अंगपविट्टं २० ॥ ६४ अंगपविट्टं २० ॥ ६५ अंगपविट्टं २० ॥ ६६ अंगपविट्टं २० ॥ ६७ अंगपविट्टं २० ॥ ६८ अंगपविट्टं २० ॥ ६९ अंगपविट्टं २० ॥ ७० अंगपविट्टं २० ॥ ७१ अंगपविट्टं २० ॥ ७२ अंगपविट्टं २० ॥ ७३ अंगपविट्टं २० ॥ ७४ अंगपविट्टं २० ॥ ७५ अंगपविट्टं २० ॥ ७६ अंगपविट्टं २० ॥ ७७ अंगपविट्टं २० ॥ ७८ अंगपविट्टं २० ॥ ७९ अंगपविट्टं २० ॥ ८० अंगपविट्टं २० ॥ ८१ अंगपविट्टं २० ॥ ८२ अंगपविट्टं २० ॥ ८३ अंगपविट्टं २० ॥ ८४ अंगपविट्टं २० ॥ ८५ अंगपविट्टं २० ॥ ८६ अंगपविट्टं २० ॥ ८७ अंगपविट्टं २० ॥ ८८ अंगपविट्टं २० ॥ ८९ अंगपविट्टं २० ॥ ९० अंगपविट्टं २० ॥ ९१ अंगपविट्टं २० ॥ ९२ अंगपविट्टं २० ॥ ९३ अंगपविट्टं २० ॥ ९४ अंगपविट्टं २० ॥ ९५ अंगपविट्टं २० ॥ ९६ अंगपविट्टं २० ॥ ९७ अंगपविट्टं २० ॥ ९८ अंगपविट्टं २० ॥ ९९ अंगपविट्टं २० ॥ १०० अंगपविट्टं २० ॥

- विसोही०” गाहा [व्यव. भा. उ. १ गा. २८९]। जाय चि-संजमजत्ता, तस्स साहणत्थं था
वेत्तव्वो । वर्तनं वृत्ती । एतं सव्वं आयारे ‘आवविज्जइ’ चि आख्यायते । मुत्तमत्थस्स य
अणंता ण भवति, आदि-अंतोवलंभत्तणतो । अहवा ओसप्पिणि-उरुसप्पिणिकालं वा पडुच्च
सव्वद्धं च पडुच्च अणंता । उवक्कमादि णामादिणिक्खेवकरणं च अणियोगद्वारा, ते आया
5 गवयणगोयरत्तणतो । वेदो-छंदजाती । ‘पडिवत्तीओ’ चि दव्वादिपदत्थम्भुवगमो पा
पडिवत्तीओ, ते समासतो मुत्तपडिवद्धा संखेज्जा । तिथिहा जेण निक्खेवमादिनिज्जुत्ती तेण
पिंढेसणा सेज्जा इरिया भासज्जाया वत्थेसणा पातेसणा [जे० २१६ द्वि०] ओग्गहपडिमा
विमोत्ती, एते एवं णिसीहवज्जा पणुवीसं अज्झयणा । पंचासीती उदेसणकाला । कहं ? उ
धस्स अज्झयणस्स उदेसगस्स, एते चउरो वि एक्को उदेसणकालो । एवं सत्थपरिणाए
10 विजयस्स छ, सीतोसणिज्जस्स चतुरो, समत्तस्स चतुरो, लोगसारस्स छ, धुयस्स पंच, म
हाततणस्स अट्ठ, उवधाणमुत्तस्स चतुरो, पिंढेसणाए एकारस्स, सेज्जाए तिणिण, इरियाए
वत्थेसणाए दो, पातेसणाए दो, उग्गहपडिमाए दो, सत्तिकयाणं सत्त, भावणाए एक्को, वि
पंचासीति । चौदक्क आह—जदि दो सुत्तखंधा पणुवीसं अज्झयणा य अट्ठारस्स पदसहस्सा प
“णववंभचेरमइओ अट्ठारस्सपदसहस्सितो वेदो ।” [आचा० नि० गा० ११] चि एतं विरुज्जति
15 एत्थ वि भणितं ‘सपंचचूलो अट्ठारस्सपदसहस्सितो वेदो’ चि, इह मुत्तालावयपदेहि सहि
व्येत्यर्थः । अहवा दो सुत्तखंधा पणुवीसं अज्झयणा य, एतं आयाग्गसहितस्स आयास्स
पदसहस्सा पुण पढममुत्तखंधस्स णववंभचेरमइयस्स पमाणं । विचित्तत्थवद्धा य मुत्ता,
भाणितव्वो । अक्खररयणाए संखेज्जा अक्खरा । अभिधाणाभिधेयवसतो गमा भवंति
विधिणा—मुत्तं मे आउसं तेणं भगवता, तं मुत्तं मे आउसं, तहिं मुत्तं मे आ०, आ-मुत्तं मे अ
20 तदा मुत्तं मदा आ०, तहिं मुत्तं मदा आ०, एवमादिगमेहिं भणमाणं अणंतगमं । अक्ख
य अणंतं । परित्ता तसा, अणंता ण भवंति । अणंता थावरा वणप्फइसहिता । सासत्त चि
चि-कित्तिमा, पयोगतो वीससापरिणामतो [जे० २१७ प्र०] वा जहा अब्भा अब्भरुक्खा
मुत्तेण निवद्धा । निज्जुत्ति-संगहणि-हेतूदाहरणादिएहिं य णिकाइया । किंच एते अण्णे य
प्पणीया भावा ‘आवविज्जंति’ जाव उवदंसिज्जंति’ एतेसिं पदाणं पूर्ववद् व्याख्या । एवं
25 पुरिसे ‘एवं’ ति जहा आयारे निवद्धा परुविता य तहा सव्वदव्व-भावणं गाता भवति ।
जाणमाणो विण्णाता भवति । अण्णपावादुगेहितो वा विसिट्ठतरे विसिट्ठयरं वा जाणमाणो
निगमणमुत्तं कंठं । से चं आयारे १ ॥

८६. से किं तं सूयगडे ? सूयगडे णं लोए सइज्जइ, अलोए सइ
सइज्जइ, जीवा सइज्जंति, अजीवा सइज्जंति, जीवा-ऽजीवा सइज्जंति,
30 परसमए सइज्जइ, ससमय-परसमए सइज्जइ । सूयगडे णं आसीतस्स वि
चउरासीईए अकिरियेवादीणं, सत्तट्ठीए अण्णाणियवादीणं, वत्तीसाए वेण

तेसंढाणं पावादुयसयाणं वृहं किञ्चा ससमए ठविज्जइ । सूयगडे णं परिता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेदा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगद्वयाए विइए अंगे, दो सुयक्खंधा, तेवीसं अज्झयणा, तेत्तीसं उदेसणकाला, तेत्तीसं समुदेसणकाला, छत्तीसं पदसहस्साणि पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परिता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिवद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परुविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उव-दंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरुवणा आघविज्जइ । से तं सूयगडे २ ।

८६. से किं तं सूयगडेत्यादि सुत्तं । 'सूइज्जइ' चि जथा णट्ठा सूइ तंतुणा सूइज्जइ, उवत्तम्भतेत्यर्थः । अद्वा जद्वा सूयी पढं सूतेइ तद्वा सूयगडे जीवादिपदत्था सूइज्जंति । 'वृहं' किञ्च चि प्रतिव्यूहं, तेण प्रतिव्यूहेन ते परप्पवादी णिप्पट्ट-पसिणे कातुं ससमयस्स सव्भावे ठाविज्जति । उदेसयगरिमाणं नातुं उदेसणकाला जाणेज्जा । सेसं कटं । से तं सूयगडे २ ॥

८७. से किं तं ठाणे ? ठाणे णं जीवा ठविज्जंति, अजीवा ठविज्जंति, जीवा-ऽजीवा ठविज्जंति, → लोए ठविज्जइ, अलोए ठविज्जइ, लोया-ऽलोए ठविज्जइ, ← ससमए ठविज्जइ, परसमए ठविज्जइ, ससमय-परसमए ठविज्जइ । ठाणे णं टंका कूडा सेला सिहरिणो पव्वारा कुंडाइं गुहाओ आगरा दद्वा णदीओ आयविज्जंति । ठाणे णं एंगाइयाए एगुत्तरियाए बुद्धीए दसट्ठाणगविवट्ठियाणं भावाणं परुवणया आयविज्जंति । ठाणे णं परिता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेदा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जु-त्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगद्वयाए तइए अंगे, एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा, एक्खीसं उदेसणकाला, एक्खीसं समुदेसणकाला, वाचरिं पदसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परिता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड-णिवद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति

१. तेसंढाणं णं० सं० जे० दे० तं० । हाणि० इति० समवायाइयविट्ठु च तेसंढाणं इति० तं० इति० २. पावादिउयसयाणं जे० दे० मो० सु० । अमलपगिरिभिरसमेतं पारं आलोचयित्वा । ३. सिद्धिं सु० । विहेयं १० । ४. उदेसयगरिमाणं दे० सं० ॥ ५. → ← एतद्विषयस्यवर्ती पाठः जे० मो० सु० । अत्रिणं ससमय-परसमय-ए-विज्जइ इति० एतद्विषयस्यवर्ती । ६. ठाणे णं इति० तं० सं० १०० सु० सारित्वा ॥ ७. एंगाइयाणं एगुत्तरियाणं दसट्ठाणं दसट्ठाणं दे० सं० १०० सु० । ८. विज्जंति दे० सं० १०० सु० । ९. उदेसयगरिमाणं दे० सं० १०० सु० । १०. जे० दे० विनाऽन्यत्र सिलोगा, संखेज्जाओ संगहणीओ । से णं तं० सं० १०० सु० । ११. उदेसयगरिमाणं दे० सं० १०० सु० । १२. वाचरिं पदसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परिता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड-णिवद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति पण्णविज्जंति इति० सारित्वा ॥

परुविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया,
विण्णाया, एवं चरण-करणपरुवणा आघविज्जइ । से तं ठाणे ३ ।

८७. से किं तं ठाणेत्यादि सुत्तं । 'ठाविज्जंति' ति स्वरूपतः स्थाप्यन्ते, प्रताप्यन्ते
टंकं । कूडं ति-जहा वेतडुहस्सोवरि णय सिद्धायतणाइया कूडा । हिमवतादिया सेव्या ।
5 वेतडुहो । जं कूडं उवरिं अंवरुज्जयं तं पव्वारं, जं वा पव्वयस्स उवरिभागे हत्थिकुंभागि
पव्वारं । गंगादिया कुंडा । तिमिसादिया गुहा । रूप-मुवण्ण-स्तणादिया आगरा । पोंडरीया
सिंधुमादियाओ णदीओ । सेसं कंठं । से तं ठाणे ३ ॥

८८. से किं तं समवाए ? समवाए णं जीवा समासिज्जंति, अजीवा
जीवा-ऽजीवा समासिज्जंति, लोए समासिज्जति, अलोए समासिज्जति
10 समासिज्जति, ससमए समासिज्जति, परसमए समासिज्जति, ससमय-प
ज्जति । समवाए णं एगाइयाणं एगुत्तरियाणं ठाणसयविवड्डियाणं भावाण
विज्जति । दुवाल्लसंगस्स य गणिपिटगस्स पल्लवग्गे समासिज्जति । स
वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगां, संखे
त्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ । से णं अ
15 अंगे, एगे सुयक्खंधे, एगे अज्झयणे, एगे उद्देसणकाले, एगे समुद्देसणका
पदसयसहस्से पदग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जव
अणंता थावरा, सासत-कड-णिवद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जं
परुविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जांत । से एवंआया,
विण्णाया, एवं चरण-करणपरुवणा आघविज्जंति । से तं समवाए ४ ।

20 ८८. से किं तं समवाए इत्यादि । समवाए निक्खेवो चतुर्विहो । दन्वे सचित्ता
समवातो इमं चेव अंगं । अहवा जत्थ वा एगत्थ ओदइयाइ वहु भावा सणिवादियसंजोगा
भावसमवाए वा इमं णिरुत्तं-जीवा 'समासिज्जंति' समं आसइज्जंति । समं ति-ण विसमं, ज
रिक्तं इत्यर्थः । आसइज्जंति-आश्रीयन्ते, बुद्ध्या ज्ञानेन गृह्यन्तेत्यर्थः । अहवा समास ति-
२१७ द्वि०]सव्वपदत्थाण समासतो विमरिसो ति । सेसं कंठं । उक्तः समवायः ४॥

१ 'वणया खं० सं० ल० शु० ॥ २ 'ज्जंति खं० सं० डे० ल० ॥ ३ द्रहा इत्यर्थः ॥ ४ 'त
५ पल्लवग्गे सं० । पल्लवग्गे इत्यर्थः—“तथा द्वादशाक्षस्य च गणिपिटकस्य 'पल्लवग्गे' ति पर्यवपरिमाणं
यथा 'परित्ता तसा' इत्यादि । पर्यवशब्दस्य च 'पल्लव' ति निर्देशः प्राकृतत्वात्, पर्यङ्कः पत्यङ्क इत्यादिवदि
पल्लवाः-अवयवास्तत्परिमाणम् ।” इति समवायाद्गसूत्रवृत्तिः ११३-२ पत्रे ॥ ६ 'वायस्स णं जे० डे०
विनाऽन्यत्र—सिलोगा, संखेज्जाओ संगहणीओ । से णं खं० सं० ल० शु० । सिलोगा, संखे
संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं मो० मु० ॥ ८ 'णया ल० ॥ ९ 'ज्जंति खं० सं० ॥

८९. से किं तं विर्याहे ? विर्याहे णं जीवा विर्याहिज्जन्ति, अजीवा विर्याहिज्जन्ति, जीवा-अजीवा विर्याहिज्जन्ति, लोए विर्याहिज्जति, अलोए विर्याहिज्जति, लोया-अलोए विर्याहिज्जति, ससमए विर्याहिज्जति, परसमए विर्याहिज्जति, ससमय-परसमए विर्याहिज्जति । विर्याहे णं परिता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेदा, संखेज्जा सिलोगां, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्ठयाए पंचमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, एगे सातिरेगे अज्झयणसते, दस उद्देसग-सहस्साइं, दस समुद्देसगसहस्साइं, छत्तीसं वागरणसहस्साइं, दो लक्ख्वा अट्ठासीतिं पयसह-स्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परिता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड-णिवद्ध-णिक्काइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जन्ति पण्णविज्जन्ति पस्स-विज्जन्ति दंसिज्जन्ति णिदंसिज्जन्ति उवदंसिज्जन्ति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरुवणा आघविज्जइ । से तं विर्याहे ५ ।

८९. से किं तं विद्याहेत्यादि । 'विद्याहे' नि व्याख्या, इह जीवाद्यो व्याख्यायन्ते । इह गतं चैव अज्ज-
यणसण्णं । गोतमादिण्हिं पुट्ठे अपुट्ठे वा जो ण्हो तव्वावरणं [च] । मेनं कटं । से तं विद्याहे ५ ॥

९०. से किं तं जायाधम्मकहाओ ? जायाधम्मकहासु जं जायाणं णगराईं उज्जाणाईं चेइयाईं वणसंडाईं समोसरणाईं रायाणो अम्मा-पियंगे धम्मकहाओ धम्मायरिया इहलोग-पर-
लोगिया रिद्धिविसेसा भोगपरिचागा पैच्चज्जाओ परियागा सुयपरिगहा तवोवहाणाईं संले-
हणाओ भत्तपच्चखाणाईं पाओवगमणाईं देवल्लोगगमणाईं मुकुल्लपचायाईओ पुणवोहिल्लाभा
अंतकिरियाओ य आधविज्जंति । दस धम्मकहाणं देग्गा । तस्य जं एगमेगाण धम्मकहाण
पंच पंच अक्खाइयासयाईं, एगमेगाण अक्खाइयाण पंच पंच उक्खाइयामयाईं, एगमेगाण
उक्खाइयाण पंच पंच अक्खाइओक्खाइयामयाईं, एगमेदं मुक्खावरेणं अक्खुआओ कहाण-
गकोडीओ भवंति त्ति मक्खायं । जायाधम्मकहाणं पणिना वायणा, संवेज्जा अणुयोगदाग,

संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोणा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ
 संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगद्वयाए छट्ठे अंगे, दो सुयत्तखंधा, एगूणवीसं णा
 ज्झयणा, एगूणवीसं उद्देसणकाला, एगूणवीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं प
 ग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परिता तसा, अणंता थाव
 5 सासत-कड-णिवद्ध-णिकाइया जिणपणत्ता भावा आघविज्जंति पणविज्जंति परूविज्जंति
 दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, ए
 चरण-करणपरूवणा आघविज्जंति । से तं णायाधम्मकहाओ ६ ।

१०. से किं तं णायाधम्मकहेत्यादि सुत्तं । एकूणवीसं णातज्झयणा, णाय चि-आहरणा, दिट्ठंति
 वा णज्जति जेहत्थो ते णाता, एते पढमसुतखंधे । अहिंसादिलक्खणस्स धम्मस्स कहा धम्मकहा, धम्मिया
 10 वा कहाओ धम्मकहाओ, अक्खाणग चि बुत्तं भवति, एते वितियसुतखंधे । पढम-वितियसुतखंधे भणित
 णाता-धम्मकहाणं णगरादिया भणंति । वितिये सुतखंधे दस धम्मकहाणं वग्गा । वग्गो चि-समूहो, तव्वि
 सणविसिद्धा दस अज्झयणा चेव ते दट्ठव्वा । एगूणवीसं णाता, दस य धम्मकहाओ । तत्थ णातेसु आदिमा
 णाता चेव, ण तेसु अक्खादियादिसंभवो । सेसा णव णाता, तेसु एक्केके णाते चत्तालीसं चत्तालीसं अक्ख
 इयाओ भवंति, तत्थ वि एक्केकाए अक्खाइयाए पंच पंच उक्खवाइयासताइं भवंति, तेसु वि एक्केकाए उक्ख
 15 इयाए पंच पंच अक्खाइओक्खवाइयसताइं भवंति, एवं एते णव कोडीओ । एताओ धम्मकहासु सोहेतव्व चि क
 एकोणवीसाए णाताणं दसण्ह य धम्मकहाणं विसेसो कज्जति-दस णातां दंस णव य धम्मकहातो दसहिं परो
 सुद्धा । एवं विसेसे कते सेसा णव णाता, ते णव चत्तालीसाए गुणिता जाता तिण्णि सता सट्ठा अक्खाइयाणं, ए
 अक्खाइयपंचसतेहिंतो सोधिता, तत्थ सेसं चत्तालं सतं, तं उक्खवाइयपंचसतेहिं गुणितं जाता उक्खवाइताणं सत्त
 सहस्सा, ते पंचहिं अक्खाइतोक्खवाइयसतेहिं गुणिता एवं जाता अद्धट्ठातो अक्खाइयकोडीतो । 'पदग्गेण'
 20 उवसग्गपदं णिवातपदं णामियपदं अक्खातपदं मिस्सपदं च, एते पदे अहिकिच्च पंचल[जे० २१८ प्र०]क
 छावत्तरि च सहस्सा पदग्गेणं भवंति, अहवा सुत्तालावयपदग्गेणं संखेज्जाइं पदसहस्साइं भवंति । अहवा छाहत्त
 हियसहस्सपंचलक्खा वि संखेज्जपदसहस्सेहिं ण विरुज्जंति । सेसं कंठं । से तं णाताधम्मकहाओ ६ ॥

११. से किं तं उवासगदसाओ ? उवासगदसासु णं समणोवासगाणं णगराइं उज्ज
 णाइं चेइयाइं वणसंडाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मा-पियंरो धम्मकहाओ धम्मायरि
 25 इहलोग-परलोइया रिद्धिविसेसा भोगपरिच्चार्यां परियागा सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं सीव
 व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासपडिवज्जणया पडिमाओ उवसग्गा संलेहणाओ

१ टे० मो० मु० विनाऽन्यत्र-सिलोगा, संखेज्जाओ संगहणीओ । से णं सं० सं० ल० शु० । सिलोगा, संखेज्जा
 निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं जे० ॥ २ वीसं अज्झयणा सं० जे० टे० ल० मो० शु० समवाया
 चूर्णिकृता मलयगिरिणा च गृहे स्वीकृत एव पाठो व्याख्यातोऽस्ति ॥ ३-४ एगूणतीसं ल० ॥ ५ संखेज्जा पयसहस्
 जे० मो० ॥ ६ पयसयसह समवाया ॥ ७ वणया सं० सं० ल० शु० ॥ ८ उज्जंति सं० सं० टे० शु० ल० ॥ ९ दस य ध
 जे० ॥ १० चेतियार्ति शु० ॥ ११ वणसंडाइं सं० सं० शु० नास्ति ॥ १२ पियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ जे० मो० शु०
 १३ इहलोइय-परलोइया इड्ढिवि जे० मो० मु० ॥ १४ या पच्चक्खाओ परि जे० टे० ल० शु० ॥

भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाईओ पुणवोहिलाभा अंत-
किरियाओ य आघविज्जंति । उवासगदसाओ णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुयोगदारा;
संखेज्जा वेदा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ,
संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगइयाए सत्तमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा,
दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पंदसहस्साइं पयग्गेणं । संखेज्जा
अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तरा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध-
णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति पल्लविज्जंति दंसिज्जंति णिदं-
सिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपल्लवणा
आघविज्जंति । से तं उवासगदसाओ ७ ।

९१. से किं तं उवासगदसाओ इत्यादि मुत्तं । उवासक चि-सावता । तेसिं अणुवचन-गुण-सीलव्वतोच- 11
देसणा दसमु अज्झयणेमु अवरुवात चि उवासगदसा भणिता । तानु मुत्तपदग्गं एकारम लक्ख्वा वाचग्गं च सह-
स्सा पदग्गेणं । मुत्तालावयपदेहिं संखेज्जाणि वा पदमहन्नाइं पदग्गेणं । सेग्गं कटं । से तं उवासगदसाओ ७ ॥

९२. से किं तं अंतगडदसाओ ? अंतगडदसाओ णं अंतगडाणं णगराइं उज्जाणाइं चेतियाइं
वणसंडाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मा-पियंरो धम्मकहाओ धम्मायरिया इहेल्लोग-परलोगिया
सिद्धिविसेसा भोगेपरिचागा पंथज्जाओ परियागा मुत्तपरिगहा तवोवहाणाइं मंलेहणाओ 11
भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं → देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाईओ, पुणवोहिलाभा ←
अंतकिरियाओ य आघविज्जंति । अंतगडदसानु णं पत्तिता वायणा, संखेज्जा अणुयोग-
दारा, संखेज्जा वेदा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगह-
णीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगइयाए अट्ठमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, अट्ठ

वग्गा, अट्ठ उद्देसणकाला, अट्ठ समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पदग्गेणं, संखेज्जा
अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परिता तसा. अणंता थावरा, सासन-कड-णिव
णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिंदं
ज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूव
5 आघविज्जंति । से चं अंतगडदसाओ ८ ।

१२. से किं तं अंतगडदसातो इत्यादि सुत्तं । अंतकडदस चि-कम्मणो संसारसस वा अंतो
जेहिं ते अंतकडा, ते य तित्थकरादी, दस चि-पहमवग्गे दस अज्झयण चि तेस्सवखतो अंतकडदस चि । अ
दस चि-अवत्था, तदंते जा अवत्था सा वणिज्जति चि अतो अंतकडदसा । सरीरा-ऽऽयुदसाण वा दसणं अंत
चि अंतकडदसा । णवरं 'अंतकडकिरियाओ' चि अस्य व्याख्या-अंतकडाणं किरिया अंतकडकिरिया, वहुणं
10 अंतकडकिरियाओ चि भणिता । किरिय चि-क्रिया, चर्या इत्यर्थः । अहवा किरिय चि-कर्मक्षपणक्रिया, स
सेलेसिअवत्थाए । अहवा किरिय चि-सहुमकिरियज्झाणं । अहवा घातिकम्मेसु अंतकडेसु किरिय चि-कम्म
सो य इरियावहितो चि भणितं होति । एतं च आघविज्जति । वग्गो चि-समूहो, सो य अंतकडाणं अज्झय
वा । सव्वे अज्झयणा जुगवं उद्दिंसंति । तासु सुत्तपदग्गं तेवीसं लक्खा चतुरो य सहस्सा पदग्गेणं । संखेज्ज
वा पदसहस्साणि सुत्तालावगपदग्गेणं । सेसं कटं । से चं अंतगडदसा ८ ॥

15 १३. से किं तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ? अणुत्तरोववाइयदसासु णं अणुत्तरोववाइय
णगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणसंडाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मा-पियरो धम्मकहाओ ध
यरिया इहलोगं-परलोगिया रिद्धिचिसेसा भोगपरिचागा पव्वज्जपरियागा सुतपरि
तवोवहाणाइं पडिमाओ उवसग्गा संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं अणु
ववाइयत्ते उववत्ती सुकुलपच्चायादीओ पुणवोहिलाभा अंतकिरियाओ य आघविज्जं
20 अणुत्तरोववाइयदसासु णं परिता वायणा, संखेज्जा अणुयोगदारा, संखेज्जा वेढा, संखे
सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ
से णं अंगइयाए णवमे अंगे, एंगे सुयक्खंधे, तिण्णि वग्गा, तिण्णि उद्देसणकाला, ति
समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अ
पज्जवा, परिता तसा, अणंता थावरा, सासन-कड-णिवद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता

१ 'वणया सं० ल० ॥ २ 'विज्जंति सं० सं० डे० ल० शु० ॥ ३ तत्ताक्षय इत्यर्थः ॥ ४ वणसंडाइं इति मो० ५
वर्तते ॥ ५ धम्मायरिया धम्मकहाओ मो० मु० ॥ ६ 'लोइय-परलोइया जे० मो० मु० ॥ ७ अणुत्तरोववत्ती
अणुत्तरोववाय चि सं० सं० ॥ ८ 'दसाणं सं० जे० मो० ॥ ९ वाहणा ल० ॥ १० संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ
नास्ति ॥ ११ संखेज्जाओ संगहणीओ जे० मो० नास्ति ॥ १२ संखेज्जाओ पडिवत्तीओ सं० सं० ल० शु० नास्ति ॥ १
सुयक्खंधे, दस अज्झयणा, तिण्णि वग्गा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्सा
पयग्गेणं प० इति समवायाङ्गे । अत्राभयदेवपादाः—“इह अध्ययनसमूहो वर्गः, वर्गे दशाध्ययनानि, वर्गश्च युगपदेवोद्दिश्यते इ
एवोद्देशनकाला भवन्ति, एवमेव च नन्दावभिधीयन्ते, इह वृ दृश्यन्ते दशेति, अत्राभिप्रायो न शायत इति ।” १२३-२ पत्रे ॥

आघविज्जंति पण्णविज्जंति परुविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरुवणा आघविज्जंइ । से तं अणुत्तरोच्चादयदसाओ ९ ।

९३. से किं तं अणुत्तरोच्चादयदसा इत्यादि मुत्तं । जत्थि जस्सुत्तरं सो अणुत्तरो, उववज्जणमुववातो उप्पत्तीत्यर्थः, अणुत्तरो उववातो जस्स सो अणुत्तरोच्चादयो, तेषिं बहुवचनातो [जे० २१८ द्वि०] अणुत्तरोच्चादयं च्ति, वग्गे वग्गे य दसऽज्जयणं च्ति अतो अणुत्तरोच्चादयदसा भणिता । संसारे सुभभावं पडुच्च अणुत्तरः, अहवा गतिचनुक्कं पडुच्च अणुत्तरः, अहवा देवगतीए चैव अणुत्तरः । अणुत्तरदेवेणु जेसिं उववातो तेषिं णगरादिया कदिज्जंति । इह वग्गो च्ति-समूहो, सो य अज्जयणाणं, वग्गे वग्गे दस अध्ययना इत्यर्थः । तेषिं पदग्गं छातालीसं लक्ख्वा अट्ट य सहस्सा, संखेज्जाणि वा पदसहस्साणि । मेसे कंठं । से तं अणुत्तरोच्चादयदसा ९ ॥

९४. से किं तं पण्हावागरणाइं ? पण्हावागरणेसु णं अट्ठुत्तरं पसिणसयं, अट्ठुत्तरं 10 अपसिणसयं, अट्ठुत्तरं पसिणा-अपसिणसयं, अण्णे वि विविधा दिव्वा विज्जा-तिसया नाग-सुवण्णेहि य सद्धि दिव्वा संवाया आघविज्जंति । पण्हावागरणाणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेदा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिक्कीओ । से णं अंगद्वयाए दसमे अंगे, एगे सुयक्खंवे, पणयालीमं अज्जयणा, पणयालीमं उद्वेसणकाला, पणयालीमं समुद्देसण- 15 काला, संखेज्जाइं पदसहस्साइं पदग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सामन-कड-णियद्व-जिकाइया जिगरणत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परुविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाय

भवति । अण्णे य विविधा विजातिसत्ता कट्टिज्जंति । किंच णामा सुवण्णा अण्णे य भवणत्ताणिणो ते विल्ल-मंता-
परिसिता आगता साहुणा सह संबंदिं-जल्पं करेति । पादंत्तरं वा "दिग्वा संभाणा संभगंति" तदन्मुत्ता भवति,
वरदाश्च गर्जितादि वा कुर्वति । दसममंगस्स पदग्गं वाणउत्ति लक्खन्ता सोल्लग य सहग्गा पदग्गेणं, मंलेज्जाणि वा
पदसहस्साणि । सेसं कंठं । से चं पण्हाचागरणाइं १० ॥

९५. से किं तं विवागसुतं ? विवागसुते णं सुकड-दुकडाणं कम्माणं फल-विवागा
आघविज्जंति । तत्थ णं दस दुहविवागा, दस सुहविवागा ।

से^३ किं तं दुहविवागा ? दुहविवागेषु णं दुहविवागाणं णगराइं उज्जाणाइं वणसंडाइं
चेइयाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मा-पियरो धम्मकहाओ धम्मायरिया ईहलोइय-परलोइया
"रिद्धिविसेसा निस्यगमणाइं दुहपरंपराओ संसारभवपवंचा दुकुलपचायाइंओ दुलहवोहियत्तं
१० आघविज्जंति । से^६ तं दुहविवागा ।

से किं तं सुहविवागा ? सुहविवागेषु णं सुहविवागाणं णगराइं उज्जाणाइं वणसंडाइं
चेइयाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मा-पियरो धम्मकहाओ धम्मायरिया ईहलोइअ-परलोइया
रिद्धिविसेसा भोगपरिग्गा पव्वज्जाओ परियागा सुत्तपरिग्गहा तवोवहाणाइं संलेहणाओ
भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुहपरंपराओ सुकुलपचायादीओ पुणवो-
१५ हिलाभा अंतकिरियाओ य आघविज्जंति ।

विवागसुते णं परिता वायणा, संखेज्जा अणुयोगदारा, संखेज्जा वेदा, संखेज्जा
सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ ।
से णं अंगड्याए एकारसमे अंगे, दो सुयक्खंधा, वीसं अज्झयणा, वीसं उद्देसणकाला, वीसं
समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पदसहस्साइं पदग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता
२० पज्जवा, परिता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिक्क-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघ-
विज्जंति पण्णविज्जंति परुविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया,
एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरुवणा आघविज्जंति । से चं विवागसुतं ११ ।

१०६. से किं तं विवागसुतं इत्यादि । विविधो पाकः विपचनं वा विपाकः, कर्मणां सुभमसुभो वा
१ विवागे आघविज्जइ जे० मो० सु० ॥ २ से किं तं दुहविवागा इति सं० शु० नास्ति । समवायाहे प्रश्नवाक्यं
वर्तते ॥ ३ धम्मायरिया धम्मकहाओ सं० जे० दे० ल० मो० सु० ॥ ४ इहलोग-परलोगिया सं० ॥ ५ इद्धिवि^३ मो०
सु० ॥ ६ 'गमणं सं० ॥ ७ 'भवपवंचा सं० ल० समवायाहे च ॥ ८ से चं दुहविवागा । से किं तं सुहविवागा ? इति
जे० मो० सु० नास्ति । समवायाहे तु वर्तते ॥ ९ धम्मायरिया धम्मकहाओ सं० दे० ॥ १० इहलोग-परलोगिया इद्धिविसेसा
जे० मो० सु० ॥ ११ 'ज्जा परि' सं० ॥ १२ विवागसुयस्स णं जे० मो० सु० । विवागेषु णं शु० ॥ १३ पदसहस्सं
समवायाहे ॥ १४ 'विज्जंति सं० सं० दे० ल० शु० ॥

जम्मि-सुत्ते विपाको कद्विज्जति तं विपाकसुत्तं । विपाकसुत्तस्स सुत्तपदगं एगा पदकोडी चुलसीति च लक्खा वत्तीसं च सहस्सा पदग्गेणं, संखेज्जाणि वा पदसहस्साइं पदग्गेणं [जे० २१९ प्र०] । सेसं कंठं । से तं विवागसुत्तं ११ ॥

९६. से किं तं दिद्विवाए ? दिद्विवाए णं सव्वभावपरुवणा आघविज्जंति । से समा-सओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा-परिकम्मे १ सुत्ताइं २ पुव्वगए ३ अणुओगे ४ चूलिया ५ ।

९६. से किं तं दिद्विवात्ते नि । दृष्टिर्दानम्, ददनं दादः, दृष्टीनां दादो दृष्टिवादः, तत्र वा दृष्टीनां पातः दृष्टिपातः, समेदभिष्णाओ सव्वणतदिद्विओ तत्थ वदंति पनंति च नि अतो दिद्विवातो । सो य पंचभेदो-परिकम्मादि ॥

९७. से किं तं परिकम्मे ? परिकम्मे मत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा-सिद्धसेणियापरिकम्मे १ मणुस्ससेणियापरिकम्मे २ पुट्टसेणियापरिकम्मे ३ ओगादसेणियापरिकम्मे ४ उवसंपज्जण-सेणियापरिकम्मे ५ विप्पंजहणसेणियापरिकम्मे ६ चुनअचुतसेणियापरिकम्मे ७ ।

९८. से किं तं सिद्धसेणियापरिकम्मे ? सिद्धसेणियापरिकम्मे चोइसविहे पण्णत्ते, तं जहा-माउगापयाइं १ एगद्वियपयाइं २ अट्टापयाइं ३ पादो ४ आमासपयाइं ५ केउभूयं ६ रासिवद्धं ७ एगगुणं ८ दुगुणं ९ तिगुणं १० केउभूयपडिग्गहो ११ संमारंपडिग्गहो १२ नंदावत्तं १३ सिद्धावत्तं १४ । से तं सिद्धसेणियापरिकम्मे १ ।

९९. से किं तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे ? मणुस्ससेणियापरिकम्मे चोइसविहे पण्णत्ते, तं जहा-माउगापयाइं १ एगद्वियपयाइं २ अट्टापयाइं ३ पादो ४ आमासपयाइं ५ केउभूयं ६ रासिवद्धं ७ एगगुणं ८ दुगुणं ९ तिगुणं १० केउभूयपडिग्गहो ११ संमारंपडिग्गहो १२ पंदावत्तं १३ मणुस्समावत्तं १४ । से तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे २ ।

१००. से किं तं पुट्टसेणियापरिकम्मे ? पुट्टसेणियापरिकम्मे एगगमावत्ते पण्णत्ते, तं जहा-पादो १ आमासपयाइं २ केउभूयं ३ रासिवद्धं ४ एगगुणं ५ दुगुणं ६ तिगुणं ७ केउभूयपडिग्गहो ८ संमारंपडिग्गहो ९ पंदावत्तं १० पट्टावत्तं ११ । से तं पुट्टसेणियापरिकम्मे ३ ।

पण्णत्ते, तं जहा-पाढो १ आमासपयाइं २ केउभूयं ३ गसिवद्धं ४ एगगुणं ५ दुगुणं ६ तिगुणं ७ केउभूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णंदावत्तं १० ओगादावत्तं ११ । से तं ओगादसेणियापरिकम्मे ४ ।

१०२. से किं तं उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे ? उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे एकारस-
५ सविहे पण्णत्ते, तं जहा-पाढो १ आमासपयाइं २ केउभूयं ३ गसिवद्धं ४ एगगुणं ५ दुगुणं ६ तिगुणं ७ केउभूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णंदावत्तं १० उवसंपज्जणावत्तं ११ । से तं उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे ५ ।

१०३. से किं तं विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ? विप्पजहणसेणियापरिकम्मे एगारस-
विहे पण्णत्ते, तं जहा-पाढो १ आमासपयाइं २ केउभूयं ३ गसिवद्धं ४ एगगुणं ५ दुगुणं ६
१० तिगुणं ७ केउभूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णंदावत्तं १० विप्पजहणावत्तं ११ । से तं विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ६ ।

१०४. से किं तं चुयमचुयसेणियापरिकम्मे ? चुयमचुयसेणियापरिकम्मे एगारसविहे
पण्णत्ते, तं जहा-पाढो १ आमासपयाइं २ केउभूयं ३ गसिवद्धं ४ एगगुणं ५ दुगुणं ६
तिगुणं ७ केउभूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णंदावत्तं १० चुयमचुयावत्तं ११ । से तं
१५ चुयमचुयसेणियापरिकम्मे ७ ।

१७-१०४. तत्थ परिकम्मे त्ति जोग्गकरणं, जहा गणितस्स सोल्लस परिकम्मा, तग्गहितमुत्तत्थो सेस-
गणितस्स जोग्गो भवति । एवं गहितपरिकम्ममुत्तत्थो सेसमुत्तादिदिट्ठिवातमुत्तस्स जोग्गो भवति । तं च परिक-
म्ममुत्तं सिद्धसेणियापरिकम्मादिमूलभेदयो सत्तविहं, उत्तरभेदतो तेसीतिविहं मातुयपदादी । तं च सब्बं समूह-
त्तरभेदं मुत्तत्थतो वोच्चिण्णं, जहागतसंप्रदातं वा वच्चं ॥ किंच—

१०५. [ईच्चेइयाइं सत्त परिकम्माइं, छ ससमइयाइं, सत्त आजीवियाइं,] छ चउक्कणइ-
याइं, सत्त तेरासियाइं । से तं परिकम्मे १ ।

१०६. एतेसि सत्तण्हं परिकम्माणं छ आदिमा परिकम्मा ससमइका, स्वसिद्धांतप्रज्ञापना एवेत्यर्थः ।
आजीविकापासंडत्था गोसालपयचित्ता, तेसि सिद्धंतमतेण चुता-उचुत्तसहिता सत्त परिकम्मा पण्णविज्जंति । इदानीं
परिकम्मे णतचित्ता—णेगमो दुविहो-संगहितो असंगहितो य, संगहितो संगहं पविट्ठो, असंगहितो ववहारं, तम्हा

१ केउभूयं ३ इच्चादि । से तं ओगादं सं० सं० ६० ॥ २ परिग्गहो जे० ॥ ३ पाढो १ इच्चादि । से तं उवं
सं० सं० ६० ॥ ४-५ विजहणं सं० सं० ६० ॥ ६ पाढो १ इच्चादि । से तं विजहणं सं० सं० ६० ॥
७-८ चुयमचुयं जे० ६० ॥ ९ पाढाइ । से तं चुयं सं० सं० ६० ॥ १० चुयमचुयं ६० ॥ चुयमचुयं जे० ॥
११ एतत् चतुरस्रोष्टकान्तर्वेति सूत्रं सूत्रप्रतिपु न वर्तते । चूर्णि-वृत्तिरुद्धिः पुनराहतं दृश्यत इति समवायाद्गच्छात् सूत्रासौऽयमत्रो-
क्तोऽस्ति ॥ १२ याइं नइयाइं । से तं सं० ॥

संगहो ववहारो रिउसुतो सदाइया य एक्को, एवं चतुरो णया । एतेहिं चतुहिं णएहिं छ ससमइकाइं परिकम्माइं चित्तिज्जंति त्ति अतो भणितं—‘छ चतुक्कणइयाइं’ ति । ते चेव आजीविका तेरासिया भणिता । कम्हा ? उच्यते—जम्हा ते सर्व जगं ज्यात्मकं इच्छंति, जहा—जीवो अजीवो जीवाजीवश्च, लोए अलोए लोयालोए, संते असंते संतासंते एवमादि । णयचिंताए वि ते तिविहं णयमिच्छंति, तं जहा—द्ववद्वितो पज्जवद्वितो उभयद्वितो, अतो [जे० २१९ द्वि०] भणियं—‘सत्त तेरासियाइं’ ति सत्त परिकम्माइं तेरासियपासंडत्था तिविधाए णयचिंताए चित्तयंतीत्यर्थः १ ॥

१०६. से किं तं सुत्ताइं ? सुत्ताइं वावीसं पणत्ताइं, तं जहा—उज्जुसुतं १ परिणयापरिणयं २ बहुभंगियं ३ विजयचरियं ४ अणंतरं ५ परंपरं ६ मासाणं ७ संजूहं ८ संभिण्णं ९ आयच्चायं १० सोवत्थिप्पण्णं ११ णंदावत्तं १२ बहुलं १३ पुट्ठापुट्ठं १४ वेयावत्तं १५ एवंभूयं १६ भूयावत्तं १७ वत्तमाणुप्पयं १८ समभिरुट्ठं १९ सव्वओमहं २० पण्णासं २१ दुप्परिगहं २२ । १०

१ सुत्ताइं वावीसाइं पणत्ताइं, तं जहा ख० सं० । सुत्ताइं अट्ठासीति भवतीति मङ्गवायारं, तं जहा ख० ॥

२ अजितविजयसत्तायं अजितविजयसत्तायं एतत्तेतोऽपि अजितविजयसत्तायं एतत्तेतोऽपि

इच्चैयाइं वावीसं सुत्ताइं छिण्णच्छेयणइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए
 वावीसं सुत्ताइं अच्छिण्णच्छेयणइयाइं आजीवियसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइं
 सुत्ताइं तिगणइयाइं तेरासियसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइं ३, इच्चैयाइं वावीसं सु
 ससमयसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइं ४, एवामेव सपुव्वावरेणं अट्टासीतिं सुत्ताइं २
 ५ से तं सुत्ताइं २ ।

१०६. 'सुत्ताइं' ति उज्जुसुत्ताइयाइं वावीसं सुत्ताइं । ताणि य सुत्ताइं सव्वदन्वाण स
 सव्वभंगविकप्पाण य दंसगाणि, सव्वस्स य पुव्वगतसुत्तस्स अत्थस्स य सूयग ति, अतो ते स
 जहाभिधानत्थाते । ते य इदानीं सुत्त-ऽत्थतो वोच्छिण्णा, जहागतसंप्रदायतो वा वच्चा । ते चेव
 अट्टासीतिं सुत्ता भवंति इमेण विधिणा-वावीसं सुत्ता छिण्णच्छेदणताभिप्पायतो । कहं छिण्ण
 १० उच्यते-जो णयो सुत्तं छिण्णं छेदेण इच्छति, जहा-"धम्मो मंगलमुक्कट्ठं०" ति सिलोगो [दस
 सिलोगो सुत्त-ऽत्थतो पत्तेयं छेदेण ठितो, णो वित्तियादिसिलोगे अवेक्खइं ति वुत्तं भवति । छिण्ण
 छिण्णच्छेदः, प्रत्येकं कल्पितपर्येत्यर्थः । एते एवं वावीसं ससमतसुत्तपरिवाडीए सुत्ता ठि
 अच्छिण्णच्छेदणताभिप्पायतो आजीवियसुत्तपरिवाडीए ठिता । अच्छिण्णच्छेदणतो जहा-एसेव
 अत्थतो वित्तियादिसिलोगे अवेक्खमाणो, वित्तियादिया य पढमं अच्छिण्णच्छेदणताभिप्पाययो
 १५ सुत्ता अक्खररयणविभागट्ठिता वि अत्थयो अण्णोणमवेक्खमाणा अच्छिण्णच्छेदणयट्ठितं ति
 वावीसं चेव सुत्ता, 'तेरासियाणं तिकणइयाइं' ति त्रिकनयाभिप्पायतो चित्तंतेत्यर्थः । तहा
 वावीसं चेव सुत्ता चउक्कणइया । एवं चतुरो [जे० २२० प्र०] वावीसातो अट्टासीतिं
 सुत्ताइं २ ॥

१०७. से किं तं पुव्वगते ? पुव्वगते चोदसविहे पण्णत्ते, तं ज
 २० अंगोणीयं २ वीरियं ३ अत्थिणत्थिप्पवातं ४ नाणप्पवातं ५ सच्चप्पवादं
 कम्मप्पवादं ८ पच्चक्खवाणं ९ विज्जणुप्पवादं १० अवंझं ११ पाणायुं १२
 लोगविंदुसारं १४ । उप्पायस्स णं पुव्वस्स दस वत्थू चत्तारि
 १ । अंगोणीयस्स णं पुव्वस्स चोदस वत्थू दुवालस चुँलवत्थू पण्णत्ता
 पुव्वस्स अट्ठ वत्थू अट्ठ चुँलवत्थू पण्णत्ता ३ । अत्थिणत्थिप्पवायस्स णं

१-३-५-७ इच्चैयाइं मो० सु० ॥ २-४-६-८ सुत्ताइं इति पदं सं० सं० एव वत्तते, नान्यत्र
 ९ भवंति इच्चमक्खायं ल० ॥ १० अंगोणीयं सं० ॥ ११ क्खणाण्णवादं सं० सं० विना ॥ १२ वि
 १३ पाणाउं जे० । पाणाउ दे० ल० मो० शु० ॥ १४ अस्मिन् सूत्रे उप्पायस्स णं पुव्वस्स, अ
 धीरियस्स णं पुव्वस्स इत्यादिकेषु चतुर्दशस्वपि पूर्वनामस्थानेषु उप्पायपुव्वस्स णं, अंगोणीयपुव्वस्स
 इत्यादिः पाठभेदो मो० सु० दृश्यते ॥ १५ चुँलवत्थू शु० । चुँलियावत्थू जे० दे० मो० सु० ॥ १६
 १७ चुँलवत्थू ल० शु० । चुँलियावत्थू जे० दे० मो० सु० ॥ १८ चुँलवं शु० । चुँलियावत्थू

वत्थू दस चुँल्लवत्थू पण्णत्ता ४ । णाणप्पवादस्स णं पुव्वस्स वारस वत्थू पण्णत्ता ५ । सच्च-
प्पवायस्स णं पुव्वस्स दोण्णि वत्थू पण्णत्ता ६ । आयप्पवायस्स णं पुव्वस्स सोलस वत्थू
पण्णत्ता ७ । कम्मप्पवायस्स णं पुव्वस्स तीसं वत्थू पण्णत्ता ८ । पच्चक्खाणस्स णं पुव्वस्स
वीसं वत्थू पण्णत्ता ९ । विज्जणुप्पवादस्स णं पुव्वस्स पणरस वत्थू पण्णत्ता १० । अवंग्गस्स
णं पुव्वस्स वारस वत्थू पण्णत्ता ११ । पाणायस्स णं पुव्वस्स तेरस वत्थू पण्णत्ता १२ ।
किरियाविसालस्स णं पुव्वस्स तीसं वत्थू पण्णत्ता १३ । लोगविंदुसारस्स णं पुव्वस्स पणु-
वीसं वत्थू पण्णत्ता १४ ।

दस १ चौदस २ अट्ठ ३ ऽद्वारसेव ४ वारस ५ दुवे ६ य वत्थूणि ।

सोलस ७ तीसा ८ वीसा ९, पण्णरस १० अणुपवायम्मि ॥ ७७ ॥

वारस एकारसमे ११, वारसमे तेरसेव वत्थूणि १२ ।

तीसा पुण तेरसमे १३, चौदसमे पण्णवीसा उ १४ ॥ ७८ ॥

चत्तारि १ दुवालस २ अट्ठ ३ चेव दस ४ चेव चुँल्लवत्थूणि ।

आइल्लण चउण्हं, सेसाणं चुँल्लया णत्थि ॥ ७९ ॥

से तं पुव्वगते ३ ॥

१०७. से किं तं पुव्वगतं ? ति, उच्यते—जम्हा निव्वज्जमे निव्वज्जजम्हाणे सत्तवगतं सत्तवगतं भागवतो ।

पुव्वं पुव्वगतमुत्तरं भासति तस्मा पुव्वं नि भाणिता. गणधरा पुन पुव्वगतं जम्हा भासतामसमेण गीति
द्वेति य । अण्णायसियमनेण पुण पुव्वगतमुत्तरं पुव्वं अण्णाय भासितं. सत्तवगेति ति पुव्वगतं तेर पुं गते
पञ्चा आयासाइ । एवमुच्यते चोदक आह—णण्ण पुव्वगतदिग्गहे, वारस १ वारस ५ वारस १० वारस १५ वारस २०
आयासो ०० गारा [आचारादनि. गा. ८] । आचार्याऽऽह—अण्णवत्तम. ति सत्तवगतं. तमे पुन अण्णवत्तमं पञ्च भणि १.
पुव्वं पुव्वगता वता इत्यर्थः । ते य उप्पायपुव्ववादिया सोदस पुव्वगता । तस्मै उप्पायपुव्वार्थं ११. तस्मा सत्तवगतं २०
पञ्चवाण य उप्पायभासमंगीवाते पण्णवणा वता. तस्मा पञ्चवणितां सत्ता पञ्चवणि १ । ति ति भासमंगीयं. पुव्व
वि सत्तवद्वयाण पञ्चवाण य सत्तवगीयविनेयाण य भासो—भासमंगीयं. वणि ११ ११. भासमंगीयं. तस्मा पञ्चवणितां
ल्लणउत्ति पदवत्तसत्ता २ । तत्तिथं धीरिप्पवाय, सत्त वि अजीयत्तं तीरत्तय सत्तवद्वयाण वि विने सत्तव ११ ११
पौगियप्पवादं. तस्मा वि सत्तवि पदवत्तसत्ता ३ । तत्तमे अण्णवत्तविप्पवादं. ४. तेने उप्पाय वणितां २० ११
णात्थि. तस्मा सितावासाणिपावतो तत्तेनात्ति सत्तवत्तमे उप्पायवि अण्णवत्तविप्पवादं. ५. ति पदवत्त ११
भाणतो नहि पदवत्तसत्ताणि ६ । ऐवमे णाणप्पवादं ति. तस्मा अण्णवत्तविप्पवादं सत्तवद्वयाण सत्तवद्वयाण
पञ्चा तस्मा णाणप्पवादं. तस्मा पञ्चवणितां पञ्चा पञ्चवणि ११. तस्मा सत्तवद्वयाण सत्तवद्वयाण सत्तवद्वयाण

१. पुव्वगतं २० ११. २. पुव्वगतं २० ११. ३. पुव्वगतं २० ११. ४. पुव्वगतं २० ११. ५. पुव्वगतं २० ११. ६. पुव्वगतं २० ११. ७. पुव्वगतं २० ११. ८. पुव्वगतं २० ११. ९. पुव्वगतं २० ११. १०. पुव्वगतं २० ११. ११. पुव्वगतं २० ११. १२. पुव्वगतं २० ११. १३. पुव्वगतं २० ११. १४. पुव्वगतं २० ११. १५. पुव्वगतं २० ११. १६. पुव्वगतं २० ११. १७. पुव्वगतं २० ११. १८. पुव्वगतं २० ११. १९. पुव्वगतं २० ११. २०. पुव्वगतं २० ११. २१. पुव्वगतं २० ११. २२. पुव्वगतं २० ११. २३. पुव्वगतं २० ११. २४. पुव्वगतं २० ११. २५. पुव्वगतं २० ११. २६. पुव्वगतं २० ११. २७. पुव्वगतं २० ११. २८. पुव्वगतं २० ११. २९. पुव्वगतं २० ११. ३०. पुव्वगतं २० ११. ३१. पुव्वगतं २० ११. ३२. पुव्वगतं २० ११. ३३. पुव्वगतं २० ११. ३४. पुव्वगतं २० ११. ३५. पुव्वगतं २० ११. ३६. पुव्वगतं २० ११. ३७. पुव्वगतं २० ११. ३८. पुव्वगतं २० ११. ३९. पुव्वगतं २० ११. ४०. पुव्वगतं २० ११. ४१. पुव्वगतं २० ११. ४२. पुव्वगतं २० ११. ४३. पुव्वगतं २० ११. ४४. पुव्वगतं २० ११. ४५. पुव्वगतं २० ११. ४६. पुव्वगतं २० ११. ४७. पुव्वगतं २० ११. ४८. पुव्वगतं २० ११. ४९. पुव्वगतं २० ११. ५०. पुव्वगतं २० ११. ५१. पुव्वगतं २० ११. ५२. पुव्वगतं २० ११. ५३. पुव्वगतं २० ११. ५४. पुव्वगतं २० ११. ५५. पुव्वगतं २० ११. ५६. पुव्वगतं २० ११. ५७. पुव्वगतं २० ११. ५८. पुव्वगतं २० ११. ५९. पुव्वगतं २० ११. ६०. पुव्वगतं २० ११. ६१. पुव्वगतं २० ११. ६२. पुव्वगतं २० ११. ६३. पुव्वगतं २० ११. ६४. पुव्वगतं २० ११. ६५. पुव्वगतं २० ११. ६६. पुव्वगतं २० ११. ६७. पुव्वगतं २० ११. ६८. पुव्वगतं २० ११. ६९. पुव्वगतं २० ११. ७०. पुव्वगतं २० ११. ७१. पुव्वगतं २० ११. ७२. पुव्वगतं २० ११. ७३. पुव्वगतं २० ११. ७४. पुव्वगतं २० ११. ७५. पुव्वगतं २० ११. ७६. पुव्वगतं २० ११. ७७. पुव्वगतं २० ११. ७८. पुव्वगतं २० ११. ७९. पुव्वगतं २० ११. ८०. पुव्वगतं २० ११. ८१. पुव्वगतं २० ११. ८२. पुव्वगतं २० ११. ८३. पुव्वगतं २० ११. ८४. पुव्वगतं २० ११. ८५. पुव्वगतं २० ११. ८६. पुव्वगतं २० ११. ८७. पुव्वगतं २० ११. ८८. पुव्वगतं २० ११. ८९. पुव्वगतं २० ११. ९०. पुव्वगतं २० ११. ९१. पुव्वगतं २० ११. ९२. पुव्वगतं २० ११. ९३. पुव्वगतं २० ११. ९४. पुव्वगतं २० ११. ९५. पुव्वगतं २० ११. ९६. पुव्वगतं २० ११. ९७. पुव्वगतं २० ११. ९८. पुव्वगतं २० ११. ९९. पुव्वगतं २० ११. १००. पुव्वगतं २० ११.

वयणं वा, तं सच्चं जत्थ सभेदं सपडिवक्खं च वणिज्जति तं सवप्पवादं, तस्म पदपरिमाणं एगा पदकोडी छप्प-
 दाधिया ६ । सत्तमं आयप्पवातं, आय त्ति-आत्मा, [जे० २२० वि०] सो णेमहा जत्थ णयदरिसणोहिं वणि-
 ज्जति तं आयप्पवादं, तस्स वि पदपरिमाणं छव्वीसं पदकोडीओ ७ । अट्ठमं कम्मप्पवादं, णाणावरणाइयं अट्ठ-
 विधं कम्मं पगति-ट्ठिति-अणुभाग-प्पदेसादिएहिं भेदेहिं अणोहि य उत्तरुत्तरभेदेहिं जत्थ वणिज्जति तं कम्मप्प-
 ५ वादं, तस्स वि पदपरिमाणं एगा पदकोडी असीतिं च पदसहस्साणि भवंति ८ । णवमं पचक्खवाणं, तम्मि
 सव्वपचक्खवाणसरूवं वणिज्जति त्ति अतो पचक्खवाणप्पवादं, तस्स य पदपरिमाणं चतुरासीति पदसतसहस्साणि
 भवंति ९ । दसमं विज्जणुप्पवातं, तत्थ य अणेगे विज्जातिसया वणिज्जा, तस्स पदपरिमाणं एगा पदकोडी
 दस य पदसतसहस्साणि १० । एगादसमं अवंच्छं ति, वंच्छं णाम-णिप्फलं, ण वंच्छमवंच्छं, सफलेत्यर्थः, सव्वे
 णाण-तव-संजमजोगा सफला वणिज्जति, अप्पसत्था य पमादादिया सव्वे अमुमफला वणिज्जा, अतो अवंच्छं,
 १० तस्स वि पदपरिमाणं छव्वीसं पदकोडीओ ११ । बारसमं पाणायुं, तत्थ आयुं-प्राणविधाणं सव्वं सभेदं अणो य
 प्राणा वणिज्जा, तस्स पदपरिमाणं एगा पदकोडी छप्पणं च पदसतसहस्सा १२ । तेरसमं किरियाविस्सालं, तत्थ
 कायकिरियादियाओ विस्साल त्ति-सभेदा, संजमकिरियाओ य छंदकिरियविहाणा य, तस्स वि पदपरिमाणं णव
 कोडीयो १३ । चोदसमं लोगविंदुसारं, तं च इमम्मि लोए सुतलोए वा विंदुमिव अक्खरस्स [सारं-] सव्वुत्तमं
 सव्वक्खरसणिवातपढितत्तणतो लोगविंदुसारं, तस्स पदपरिमाणं अट्ठतेरस पदकोडीओ १४ । ३ ॥

१५ इदार्णि अणिओगो त्ति—

१०८. से किं तं अणुओगे ? अणुओगे दुविहे पणत्ते, तं जहा-मूलपढमाणुओगे
 य गंडियाणुओगे य ।

१०८. अनुयोग इत्येतद् अनुरूपो योगः अनुयोग इति । एवं सर्व एव सूत्रार्थो वाच्यः । इह जन्म-भव-
 पर्याय-शिष्यादियोगविवक्षातोऽनुयोगो वाच्यः । स च द्विविधः—मूलपढमाणुयोगो गंडिकाविशिष्टश्च ॥ तत्थ—

२० १०९. से किं तं मूलपढमाणुओगे ? मूलपढमाणुओगे णं अरहंताणं भगवंताणं पुव्व-
 भवा देवलोगगमणाइं आउं चवणाइं जम्मणाणि य अभिसेया रायवरसिरीओ पव्वज्जाओ,
 तवा य उग्गा, केवलनाणुप्पयाओ तित्थपवत्तणाणि य सीसा गणा गणधरा य अज्जा य
 पवत्तिणीओ य, संघस्स चउव्विहस्स जं च परिमाणं, जिण-मणपज्जव-ओहिणाणि-समतसुय-
 णाणिणो य वादी य अणुत्तरगती य उत्तरवेउव्विणो य मुणिणो जत्तिया, जत्तिया सिद्धा,
 २५ सिद्धिपहो जह य देसिओ, जच्चिरं च कालं पादोवगओ, जो जहिं जत्तियाइं भत्ताइं छेयइत्ता
 अंतगडो मुणिवरुत्तमो तमरंओघविप्पमुको मुक्खसुहमणुत्तरं च पत्तो, एंते अन्ने य एवमादी
 भावा मूलपढमाणुओगे कहिया । से तं मूलपढमाणुओगे ।

१ छत्तीसं जे० ॥ २ य वंच्छकिरियं जे० विना ॥ ३ देवगमं टे० ल० मु० मो० मु० ॥ ४ आयं सं० ॥ ५ उत्तर-
 वेउव्विणा य मुणिणो इति सं० सम० नास्ति ॥ ६ छेइत्ता जे० टे० ल० मो० मु० ॥ ७ रयुघं सं० ॥ ८ सुद्धं च
 अणुत्तरं पत्तो सं० ल० ॥ ९ पथमन्ने जे० मु० ॥

१०९. 'मूलपदमाणुभोगो' चि, इह मूलभावस्तु-तीर्थकरः, तस्य प्रथमं-पूर्वमवादि, अद्वत्ता [जे० २२१ प्र०] मूल एव प्रथमः मूलपदमाणुभोगो । एतत् तित्थगरस्त अतीतभवभावा वदमानमवे य जन्मादिया भावा कडिज्जंति । अद्वत्ता मूलस्त जे पदमा भावा ते मूलपदमाणुभोगो भण्णति । एतत् तित्थकरस्त जे भावा प्रवृत्तास्ते परियाय-सुत-सिस्सादया भाणितत्त्वा ॥

११०. से किं तं गंडियाणुभोगे? गंडियाणुभोगे णं कुल्लगरगंडियाओ तित्थगरगंडियाओ चक्कवट्टिगंडियाओ दसारगंडियाओ वल्लदेवगंडियाओ वामुदेवगंडियाओ गणधरगंडियाओ भद्वाहुगंडियाओ तवोक्कम्मगंडियाओ हरिवंसगंडियाओ ओसप्पिणिगंडियाओ उस्सप्पिणि-गंडियाओ चित्तंरगंडियाओ अमर-गण-तिग्गिय-निरयगइगमणविधिहपरियट्टणेसु एवमाइयाओ गंडियाओ आधविज्जंति । से तं गंडियाणुभोगे । से तं अणुभोगे ४ ।

११०. गंडियाणुभोगो नि इक्कुमादिपर्वगंडिकावत् एकाधिकारत्तणतो गंडियाणुभोगो भणितो । ता य कुल्लकरादियाओ, विमल्लकादणादिकुल्लकराणं "पुच्छमव जम्म जाम प्यमाज" नादा [अ. वि. ग. १९९] एवमादि जं किंचि कुल्लकरस्त यच्चयं तं मव्वं कुल्लकरगंडियाण भणितं । एवं निग्गयकगंडियाणु चि । 'चित्तंर-गंडिय' नि चित्रा इति-अनेकार्था, अंतरे इति-उत्तम-अजियंतरे ता दिट्ठा, गंडिका इति-वंडे, अतो चित्तंरगंडिका भणित्ता । नामि पेस्वणे पुच्छायरिण्णि इमा विधी दिट्ठा—

आदिअजसादीणं उत्तमस्स पयोपदे णग्गतीणं । सग्गमुत्तान सुद्धो उत्तमो संवे परिक्खेति ॥१॥

चोदस लवग्गा सिद्धा णिवर्णेक्को य होति मव्वट्टे । पदेवेवद्वाने दुग्गिमज्जा होदउमंसेत्ता ॥२॥

पुणरवि चोदस लवग्गा सिद्धा निवर्ताण दोणि मव्वट्टे । दुग्गिज्जाणे वि अमंका दुग्गिमज्जा होति पावत्ता ॥३॥

जाव य लवग्गा चोदस सिद्धा पण्णाय होति मव्वट्टे । पण्णायट्ठाने वि न् दुग्गिमज्जा होदउमंसेत्ता ॥४॥

पंगुत्तरा तु लवग्गा संव्वट्टे णेय जाव पण्णाय । पदेव उत्तराने दुग्गिमज्जा होदउमंसेत्ता ॥५॥ १ ।

विचरीयं मव्वट्टे चोदस लवग्गां निव्वट्टो पयो । स पदेव विचराने सग्गमस जग्ग सिद्धेति ॥६॥ २ ।

तेण पर दल्लवग्गादी दो दो टाणा य समस ववेति । सिद्धादी य होति उत्तमो होति विचि चोदस ॥७॥

दो लवग्गा सिद्धाण दो लवग्गा णग्गतीण सग्गो । पदे विचराने सग्गमस जग्ग सिद्धेति ॥८॥ ३ ।

गिवर्ताण-सग्गोदीं चित्तंरगंडिया मवो करणे । पग्गट्टे पग्गट्टे सग्गमस जग्ग सिद्धेति ॥९॥

तत्तिण्णादित्तिउत्तर विममादिविचराने चक्कपेदी । पग्गट्टे पग्गट्टे सग्गमस जग्ग सिद्धेति ॥१०॥

तसो विणिण्ण णग्गिदी सिद्धा पग्गट्टे होति मव्वट्टे । पग्गट्टे पग्गट्टे सग्गमस जग्ग सिद्धेति ॥११॥

ताते विट्ठमण्ण मिज्जेदो विणिण्ण होति मव्वट्टे । पग्गट्टे पग्गट्टे सग्गमस जग्ग सिद्धेति ॥१२॥

एस एव सग्ग मव्वट्टे आर अग्गट्टे होति दो होति वि । विममादिविचराने चक्कपेदी ॥१३॥

१. पग्गट्टे पग्गट्टे सग्गमस जग्ग सिद्धेति ॥१४॥ २. पग्गट्टे पग्गट्टे सग्गमस जग्ग सिद्धेति ॥१५॥ ३. पग्गट्टे पग्गट्टे सग्गमस जग्ग सिद्धेति ॥१६॥ ४. पग्गट्टे पग्गट्टे सग्गमस जग्ग सिद्धेति ॥१७॥ ५. पग्गट्टे पग्गट्टे सग्गमस जग्ग सिद्धेति ॥१८॥ ६. पग्गट्टे पग्गट्टे सग्गमस जग्ग सिद्धेति ॥१९॥ ७. पग्गट्टे पग्गट्टे सग्गमस जग्ग सिद्धेति ॥२०॥ ८. पग्गट्टे पग्गट्टे सग्गमस जग्ग सिद्धेति ॥२१॥ ९. पग्गट्टे पग्गट्टे सग्गमस जग्ग सिद्धेति ॥२२॥ १०. पग्गट्टे पग्गट्टे सग्गमस जग्ग सिद्धेति ॥२३॥ ११. पग्गट्टे पग्गट्टे सग्गमस जग्ग सिद्धेति ॥२४॥ १२. पग्गट्टे पग्गट्टे सग्गमस जग्ग सिद्धेति ॥२५॥ १३. पग्गट्टे पग्गट्टे सग्गमस जग्ग सिद्धेति ॥२६॥

ताहे-तियगादिविउत्तराए अउणत्तीसं तु तियग ठावेतुं । पढमे णत्थि तु खेवो मेमेसु ईमो भने खेवो ॥१४॥
 दुग पण णवगं तेरस सत्तरस दुवीस छ च अट्टेव । वारस चोदस तह अट्टवीस छवीग पण्नीसा ॥१५॥
 एकारस तेवीसा सीताला सतरि सत्तसत्तरि या । इग दुग सत्तासीती एगत्तरिमेन वान्दी ॥१६॥
 अउणत्तरि चउवीसा छाताल सतं तहेव छवीसा । एते रासीखेवा तिगअंतंता जहाकमसो ॥१७॥
 सिक्कगति-सन्वट्टेहिं दो दो ठाण विसमुत्तरा णेया । जाव उणत्तीसठाणे उणत्तीसं पुण छवीसाए ॥१८॥
 विसमुत्तरा य पढमा एवमसंख विसमुत्तरा णेया । सन्वत्थ वि अंतिहं अण्णाए आदिमं ठाणं ॥१९॥ गतं ॥
 अउणत्तीसं वारा ठावेतुं णत्थि पढमए खेवो । सेसे अट्टवीसाए सन्वत्थ दुगादियो खेवो ॥२०॥
 सिक्कगति पढमादीए वितियाए तह य होति सन्वट्टे । इय एगंतरिताइं सिक्कगति-सन्वट्टाणाइं ॥२१॥
 एवमसंखेज्जाओ चित्तंतरगंडियाओ णेतव्वा । जाव जितसत्तुराया अजिताजणपिता समुप्पण्णो ४ ॥२२॥
 एवं गाहाहिं चित्तंतरगंडिया समत्ता । इमा एतासिं ठवणा—

| | | | | | | | | | | | |
|----------------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| सिद्धा लक्खा | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ |
| सन्वट्टे लक्खा | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ५० |

एवं जाव असंखेज्जा पुरिसजुगा सिद्धा । अतो परं—

| | | | | | | | | | | | |
|----------------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| सिद्धा लक्खा | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ५० |
| सन्वट्टे लक्खा | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ |

एवं पि असंखेज्जा पुरिसजुगा सिद्धा । एते वि लक्खा—

| | | | | | | | | | | | |
|----------------|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|
| सिद्धा लक्खा | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
| सन्वट्टे लक्खा | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |

एवं जाव असंखेज्जा आवलिया दुगादिएगुत्तरा दो [जे० २२२ प्र०] वि गच्छंति ॥

| | | | | | | | | | | |
|----------|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|
| सिद्धा | १ | ३ | ५ | ७ | ९ | ११ | १३ | १५ | १७ | १९ |
| सन्वट्टे | २ | ४ | ६ | ८ | १० | १२ | १४ | १६ | १८ | २० |

एवं असंखेज्जा । एगादेगुत्तरा पढमा चित्तंतरगंडिया णेया ॥

| | | | | | | | | | | | |
|----------|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| सिद्धा | १ | ५ | ९ | १३ | १७ | २१ | २५ | २९ | ३३ | ३७ | ४१ |
| सन्वट्टे | ३ | ७ | ११ | १५ | १९ | २३ | २७ | ३१ | ३५ | ३९ | ४३ |

२५ एवं असंखेज्जा । एगादिविउत्तरा वितिया चित्तंतरगंडिया ॥

१ इमे भवे खेवा आ० ॥ २ चित्रान्तरगण्डिका-तद्यन्त्रकदम्बकविशेषजिज्ञासुभिर्द्रष्टव्या अस्मत्सम्पादितनन्दिसूत्रद्वारिभद्रीवश्यनन्तर-
 मुद्रितदुर्गपदव्याख्यायाः १६७ तमे पत्रे टिप्पणी ॥

| | | | | | | | | | | |
|----------|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| सिद्धा | १ | ७ | १३ | १९ | २५ | ३१ | ३७ | ४३ | ४९ | ५५ |
| सन्वट्टे | ४ | १० | १६ | २२ | २८ | ३४ | ४० | ४६ | ५२ | ५८ |

एवं जाव असंखेज्जा । एणादितिउत्तरा ततिया चिंतनरगंडिया ॥

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----------|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|
| सिद्धगति | ३ | ८ | १६ | २५ | ११ | १७ | २९ | १४ | ५० | ८० | ५ | ७४ | ७२ | ४९ | २९ |
| सन्वट्टे | ५ | १२ | २० | ९ | १५ | ३१ | २८ | २६ | ७३ | ४ | ९० | ६५ | २७ | १०३ | |

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|-----|-----|----|-----|----|
| सन्वट्टे | २९ | ३४ | ४२ | ५१ | ३७ | ४३ | ५५ | ४० | ७६ | १०६ | ३१ | १०० | ९८ | ७५ | ५५ |
| सिद्धगति | ३१ | ३८ | ४६ | ३५ | ४१ | ५७ | ५४ | ५२ | ९९ | ३० | ११६ | ९१ | ५३ | १२९ | |

सेसं गादाणुमारेण णेतव्वं जाव असंखेज्जा ४ ॥

१११. से किं तं चूलियाओ ? चूलियाओ आइल्लणं चउहं पुव्वाणं चूलिया. अव-
सेसा पुव्वा अचूलिया । से तं चूलियाओ ५ ।

१११. 'चूल' नि सिद्धं । दिट्ठिवाते जं परिकम्म-मुत्त-मुत्त-अवुत्तणे यत्तं भवितं तं चूलाम् भवितं । गाओ
य चूल्याओ आदिउपुव्वाणं चतुष्पं जं चूलवत्थुं भणिता ते चैव सव्ववत्थुं इत्थिं पविज्जंति य. अतो ते सव्ववत्थु-
चूला इव चूला । तेसि जयकमेण संखा चतु वत्थु अट्ठ दमं य भवति ५ ॥

११२. दिट्ठिवायस्स णं परिता वायणा. संखेज्जा अवुत्तोगमग. संखेज्जा वेदा.
संखेज्जा सिल्लोमा. संखेज्जाओ पट्टियणीओ. संखेज्जाओ पिज्जणीओ. संखेज्जाओ
संगहणीओ । से णं अंगल्लयाप्पं द्वालयस्से अंगं. एंगं सव्ववत्थुं. सोदमं पुव्वा. संखेज्जा
वत्थुं. संखेज्जा सुत्थुवत्थुं. संखेज्जा पाव्या. संखेज्जा पाव्यावत्थुं. संखेज्जाओ पाव्या-
याओ. संखेज्जाओ पाव्यापाव्यायाओ. संखेज्जाओ पिज्जणीओ. संखेज्जा पाव्या.
अणंता गमा. अणंता पज्जया. परिता वत्थु. अणंता पाव्या. सव्ववत्थुं अणंतावत्थुं
जिणवण्णता भावा आधियज्जंति एणवियज्जंति एणवियज्जंति एणवियज्जंति एणवियज्जंति
एणवियज्जंति । से एवंलाया. एवंलाया. एवंलेण्णाया. एवं लेण्णाया. एवंलेण्णाया
सि । से सं पिज्जिण्णाया १० ।

११३. ईचेइयम्मि दुवालसंगे गणिपिडगे अणंता भावा अणंता अभावा अणंता हेऊ अणंता अहेऊ अणंता कारणा अणंता अकारणा अणंता जीवा अणंता अजीवा अणंता भवसिद्धिया अणंता अभवसिद्धिया अणंता सिद्धा अणंता असिद्धा पण्णत्ता । संगहणिगाहा-

भावमभावा हेउमहेऊ कारणमकारणा चेव ।

जीवाऽजीवा भवियमभविया सिद्धा असिद्धा य ॥ ८० ॥

११३. अणंता भाव चि भवनं भूतिर्वा भावः. ते य जीवा-ऽजीवात्मका अणंता प्रतिवद्धा । 'अणंता अभावा' चि अभवनं अभावः अभूतिर्वा । जहा जीवो अजीवत्तेण अभावो, अजीवा य जीवत्तेण, पडो पडत्तेण, पडो य घडत्तेण, एमादि अणंता अभावा प्रतिवद्धा । अहवा जे जहा जानइया भावा तेसिं पडिपक्खतो तावइया चेव अणंता अभावा भवन्ति । 'अणंता हेतु' चि पंचे-दसावयववयणेमु पक्खम्मत्तं सपक्खत्तं अभिलसितमत्थसाधकं वयणं हेतु भण्णति, अहवा सव्वजुत्तिजुत्तं वयणं हेतु भण्णति, अहवा सव्वे जिगमणपहा हेतु, प्रतिपातकत्तणतो, 10 निदोसहेतुवयणं व, सुत्तस्स य अणंतं जे० २२२ द्वि० जगत्तणतो, एवं अणंता हेतु । भणितपडिपक्खतो य अणंता चेव अहेतु । 'अणंता कारण' चि कज्जसाधयं कारणं ति, ते य पयोग-वीससातो अणंता भाणितव्वा । जंच जस्स असाधकं तं तस्स अकारणं, जहा चक-दंडादयो पडस्स, एवं अणंता अकारणा । 'अणंता जीवा' इत्यादि कंठं ॥

११४. ईचेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतरं अणुपरियट्टिसु । इचेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णकाले परिता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतरं अणुपरियट्टंति । इचेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागते काले अणंता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतरं अणुपरियट्टिस्संति ।

११४. इचेयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीते काले अणंता जीवा आणाए विराहेत्ता इत्यादि । 'दुवालसंगं गणिपिडगं' ति तिविहं पण्णत्तं-सुत्ततो अत्थतो तदुभयतो य । एमेव आणा तिविहा-सुत्ताणा अत्थाणा

१ इचेयम्मि खं० ॥ २ कारणा जीवा । अजीव भवियऽभविया, तत्तो सिद्धा खं० ल० शु० ॥ ३ पञ्चावयव-दशा-वयवज्ञानार्थमत्रोल्लिख्यमानो दशवैकालिकसूत्रनिर्युक्ति-चूर्णि-वृद्धविवरण-वृत्त्यादिगतो ग्रन्थसन्दर्भोऽवधारणीयः—“पट्ठणा-हेउ-दिट्ठतोवसंधार-णिगमणेहि वा णिरुविज्जति आगमवयणं पंचहि, दसहि वा ।” तथा “पटिण्णा पटमो अवयवो १ पटिण्णासुद्धी २ हेऊ ३ हेउसुद्धी ४ दिट्ठतो ५ दिट्ठतविसुद्धी ६ उवसंधारो ७ उवसंधारविसुद्धी ८ णिगमणं ९ णिगमणविसुद्धी दसमो १० ।” इति [“कथंति पंचावयवं” इति दशवैकालिकसूत्रनिर्युक्तिगाथा २३ अगस्त्यसिंहचूर्णो पत्र २०] । “कदाइ आगम-हेउ-दिट्ठतोवसंधार-णिगमणावसाणेण पंचावयवेण कहिज्जइ, कदाइ पुण दसावयवेण ।” तथा—“इदाणि दसावयवाणं पक्खणं काहाभि, तं—पटिण्णा पटमो अवयवो १ पट्ठणाविसुद्धी नित्तियो २ एवं हेऊ तइओ अवयवो ३ हेउविसुद्धी चउत्थो अवयवो ४ दिट्ठतो पंचमो अवयवो ५ दिट्ठतविसुद्धी छट्ठो ६ उवसंधारो सत्तमो ७ उवसंधारविसुद्धी अट्ठमो ८ णिगमणं णवमो ९ णिगमणविसुद्धी दसमो १० ।” इति वृद्धविवरणे पत्र ३८-३९ । “पञ्चावयवाध प्रतिज्ञादयः, यथोक्तम्—“प्रतिज्ञा-हेतुदाहरणोपनय-निगमनानीत्यवयवाः” [न्यायद० १-१-३२] दशवैकालिकदृष्टिभेदः पत्र ३३ । तथा—“ते उ पइज्ज १ विभत्तो २ हेउ ३ विभत्तो ४ विवक्ख ५ पडिसेहो ६ दिट्ठतो ७ आसंका ८ तप्पडिसेहो ९ निगमणं १० च ॥ १३७ ॥” दशवैकालिकनिर्युक्तिः । अस्या व्याख्यार्थं हारिभट्टो वृत्तिरवलोकनीया । एषूलेषु दशावयवद्वैविध्यमपि न विस्मरणीयम् ॥ ४ वयणे सपक्खम्मत्त-सपक्खत्त-अभिलसितसज्जसाधकं आ० ॥ ५ पादकत्तणतो आ० दा० ॥ ६ इचेयं खं० शु० । एवमपेऽपि सर्वत्र होयम् ॥

तदुभयत्राणा य एवं एगद्विना तद्वा वि अभिधाणतो विसेसो कज्जति-यदा आद्राप्यते एभिः तदा आद्रा भवति, तंतुपटव्यपदेशवत् । आद्राप्यते यया द्विनोपदेशत्वेन ना आद्रा इति । इदंणि एतेसि विराहणा विनिज्जति-जं मुचतो दुवालसंगं गणिपिडंगं तं अत्यतो अभिनिवेमेण अण्णदा पणवेतो ताए अत्याणाए मुचं विराहेत्ता तीते काले अणंता जीवा संतारं भमितपुव्वा, गोद्वानाहिल्यत् । अहवा जं अत्यतो दुवालसंगं गणिपिडंगं तं मुचतो अभिनिवेमेण अण्णदा पटंतो ताए मुचाणाए अन्धं विराहेत्ता तीते काले अणंता जीवा संतारं भमितपुव्वा जमान्तिवत् । अहवा आणं ति-पंचविद्यायारपरिणयील्लम्य गुत्तो द्विनोपदेशवयणं आणा, तमयथा आयरंतेण गणिपिडंगं विराधितं भवति, एवं तीए काले अणंता जीवा संतारं भमितपुव्वा, एवो अक्खम्मो अत्थो । इमो अणक्खम्मो-आणाए विराधेत्ता इति जहा छायाए भुंजिता गतो, जो न्छायाए कण्णभूयाए भुंजिता, किंतु न्छायायां भुक्त्वा गतेति, एवं आद्रायां विराधनं कृत्वा । ना य आणा इमा-‘इवेयं दुवालसंगं गणिपिडंगं आणाए विराहेत्ता’ । संगं पूर्ववत् । पटुप्पण्ण-अणागतंमु वि मुत्तेमु एवं चेव वत्तं, पवरं पटुप्पण्णे काले परिता जीवा इति, अणंता असंवेज्जा य [जे० २२३ प्र०] ण भवंति, गण्णिमणुयाणं संवेज्जततो ॥

११५. इवेयं दुवालसंगं गणिपिडंगं अतीतकाले अणंता जीवा आणाए आगहेत्ता चाउरंतं संसारकंतरं विनिर्वेदंस्सु । इवेयं दुवालसंगं गणिपिडंगं पटुप्पण्णकाले पग्गिता जीवा आणाए आगहेत्ता चाउरंतं संसारकंतरं विनिर्वेदंति । इवेयं दुवालसंगं गणिपिडंगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए आगहेत्ता चाउरंतं संसारकंतरं विनिर्वेदंतिस्संति ।

११६. निम्ह वि आगधणमुत्तेमु एवं चेव वत्तं ॥

११६. इवेयं दुवालसंगं गणिपिडंगं ण कयाहं ताउरंती ण कयाहं ण भवति ण कयाहं ण भविस्सति, भुवि च भवति च भविस्सति च, एवं विराहं माग्गे अत्ताए अत्ताए आ-
ह्णिण्णिणे । सं जहाणांमए पंचगियकाए ण कयाहं ताउरंती ण कयाहं विनिर्वेदंति ण कयाहं
ण भविस्सति, भुवि च भवति च भविस्सति च, एवं जीवा माग्गता आगधया आगधया
अवहिया णिधा, एवाग्गेव दुवालसंगं गणिपिडंगं ण कयाहं ताउरंती ण कयाहं विनिर्वेदंति ण
कयाहं ण भविस्सति, भुवि च भवति च भविस्सति च, एवं विराहं माग्गे अत्ताए अत्ताए
अवहिया णिधा ।

११३. ईचेइयम्मि दुवालसंगे गणिपिडगे अणंता भावा अणंता अभावा अ
अणंता अहेऊ अणंता कारणा अणंता अकारणा अणंता जीवा अणंता अजीवा
भवसिद्धिया अणंता अभवसिद्धिया अणंता सिद्धा अणंता असिद्धा पणत्ता । संगहा

भावमभावा हेउमहेऊ कारणमकारणा चेव ।

5

जीवाऽजीवा भवियमभविया सिद्धा असिद्धा य ॥ ८० ॥

११३. अणंता भाव ति भवनं भूतिर्वा भावः, ते य जीवा-ऽजीवात्मका अणंता प्रतिवद्धा
अभाव' ति अभवनं अभावः अभूतिर्वा । जहा जीवो अजीवत्तेण अभावो, अजीवा य जीवत्तेण, पडो पड
य घडत्तेण, एमादि अणंता अभावा प्रतिवद्धा । अहवा जे जहा जावइया भावा तेसिं पडिपक्खतो ता
अणंता अभावा भवंति । 'अणंता हेतु' ति पंचे-दसावयववैयणेषु पक्खधम्मत्तं सपक्खसत्तं अभिलसितम्
वयणं हेतू भण्णति, अहवा सव्वजुत्तिजुत्तं वयणं हेतू भण्णति, अहवा सव्वे जिणवयणपहा हेतू, प्रतिपात्त
णिदोसहेतुवयणं व, सुत्तस्स य अणंत[जे० २२२ द्वि०]गमत्तणतो, एवं अणंता हेतू । भणितपडिक्ख
अणंता चेव अहेतू । 'अणंता कारण' ति कज्जसाधयं कारणं ति, ते य पयोग-वीससातो अणंता भाणितव
जस्स असाधकं तं तस्स अकारणं, जहा चक्क-दंडादयो पडस्स, एवं अणंता अकारणा । 'अणंता जीवा' इत्या

११४. ईचेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा आणाए ति
१५ चाउरंतं संसारकंतरं अणुपरियट्टिंसु । ईचेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णकाले
जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतरं अणुपरियट्टंति । ईचेइयं दुवालसंगं गणि
अणागते काले अणंता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतरं अणुपरियट्टिस्स

११४. ईचेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीते काले अणंता जीवा आणाए विराहेत्ता इ
'दुवालसंगं गणिपिडगं' ति तिविहं पणत्तं-सुत्ततो अत्थतो तदुभयतो य । एमेव आणा ति विहा-सुत्ताणा

१ ईचेइयम्मि खं० ॥ २ °कारणा जीवा । अजीव भवियऽभविया, तत्तो सिद्धा खं० ल० शु० ॥ ३ पञ्चा
वयवज्ञानार्थमत्रोल्लिख्यमानो दशवैकालिकसूत्रनिर्युक्ति-चूर्ण-वृद्धविवरण-वृत्त्यादिगतो ग्रन्थसन्दर्भोऽवधारणीयः—“पङ्णा-हेउ-दिट्ठं
णिगमणेहिं वा णिरुविज्जति आगमवयणं पंचहिं, दसहिं वा ।” तथा “पतिण्णा पडमो अवयवो १ पतिण्णासुद्धी २ हेऊ ३ हेउसुद्धी
५ दिट्ठंतविसुद्धी ६ उवसंहारो ७ उवसंहारविसुद्धी ८ णिगमणं ९ णिगमणविसुद्धी दसमो १० ।” इति [“कथयति पंचाव
दशवैकालिकसूत्रनिर्युक्तिगाथा २३ अगस्त्यसिंहचूर्णो पत्र २०] । “कदाइ आगम-हेउ-दिट्ठंतोवसंधार-णिगमणावसाणेण पंचावयवेण
कदाइ पुण दसावयवेण ।” तथा—“इदानीं दसावयवाणं परूवणं काहामि, तं—पतिण्णा पडमो अवयवो १ पङ्णाविसुद्धी
२ एवं हेऊ तइओ अवयवो ३ हेउविसुद्धी चउत्थो अवयवो ४ दिट्ठंतो पंचमो अवयवो ५ दिट्ठंतविसुद्धी छट्ठो ६ उवसंहारो
७ उवसंहारविसुद्धी अट्ठमो ८ णिगमणं णवमो ९ णिगमणविसुद्धी दसमो १० ।” इति वृद्धविवरणे पत्र ३८-३९ । “प
प्रतिज्ञादयः, यथोक्तम्—“प्रतिज्ञा-हेतूदाहरणेपनय-णिगमनानीत्यवयवाः” [न्यायद० १-१-३२] दशवैकालिकद्वरिभद्रवृत्तिः
तथा—“ते उ पङ्ग १ विभत्तो २ हेउ ३ विभत्तो ४ विवक्ख ५ पडिसेहो ६ । दिट्ठंतो ७ आसंका ८ तप्पडिसेहो ९ निगमणं
१३७ ॥” दशवैकालिकनिर्युक्तिः । अस्या व्याख्यार्थं द्वारिभद्रो वृत्तिरवलोकनीया । एतद्विषयेषु दशावयवद्वैविध्यमपि न विस्मर
४ वयणे सपक्खधम्मत्त-सपक्खत्त-अभिलसितसज्जसाधकं आ० ॥ ५ °पावकत्तणतो आ० दा० ॥ ६ ईचेइयं खं०
एवमपेऽपि सर्वत्र हेयम् ॥

तदुभययाणा य एवं एगद्विता तदा वि अभिधाणतो विसेमो कज्जति-यदा आजाप्यते एभिः तदा आजा भवति, तंतुपटव्यपदेशवत् । आजाप्यते यया हितोपदेशत्वेन या आजा इति । इदानीं एतेसि विराहणा चिनिज्जति-जं मुत्ततो दुवालयसंगं गणिपिडगं तं अत्यतो अभिनिवेसेण अण्णदा पण्वेतो ताए अत्याणाए मुत्तं विराहेत्ता तीते काले अणंता जीवा संसारं भमितपुब्बा, गौट्टामाहियवत् । अदवा जं अत्यतो दुवालयसंगं गणिपिडगं तं मुत्ततो अभिनिवेसेण अण्णदा पण्वेतो ताए मुत्ताणाए अन्धं विराहेत्ता तीते काले अणंता जीवा संसारं भमितपुब्बा जमाहियवत् । अदवा आणं ति-पंचविद्यायारायरणयीळम्य गुरुजो हितोपदेशवत्यो आया, तमराया आयगंतेण गणिपिडगं विराधितं भवति, एवं तीए काले अणंता जीवा संसारं भमितपुब्बा, एयो अक्खम्ममो अत्यो । इमो अणक्खम्ममो-आणाए विराधेत्ता इति जहा छायाए भुंजिता गतो, जो न्यायाए कण्णम्याए भुंजिता, किंतु न्यायायां भुक्त्या गतेति, एवं आजायां विराधनं कृत्वा । या य आणा इमा-‘इच्चैयं दुवालयसंगं गणिपिडगं आणाए विराहेत्ता’ । मेमं पूर्ववत् । पट्टपण्ण-अणागतेनु वि मुत्तेनु एवं चैव वत्तव्वं, एवरं पट्टपण्णे काले परिता जीवा इति, अणंता अमंसेज्जा य [जे० २२६ प्र०] ण भवति, गणिमसुयाणं मंवेज्जतातो ॥

११५. इच्चैयं दुवालयसंगं गणिपिडगं अतीतकाले अणंता जीवा आणाए आगहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं चित्तिवैदंस्सु । इच्चैयं दुवालयसंगं गणिपिडगं पट्टपण्णकाले परिता जीवा आणाए आगहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं चित्तिवैदंस्सु । इच्चैयं दुवालयसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए आगहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं चित्तिवैदंस्सु ।

११६. तियु वि आराधणमुत्तेनु एवं चैव वत्तव्वं ।

११६. इच्चैयं दुवालयसंगं गणिपिडगं ण कयाड ताधम्मं ण कयाड ण भवति ण कयाड ण भविस्सति, भुवि च भवति य भविस्सति य, अणं विराहं मग्गं असाए असाए आ-
द्विण्णिजे । ये जहाणांसए पंचत्थियंए ण कयाड ताधम्मं ण कयाड ताधम्मं ण कयाड
ण भविस्सति, भुवि च भवति य भविस्सति य, अणं विराहं मग्गं असाए असाए आ-
अवहिया णिजा, एवायेव दुवालयसंगं गणिपिडगं ण कयाड ताधम्मं ण कयाड ताधम्मं ण
कयाड ण भविस्सति, भुवि च भवति य भविस्सति य, अणं विराहं मग्गं असाए असाए आ-
अवहिया णिजे ।

- णवपदत्थेसु नियुक्तं नियतं जहा लोकवचनं पंचास्तिकायेष्विव । गियतत्तणतो चेव 'सासतं' शशद् भवतीतिशाश्वतम्, प्रतिसमया-ऽऽवल्लिक-मुहूर्त-दिनादिष्विव कालः । सासतत्तणतो चेव वायणादिमु 'अक्खयं' नास्य क्षयो अक्षयम्, गंगा-सिंधुप्रवाहेष्वपि पोडरीकहृदवत् । अक्खयत्तणतो चेव 'अव्वयं' नास्य न्ययो अव्ययम्, गानुपोत्तराद् वहिसामुद्रवत् । अव्वयत्तणतो चेव स्वप्रमाणे अवट्ठितं जंबूद्वीपादिवत् । अवट्ठितत्तणतो चेव सन्वहा चित्तिज्जमाणं 'निच्चं' आकाशवद् ।
- 5 अविनाशीत्यर्थः । अहवा एते धुवादिना एगट्ठिता । चोदक आह-इच्चयं दुवालसंगं धुवादिपदपरुवितं किमाणागेज्झं दिट्ठंततो वा सज्झं ? आचार्याऽऽह-जम्हा जिणा अणण्णहावादिणो तम्हा तेसिं वयणं सव्वं आणाते चेव गज्झं, कर्हिचि दिट्ठंततो वि गज्झं । इह दुवालसंगस्स धुवादिपरुवितत्थस्स साधको इमो दिट्ठंतो-‘से जहानामते’त्यादि कंठं ॥

११७. से समासतो चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा-दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ । तत्थ दव्वओ णं सुयणाणी उवउत्ते सव्वदव्वाइं जाणइ पांसइ । खेत्तओ णं सुयणाणी उवउत्ते
- 10 सव्वं खेत्तं जाणइ पांसइ । कालओ णं सुयणाणी उवउत्ते सव्वं कालं जाणइ पांसइ । भावओ णं सुयणाणी उवउत्ते सव्वे भावे जाणइ पांसइ ।

११७. तं च दुवालसंगसुतं चतुव्विहं दव्वादि । अभिण्णदसपुव्वादियाण जाव सुतनाणकेवली ते पडुच्च भणितं । दव्वतो णं सुतनाणी सुतनाणेणोवयुत्तो सुत्तविण्णत्तीए सव्वदव्वादिं जाणति पासति य । णणु पासइ त्ति विरोहो ? उच्चयेते-जम्हा अदिट्ठान वि मेरुमादियाण सुतनाणपासणताए आगारमालिहइ, ण यादिट्ठं लिखइ,
- 15 पण्णवणाए य भणिता सुतनाणपासणत त्ति, ण विरोधो । आरतो पुण जे सुतनाणी ते सव्वदव्वनाण-पासणतासु भइता । सा य भयणा मतिविसेसतो जाणितव्वा । एवं खेत्त-काल-भावेसु वि [जे० २२३ द्वि०] भाणितव्वा ॥

सुतनाणदंसणत्थं भणति—

११८. अक्खर १ सण्णी २ सम्मं ३ सादीयं ४ खलु सपज्जवसियं ५ च ।

गमियं ६ अंगपविट्ठं ७ सत्त वि एए सपडिवक्खा ॥ ८१ ॥

20

[आव० नि० गा० १९]

आगमसत्थग्गहणं जं बुद्धिगुणेहिं अंट्ठहिं दिट्ठं ।

चित्ति सुयणाणलंभं तं पुव्वविसारया धीरा ॥ ८२ ॥

सुस्सूसइ १ पडिपुच्छइ २ सुणेइ ३ गिण्हइ ४ य ईहए ५ यीवि ।

तत्तो अपोहए ६ वा धारेइ ७ करेइ वा सम्मं ८ ॥ ८३ ॥

25

मूयं १ हुंकारं २ वा वाढकार ३ पडिपुच्छ ४ वीमंसा ५ ।

तत्तो पसंगपारायणं ६ च परिणिट्ठ ७ सत्तमए ॥ ८४ ॥

१ जिणा णऽण्णहा आ० ॥ २ तत्थ इति खं० डे० ल० शु० विआनन्दुद्धरणे ३०० पन्ने नास्ति ॥ ३-५-७-९ ण पासइ हाटोपा० ॥ ४-६-८ सव्वं खं० विआनन्दुद्धरणे ३०० पन्ने ॥ १० अट्ठहिं वि दिट्ठं जे० ल० ॥ ११ आचि खं० । वा वि जे० ल० ॥ १२ या यं० ॥

| गाथा | सूत्राङ्क | गाथाङ्क | गाथा | सूत्राङ्क | गाथाङ्क | गाथा | सूत्राङ्क | गाथाङ्क |
|---------------------|-----------|---------|------------------------------|-----------|---------|---------------------|-----------|---------|
| पुर्वं अदिष्टमसुय- | ४६ | ५७ | महुसिथ मुदियंके | ४६ | ६० | संजमतवुंनार- | २ | ५ |
| [आव. नि. गा. ९३९] | | | [आव. नि. गा. ९४२] | | | संवत्तरजळपगळियउञ्ज- | २ | १५ |
| वारस एकारसमे | १०७ | ७८ | मंडिय मोरियपुत्ते | ४ | २१ | सावगजणमहुगणिपरि- | २ | ८ |
| भणगं करगं झरगं | ५ | २७ | मिउमद्वसंपणगे | ५ | ३५ | सीगा साडी दीहं न | ४६ | ६३ |
| भदं धिइवेलापरि- | २ | ११ | मूयं हुंकारं वा | ११८ | ८४ | [आव. नि. गा. ९४५] | | |
| भदं सव्वजगुजो- | १ | ३ | [आव. नि. गा. २३] | | | सुकुमालकोमलतले | ५ | ४१ |
| भदं सीलपडागू- | २ | ४ | वड्डउ वायगवंसो | ५ | २९ | सुत्तथो सलु पढमो | ११८ | ८५ |
| भरणित्थरणसमत्था | ४६ | ६१ | वंदामि अज्जधम्मं | पत्र-८ | टि०१० | [आव. नि. गा. २४] | | |
| [आव. नि. गा. ९४३] | | | [चूर्णि-टीकाद्वयानादता गाथा] | | | सुमुणियणिवाणिचं | ५ | ३९ |
| भरहम्मि अद्धमासो | २३ | ४८ | वंदामि अज्जरक्खिय- | पत्र-८ | टि०१० | सुस्सूसइ पडिपुच्छइ | ११८ | ८३ |
| [आव. नि. गा. ३४] | | | [चूर्णि-टीकाद्वयानादता गाथा] | | | [आव. नि. गा. २२] | | |
| भरह सिल पणिय रुक्खे | ४६ | ५८ | वंदे उसभं अजियं | ३ | १८ | सुहम्मं अग्गिवेसाणं | ५ | २२ |
| [आव. नि. गा. ९४०] | | | विणयणयपवरमुणिवर- | पत्र-५ | टि०८ | सुहुमो य होइ कालो | २३ | ५१ |
| भरह सिल मिढ कुकुड | ४६ | ५९ | [१६ गाथाप्रथमचरणपाठमेदः] | | | [आव. नि. गा. ३७] | | |
| [आव. नि. गा. ९४१] | | | विणयमयपवरमुणिवर- | २ | १६ | सेलवण कुडग चालणि | ६ | ४३ |
| भावमभावा हेउम- | ११३ | ८० | विमलमणंतइधम्मं | ३ | १९ | [आव. नि. गा. १३६] | | |
| भासासमसेढीओ | ५८ | ७४ | सम्मदंसणवइरदढ- | २ | १२ | हत्थम्मि सुहुत्तंतो | २३ | ४७ |
| [आव. नि. गा. ६] | | | सव्ववहुअगणिजीवा | २३ | ४५ | [आव. नि. गा. ३३] | | |
| भूयहिययप्पगब्भे | ५ | ३८ | [आव. नि. गा. ३१] | | | हारियगोत्तं साइं | ५ | २५ |
| मणपज्जवणाणं पुणं | ३२ | ५३ | संखेज्जम्मि उ काले | २३ | ४९ | हेरणिणए करिसए | ४६ | ६५ |
| [आव. नि. गा. ७६] | | | [आव. नि. गा. ३५] | | | [आव. नि. गा. ९४७] | | |

| गाथादि | पत्राङ्क | गाथादि | पत्राङ्क | गाथादि | पत्राङ्क |
|------------------------------|----------|--------------------------|----------|------------------------------------|----------|
| दो लक्खा सिद्धीए | ७७ | पुगरवि चोदरा लक्खा | ७७ | ननसमिनि० | ६१ |
| धम्मो मंगलमुक्कट्टं | ७४ | पुव्वभव जम्म णाण | ७७ | [] | |
| [दशर्व. अ. १ गा. १] | | [आवश्यकनि. गा. १४९] | | किरीयं सव्वट्ठे | ७७ |
| नागम्मि दंसणम्मि य | ३० | भगितं पि य पण्णत्ती | २९ | निरामुत्तरा य पढमा | ७८ |
| [विशेषणवती गा. २२९] | | [विशेषणवती गा. २२०] | | सत्ततं ण देइ लभइ | २९ |
| निच्छयतो सव्वगुरुं | ५३ | भण्णति जहोहिणागी | ३० | [विशेषणवती गा. २०४] | |
| [कल्पभाष्य गा. ६५] | | [विशेषणवती गा. १७८] | | सदरादविरोसगातो | ४८ |
| पगतीमुद्धमजाणिय | १३ | भण्णति ण एस गियमो | २९ | [विशेषणवती गा. ११५] | |
| [कल्पभाष्य गा. ३६७] | | [विशेषणवती गा. २१८] | | सत्ते सत्ता ण हंतत्वा | २ |
| पण्णवणिज्जा भावा | ५५ | भण्णति भिण्णमुहुत्तो | २८ | [आचाराज धु. १. अ. ४, उ. २ सू. ३] | |
| [कल्पभाष्य गा. ९६४] | | [विशेषणवती गा. २०२] | | सत्तेसिं आयारो | ७५ |
| पायदुगं जंघोरू | ५७ | भंभा मकुंद मदल | १ | [आचाराज नि गा. ८] | |
| [] | | [] | | सिक्खगति पढमादीए | ७८ |
| पासंतो वि ण जाणइ | २९ | रुप्पं पत्तेयवुद्धा | २६ | सिक्खगति-सव्वट्ठेहिं चि- | ७७ |
| [विशेषणवती गा. २१५] | | [आवश्यकनि. गा. ११३९] | | सिक्खगति-सव्वट्ठेहिं दो | ७८ |
| पिंडस्स जा विसोही | ६१ | रुव्विस्सडव्वे | १५ | | |
| [व्यवहारभाष्य उ. १ गा २८९] | | [तत्त्वा. अ. १ सू. २८] | | | |

३

तृतीयं परिशिष्टम्

नन्दीसूत्रचूर्णिगतानि पाठान्तर-मतान्तरनिदर्शकानि स्थानानि

| अण्णायरियमतेण | पत्र पंक्ति | अहवा | पत्र पंक्ति |
|------------------|-------------|-------------|------------------|
| अण्णे | ७५-१७ | अहवा पाढो | १७-१३ |
| अण्णे पुण | २२-२२, ३२-३ | केइ | १२-२ |
| अण्णे पुण आयरिया | ८-११ | पादंतरं इमं | ४१-६ |
| अण्णे भणंति | ४१-२ | पादंतरं | २-१४ |
| | ९-२५, २४-२१ | | ८-११, ५२-६, ७०-२ |

| विशेषनाम | किम् ? | पत्रम् | विशेषनाम | किम् ? | पत्रम् | विशेषनाम | किम् ? | पत्रम् |
|-------------------------------|-----------------------|------------------------|-----------------------|------------------------------|------------------------|-------------------------|-----------------------|----------|
| ० आर्यमङ्गु | [निर्ग्रन्थ-स्थविर] | ८ टि० | * परवय | [क्षेत्र] | ५१ | कासन | [गोत्र] | ७, ८ |
| ० आर्यसमुद्र | ,, | ८ टि० | * पलावच | [गोत्र] | ७ | * क्रियाविराल | [जैनपूर्वागम] | ७४, ७५ |
| ० आवश्यकद्वीपिका | [जैनागम] | ११ टि० | पलावच | ,, | ८ | क्रियाविराल | [जैनपूर्वागम] | ७६ |
| ० आवश्यकनिर्युक्ति | ,, | २, २६, ४६, ४७, ५१ | * पलावन्त | ,, | ७ टि० | कुलगरगंडिया | [दृष्टिवादप्रविभाग] | ७७ |
| ० आवश्यकनिर्युक्ति [जैनागम] | | २० टि०, २७ टि०, ३३ टि० | ० ऐलापत्य | ,, | ८ टि० | * कुलगरगंडियाओ | ,, | ७७ |
| ० आवश्यकवृत्ति | ,, | ३४ टि० | * ओवाइय | [जैनागम] | ५७ | * कुंथु | [तीर्थंकर] | ७ |
| ० आवस्सग | ,, | ४९ | * ओसपिणिगंडियाओ | | | * कोडल्य | [शास्त्र] | ४९ |
| * आवस्सग | ,, | ५७ | [दृष्टिवादप्रविभाग] | | ७७ | * कोडिल्य | ,, | ४९ टि० |
| * आसुरकस | [शास्त्र] | ४९ टि० | * कचायण | [गोत्र] | ७ | ० कोडिल्लदंडणीइ | [शास्त्र] | ४९ टि० |
| ० आसुर्य | ,, | ४९ टि० | कचायण | ,, | ७ | * कोसिय | [गोत्र] | ८, ७ टि० |
| ० आसुवृक्ष | ,, | ४९ टि० | * कणगसत्तरि | [शास्त्र] | ४९ | कोसिय | ,, | ८ |
| ० इतिहास | ,, | ४९ टि० | * कण्य | [जैनागम] | ५८ | * क्रियाकल्प | [शास्त्र] | ४९ टि० |
| * इसिभासियाइं | [जैनागम] | ५८ | * कण्वडिसियाओ | ,, | ५९ | * खंदिलायरिय | [निर्ग्रन्थ-स्थविर] | ९ |
| * इंदभूति | [निर्ग्रन्थ-गणधर] | ७ | कण्वडेंसिया | ,, | ६० | खंदिलायरिय | ,, | ९ |
| * उट्टाणमुय | [जैनागम] | ५९ | कण्वमुत्त | ,, | ५७ | * खुट्टियाविमाणपविभत्ति | [जैनागम] | ५९ |
| उट्टाणमुत्त | ,, | ६० | * कण्पासिय | [शास्त्र] | ४९ | खुट्टियाविमाणपविभत्ति | ,, | ५९ |
| * उत्तरञ्जयणाइं | ,, | ५८ | * कण्पियाओ | [जैनागम] | ५९ टि० | * खोडमुह | [शास्त्र] | ४९ |
| * उप्पाटपुव्व | [जैनपूर्वागम] | ७४ | * कण्पियाकण्पिय | ,, | ५७ | * धोडमुह | | ४९ टि० |
| उप्पायपुव्व | ,, | ७५ | कण्पियाकण्पिय | ,, | ५७ | * गगधरगंडियाओ | [दृष्टिवादप्रविभाग] | ७७ |
| उल्लक | [दर्शन] | ४ | * कम्मप्पगडि | [जैनशास्त्र] | ९ | * गणिय | [शास्त्र] | ४९ टि० |
| * उववाइय | [जैनागम] | ५७ टि० | * कम्मप्पवाद | [जैनपूर्वागम] | ७४, ७५ | * गणिविज्जा | [जैनागम] | ५७ |
| * उवासगदसाओ | ,, | ४८, ६१, ६६, ६७ | कम्मप्पवाद | ,, | ७६ | गणिविज्जा | ,, | ५८ |
| उवासगदसाओ | ,, | ६७ | करकंडु | [निर्ग्रन्थ-प्रत्येकबुद्ध] | २६ | गरुल | [क्षेत्र] | ५९ |
| * उसम-ह | [तीर्थंकर] | ६, ६० | करिसावण | [नाणकविशेष] | ४५ | * गरुलोववाण | [जैनागम] | ५९ |
| उसम | ,, | ७, ६०, ७७ | ० कल्पभाण्य | [जैनागम] | १२, १३, ५३, ५४, ५५, ५६ | गंगा | [नदी] | ६४, ८२ |
| * उरसपिणिगंडियाओ | | | कविल | [ऋषि] | २६ | गंडिकाणुओग | [दृष्टिवादप्रविभाग] | ७६ |
| [दृष्टिवादप्रविभाग] | | ७७ | * कविल | [शास्त्र] | ४९ | * गंडियाणुओग | ,, | ७६, ७७ |
| एगुरुग | [अन्तरद्वीप] | २२ | * काविल | ,, | ४९ टि० | गंडियाणुओग | ,, | ७७ |
| एवद-य | [क्षेत्र] | २२, ५१ | * काविलिय | ,, | ४९ टि० | गोट्टामाहिल | [निर्ग्रन्थनिहव] | ८१ |
| | | | * कासव | [गोत्र] | ७ | गोतम | [निर्ग्रन्थ-गणधर] | २६, ६५ |
| | | | | | | गोतम | [गोत्र] | ७ |
| | | | | | | ० गोमटसार | [जैनशास्त्र] | ४९ टि० |

| विषयनाम | विम् ? | पत्रम् | विशेषनाम | विम् ? | पत्रम् | विशेषनाम | विम् ? | पत्रम् |
|---------------------------------------|----------------|-----------------|-------------------------------|-----------|------------|---|--------------|------------|
| देवाव [जैनपूर्वागमसमूह] | ४८, ६१, | ७१, ७९ | ० निगम | [ज्ञान] | ४९ टि० | * पुष्पकृत्या | [जैनागम] | ६० |
| देवाव | " | ७१, ७२, ७९ | * निरयगङ्गमण- | | | * पुष्पकृत्याओ | " | ५९ |
| वसागरपण्णत्ति [जैनागम] | ५९ | | गंडियाओ [दृष्टिवादप्रविभाग] | ७७ | | * पुष्पकृत्या | [तीर्थंकर] | ६ |
| पुष्पिक्य | " | ७४ | निरयावलिया [जैनागम] | ६० | | पुष्पिक्या | [जैनागम] | ६० |
| स्सगणि } [निर्ग्रन्थ-स्थविर] ११, १२ | १३ | | * निरयावलियाओ | " | ५९ | * पुष्पिक्याओ | " | ५९ |
| स्सगणि } | ११ | | ० निरुक्त [शास्त्र] | ४९ टि० | | * पुराण | [शास्त्र] | ४९ |
| स्सगणि | " | ११ | ० निर्घण्ट | " | ४९ टि० | ० पुराण | " | ४९ टि० |
| द्विवाद } [जैनपूर्वागमसमूह] ७१ | ७१ | | निसीह [जैनागम] | ५९ | | * पुस्तदेवय | " | ४९ टि० |
| द्विपात } | | | * पच्चक्राण [जैनपूर्वागम] | ७४, ७५ | | पेठिया | [जैनागम- | १८, २६, |
| देववायग [नन्दीसूत्रकार] | १३ | | पच्चक्राण | " | ७६ | आनस्यकपीठिका] ३१, ४४ | | |
| देविदत्थअ [जैनागम] | ५७ | | * पच्चक्राणप्पवाद | " | ७४ टि० | * पोरिसिमंडल [जैनागम] | | ५७ |
| देविदोववाए | " | ५९ | पण्णत्ति [जैनागम] | २९ | | पोरिसिमंडल | " | ५८ |
| द्वादशारनय- | [जैनशास्त्र] | ५० टि० | पण्णवगा | " | २९, ५८, ८२ | पोडरीय [ब्रह्म] | | ६४ |
| चक्रवृत्ति | | | * पण्णवणा | " | ५७ | * वलदेवगंडियाओ [दृष्टिवादप्रविभाग] | ७७ | |
| * धणदत्त [श्रुती] | ३४ | | * पण्णवागरणाइं | " | ४८, ६१, ६९ | वलिससह [निर्ग्रन्थ-स्थविर] | | ८ |
| * धम्म [तीर्थंकर] | ७ | | पण्णवागरणाइं | " | ६९, ७० | * बहुल | " | ७ |
| धरण [देव] | ६० | | * पभव [निर्ग्रन्थ-स्थविर] | ७ | | बहुल | " | ८ |
| * धरणोववाए [जैनागम] | ५९ | | पभव | " | ७ | * बहुलसरिव्वय | " | ७ |
| ० नन्दिवृत्ति | " | ३४ टि०, ३५ टि० | * पभास [निर्ग्रन्थ-गणधर] | ७ | | (वलिससह) | | |
| ० नन्दी-सूत्र | " | २३ टि०, ३२ टि०, | * पमादप्पमाद [जैनागम] | ५७ | | * वंभदीवग [निर्ग्रन्थशास्त्रा] | | ९ |
| | | ३८ टि०, ४२ टि०, | पमादप्पमाद | " | ५८ | वंभदीवग | " | ९ |
| | | ६१ टि०, ६७ टि०, | * पाइण्ण [गोत्र] | ७ | | ० वार्हस्पत्य [शास्त्र] | | ४९ टि० |
| | | ६८ टि०, ८२ टि० | ० पाक्षिकसूत्रटीका [जैनागम] | ५९ टि० | | विंदुसार [जैनपूर्वागम] | | ३२, ४९ |
| ० नयचक्र [शास्त्र] | ५० टि० | | ० " वृत्ति | " | ५७ टि० | ० वृहत्सङ्ग्रहणी [जैनशास्त्र] | | २४ |
| नंदी [जैनागम] | ५७ | | * पाणाउं-उ-यु [जैनपूर्वागम] | ७४ टि०, | | ब्रह्मी [लिपि] | | ४४ |
| * नागपरियागियाओ | " | ५९ | | ७५ टि० | | ० भगवती [जैनागम] | | २३ टि०, २६ |
| * नागपरियावगियाओ | " | ५९ टि० | * पाणाय | " | ७४, ७५ | भगवती | " | ३० |
| * नागपरियावलियाओ | " | ५९ टि० | पाणायुं | " | ७६ | भद्रगुत्त [निर्ग्रन्थ-स्थविर] | | ८ टि० |
| * नागमुहुम [शास्त्र] | ४९ टि० | | ० पाणिनीयधातुपाठ [शास्त्र] | १४, १७ | | * भद्रवाहुगंडियाओ [दृष्टिवादप्रविभाग] | ७७ | |
| * नाणप्पवान [जैनपूर्वागम] | ७४ | | * पायंजली | " | ४९ टि० | * भद्रवाहु [निर्ग्रन्थ-स्थविर] | | ७ |
| * नाससत्तम [शास्त्र] | ४९ | | पायीणगि [गोत्र] | ७ | | भद्रवाहु | " | ७ |
| | | | * पास [तीर्थंकर] | ७ | | ० भम्मी [शास्त्र] | | ४९ टि० |

पञ्चमं परिशिष्टम्

नन्दीसूत्र-तचूर्ण्यन्तर्गतानां विषय-व्युत्पत्त्यादियोनकानां
शब्दानामकारादिवर्णक्रमेणानुक्रमणिका

[अस्मिन् परिशिष्टे *एतादृक्पुष्पिकाचिह्नाङ्किताः शब्दाः नन्दीमूलसूत्रान्तः सूत्रान्ता स्वयं व्याख्याता
ज्ञेयाः, +एतादृक्चतुष्पिकाचिह्नाङ्किताः शब्दाः चूर्णिकृता ग्रन्थसन्दर्भे स्वयं प्रयोजिता
ज्ञेयाः, शेषाश्च शब्दाः सूत्रान्तर्गताः चूर्णिकृता व्याख्याता अवबोदव्याः ।]



| शब्द | पत्र-पंक्ति | शब्द | पत्र-पंक्ति | शब्द | पत्र-पंक्ति |
|--------------------------------|-------------|-----------------------|---------------|------------------------|--------------|
| अ | | +अणियोग | ७६-१५ | अभिलावनस्तर | ४४-१७ |
| अकारण | ८०-१३ | अणाणुगामिक | १७-२१ | अरहंत | ४८-२० |
| अकिरिय [णत्थियवादी] | ४-९ | अणुकड्ढण | १७-२ | अलात [जलंतं दारुयं] | १६-२२ |
| अकख ['अशू व्याप्तौ' णाणप्पण- | | अणुत्तर | ६९-४ | अवगाढ | ५-१५ |
| ताए अत्थे असइ त्ति इच्चें जीवो | | अणुत्तरोववाइय | ६९-५ | अवग्रह | ३४-१९ |
| अकखो, णाणभावेण वावेत्ति त्ति | | अणेगसिद्ध | २७-९ | अवधि | १३-२३, २४ |
| भणितं भवति । अहवा "अश | | अणंतर | २६-३ | अवयण [कुच्छित्तवयणं] | ४७-२७ |
| भोजने" इच्चेतस्स वा सव्वत्थे | | अणलिंगसिद्ध | २७-२ | अवलंबणता | ३५-२६ |
| असइ त्ति अकखो, पालयति | | अण्णाण | ५०-६ | अवहि | १५-११ |
| भुक्ते चेत्यर्थः ।] | १४-१५, १६ | अण्णाणित [अण्णाणं इत | | अवात | ३६-२३, ४१-१६ |
| अकखर [णाणं] | ५५-२३ | अण्णाणित] | ५०-७ | अवाय | ३४-२० |
| अखंड [अविराधित, निरतिचार] | ३-१७ | अत्तिथ | २६-१३ | *अवाय | ४३-११ |
| अगमिय [अण्णोणकखराभिधानट्टितं | | अत्तिथकरसिद्ध | २६-१७ | अवि | ५५-२२ |
| जं पडिज्जति तं अगमिय] | ५६-२४ | अत्तिथसिद्ध | २६-१५ | अवोह [परधम्मपरिचाये | |
| अगम [परिमाण] | ५२-१९ । | अत्थ | ११-२१ | सधम्माणुगतावधारणे य | |
| | ७५-२२ | अत्थिणत्थिप्पवाद | ७५-२५ | 'अवोहो' त्ति अवातो] | ४६-११, १६ |
| अगोणीत | ७५-२२ | अत्थोगाह | ३५-१३, १४, १५ | अवंश | ७६-८, ९ |
| अचरमसमयभवत्थकेवलणाण | २५-२८ | अनुयोग [अनुरूपो योगः | | असणिसुत | ४५-२१ |
| अचरिम | २५-२७ | अनुयोगः] | ७६-१८ | असील [कुच्छित्तसीलं] | ४७-२७ |
| अजोगिभवत्थकेवलणाण | २५-१६ | अपज्जतय | २२-१९ | अमुतनिस्सित | ३२-२६ |
| अजोगी [सव्वजोगनिरुद्धो, | | अभाव | ८०-७ | अंगपविट्ट | ५७-३, ५ |
| सइत्थेसभावट्टितो] | २५-१६ | अमिनिबोध | १३-१८ | अंगवाहिर | ५७-४, ५ |
| अज्ज [आयं आयं वा] | ८-९ | | | | |

| शब्द | पत्र-पंक्ति | शब्द | पत्र-पंक्ति | शब्द |
|---|-------------|-----------------------------------|--------------|--------|
| कुच्छी [दो हत्या (द्विहस्त- १९-१५ प्रमाणम्)] | | च | | जा |
| कुवलय [१ कुच्छितो लवलो ९-१३ कुवलयो; सो य कण्ठकायो, २ णीलपलं, ३ रयणविसो] | | चरण | ५८-८, २२ | जी |
| कूड | ६४-४ | चरणविही | ५८-२२ | जी |
| कोट्ट | ३७-११ | चरिम | २५-२६ | जी |
| ख | | चहित (दे०) [मनोरथदृष्टि] | ४९-१ | जोई |
| खाणी | ११-२० | चित्त [चित्तिज्ज जेण तं चित्तं] | ५-१९ | जोई |
| खुइ | ५९-८ | चित्तंतर्गंडिका | ७७-१३ | जोई |
| खुशागपतर | २४-८ | चित्र | ७७-१३ | जाण |
| ग | | चिंता [जो यऽणागते य | ३६-१३; | जाण |
| गण | ५८-१० | चित्तयति 'कहं वा त | ४६-१३, | |
| गणिविजा | ५८-१४ | तत्थ कातव्वं ?' इति | १५ | टंक |
| गदिय (दे०) [ख्यात] | ११टि०११ | अण्णोणालंबणाणुगतं चित्तं | | |
| गव्व [पोमकेसरा] | ११-३ | चिता, २ अणेगहा | | |
| गमिय | ५६-२३ | संकप्पकरणं चिता (पत्र - ४६)] | | ठवण |
| गवेसणा [१ वीससप्पयोगु- | ३६-१२; | चुडली [अग्गे पज्जलिता | १६-२२ | णं |
| न्मवणिच्चमणिच्चं चेत्यादि | ४६-१२, | तणपिदी] | | |
| गवेसणा, २ अभिलसितत्थे | १५ | चुछ | ५७-२५ | |
| चेव अपट्ठप्पज्जमाणे जायणा | | चुछकप्पसुत | ५७-२५ | |
| गवेसणा (पत्र ४६)] | | चूला | ७९-११ | पंदि |
| गंडिका | ७७-१३ | चोदक | ३८-६, ७ | पंदी |
| गाढ | ५-१५ | चोदित | ५०-२३ | णाग |
| गिहिल्लिसिद्ध | २७-४ | छ | | णाग |
| गुण | ४-३ | छदुमत्थ | २४-३ | णाण |
| *गुणपचत्तिम्-इय | २०-१३; | छन्द | ५०-८ | |
| | २३-१४ | ज | | |
| *गुणपडिवण | १५-१८ | जग [१ खेतलोगो | १-१७; २-१, ३ | णाण |
| गुरु [गुणाति शास्त्रमिति गुरुः] | २-२ | (पत्र १), २ सव्यसण्णि- | | णाय |
| गोयर | ६१-२० | लोगो, ३ सत्त-प्राणी | | णिच्च |
| घ | | (पत्र २)] | | णिच्चं |
| घोस | ३५-२१ | जतपडागा [संजयपताका] | ३-५ | णोई |
| | | जमलट्टित | १७-३ | णोई |
| | | जयति | १-१७; २-२० | णोई |
| | | जलोह | ४-१ | |
| | | जसवंस | ९-६ | तर |

| नन्द | पत्र-पंक्ति | शब्द | पत्र-पंक्ति | शब्द | पत्र-पंक्ति |
|--------------------------------|-------------|---|---------------|--------------------|----------------------------|
| बुद्धबोधितसिद्ध | २७-१ | मरण | ५८-१५ | मग्गानुत्ता | ५९-११ |
| बुद्धि | ५०-९, १० | मरणविभक्ती | ५८-१६ | मग्ग | ९-४ |
| बुद्धी | ३६-२४ | महत्थ | ११-२०, २१ | मग्गी | १८-२० |
| भ | | महल्ल | ५९-८ | मग्ग | ५-२१ |
| भगवंत | ४८-२१ | महाकप्पमुत्त | ५७-२५ | मग्गानुत्तर | ४४-१८ |
| भद्रम् | २-२७ | महात्मा | २-२३ | मग्गिदराओ | ६०-१५ |
| भवत्थकेवलणाण | २५-११ | महापञ्चक्खाण | ५८-२७ | मग्गि | ५०-२५ |
| भवपञ्चतिअ | २०-१३ | महापण्णवणा | ५८-१ | मग्ग | ८-५ |
| भाव | ८०-६ | महित | ४९-२, ३ | वर | ५-१६; ६-१८ |
| भावमण | ३५-१८ | मंडलपवेस | ५८-८ | वज्जण | ३५-२१ |
| भाविदिय | १४-२९ | मंता | १७-१३ | *वज्जणस्सर | ४५-१ |
| भासापज्जति | २२-१६ | माता | ६२-१ | वज्जणस्सर | ४५-४ |
| म | | माधुरा वायगा | ९-२४ | वज्जणोग्गह-णावग्गह | ३५-४, ५, ६, ७ |
| मग्गणा [१ विसेसत्थस्स | ३६-११; | मिच्छा | ५०-७ | वंस | ९-५ |
| अण्णय-वहरेगधम्मसमा- | ४६-११, १४ | मिच्छादिद्वित | ५०-७ | वागरण | ६९-२० |
| लोयणं मग्गणा भण्णति (पत्र-३६)। | | मुद्धिया | ९-१०, १२ | वातगा-यगा | ९-५ |
| विसेसधम्मणोत्तणा मग्गणा, २ अ- | | मूलपढमाणयोग | ७७-२, ३ | वायक-ग | ९-२, ११ |
| भिलसियत्थस्स मणोवयणकाएहि | | मेधा | ३६-१ | विउलतराग | २३-६, ९, ११; २४-२९, ३०, ३१ |
| जायणा मग्गणा (पत्र ४६)] | | र | | | |
| मग्गओ अंतगाय १६-१०, १४; १७-६ | | रय | ३-२३ | विक्रम | २-१६ |
| मग्गतो १७-१ | | रवति | ६-११ | विज्जणुप्पवात | ७६-७ |
| मज्झगत-य १६-२, ७, ८, २०; १७-९ | | रुयग [अट्टप्पदेसो रुयगो, तिरियलोगमज्झं] | २४-९ | विज्जा | ५८-८, १० |
| मणपज्जति २२-१७ | | रूढ | ५-१४ | विज्जाचरणविणिच्छय | ५८-१० |
| मणपज्जयणाणं-नाणं १३-२६, २८ | | ल | | विज्जुत | ६-१४ |
| मणपज्जव १३-२७ | | लद्धिअक्खर | ४५-१० | विणिच्छय | ५८-९ |
| मणपज्जव + नाण १३-२५, २८ | | लेस्सा | ४-१५ | विण्णाण | ३६-२५ |
| मणपज्जाय + णाण १३-२७ | | लोगविंदुसार | ७६-१४ | वित्तिमिरतराग | २३-७, ९, ११; २५-४, ५ |
| मणित २४-२ | | व | | विधि | १३-१३ |
| मत्ति ५०-९, १० | | वक्खाण | ११-२२ | विपाक | ७०-२३ |
| मत्तिअण्णाण ३२-९, १० | | वक्खाणकहण | ११-२२ | विपाकसुत | ७१-१ |
| मत्तिणाण ३२-९, १० | | वग्ग | ५९-१०; ६६-११; | विपुलमती | २२-२६ |
| मनःपर्यय १३-२५ | | | ६८-१२; ६९-८ | विभक्ती | ५८-१४, १५ |

चूर्णिसमन्वितस्य नन्दिसूत्रम्

शुद्धिपत्रकम्

| पृष्ठम् | पङ्क्तिः | अशुद्धम् | शुद्धम् | पृष्ठम् | पङ्क्तिः | अशुद्धम् | शुद्धम् |
|---|----------|----------------------------------|--------------------------|---------|----------|----------------|------------------|
| १ | ८ | भावो | भावो (? जीवो) | १७ | २४ | पेयस्येय | पेयस्येय |
| १ | १२ | भणंति — | भणंति । | १७ | २७ | १-६-११ | १-६ |
| २ | ११ | त्ति | त्ति— | १७ | २८ | ९ | ९ स्स परि- |
| ३ | ५ | तवो | तवो, | | | | पेरंतेहि परि- |
| ३ | ५ | नियमो | नियमो, | | | | पेरंतेहि सवामु |
| ५ | १९ | वा उज्जलं | वाउज्जलं | | | | सुप्रतिगु दारि० |
| ५ | १९ | चित्तिज्जइ | चित्तिज्जइ | | | | मलय० ॥ १० |
| ६ | ११ | प्रचुरः | प्रचुरः, | १७ | २८ | १० | ११ |
| ७ | ३ | उसम० | उसमं० | १७ | २८ | १२ | १२-१३ ओहिघ्राणं |
| ७ | १८ | तुंगियायणे | 'तुंगियायणे' | | | | हे०ल० ॥ १४ |
| ८ | २७ | अष्टाविशं | सप्तविशं | १७ | २९ | १३ | १५ |
| ९ | २२ | पेहाभां | पेहाभां | १८ | १० | साओ | सा उ |
| १० | १० | खमासणे | खमासणे | २० | ८ | तेयाभासं | तेया-भासं |
| ११ | ८ | भूतादणं | भूयदिणं | २० | २४ | ४ र्थी टिप्पणी | निरुपयोगिनी । |
| ११ | १० | ब्भावणा | ब्भासणा | २१ | १० | गन्भवति | गन्भवति |
| ११ | २४ | घारेव्वं | घारेव्वं । अहिंसा | २२ | ३ | वासासाउ | वासाउ |
| १३ | २९ | पूर्वादि निम्नप्रकारेण ज्ञेयम् — | | २२ | १० | शते | सते |
| गमण १ परावत्तेरगो लाभो ३ मेदा य ४ बहुपरावत्ता ५ । | | | | २३ | १७ | ख० | खं० |
| १४ | १४ | च० | च | २३ | २१ | चूर्णिकृता वृ | चूर्णि-वृ |
| १४ | १८ | समेदं | समेदं । | २३ | २३ | वर्णना | वर्णना |
| १४ | १९ | । | ॥ | २४ | १३ | उवरि | जाव उवरि |
| १४ | २७ | । | ॥ | २४ | १४ | जाव | ० |
| १६ | २० | मज्झगयं ? से | मज्झगयं ? मज्झगयं से | २४ | १५ | लस्सअ | लस्स अ |
| १७ | २-३ | सा(दो)पासय | सापासय(दो पासे य) | २४ | १५ | सत्तरज्जुओ | सत्तरज्जुओ |
| १७ | ३ | द्वितं । | द्वितं [वा] । | २५ | ५ | भणितं | भणितं । |
| १७ | ९ | समंता | सै मंता | २५ | ५ | रागं-ति | रागं ति |
| १७ | १२ | त्तिसव्वा | त्ति सव्वा | २५ | ९ | णाणं च | णाणं च । |
| १७ | १३ | 'से' | 'स' | २६ | १ | से तं किं | से किं तं |
| १७ | १६ | स्स परिपेरंतेहि परिपेरंतेहि | स्स पेरंतेहि पेरंतेहि | २७ | ७ | भवति | भवति, |
| | | | | २७ | १३ | द्विताअ | द्विता अ |
| १७ | १७ | जोइट्टाणं | जोइट्टाणं | २७ | १८ | अण्णोणं | अण्णो (? ण, ण) |
| १७ | १७ | एवमेव | एवमेव | २७ | ३३ | पर्यव | पर्यव |
| १७ | १८ | ओहिणाणं | ओहिणाणं | २८ | १० | दिया, अजीवा | दिया । अजी[भा]वा |
| १७ | २० | ओहिणाणं | ओहिणाणं | २९ | २९ | अणुरतणं | अणु-रतणं |
| १७ | २२ | अगणि | अगणि | ३० | १५ | सिद्धाधि | सिद्धाधि |
| | | | | ३० | ३० | श्रुत | श्रुतं |

PRĀKRIT TEXT SOCIETY

PUBLISHED WORKS

1. ANGAVIJĀ

-Demy Quarto size..Pages-8+91+372..Price Rs. 21/-

Angavijā is published for the first time by the Prakrit Text Society. It is critically edited by Muni Shri Punyavijayaji, with English Introduction by Dr. Mohanlal and Hindi Introduction by Dr. V. S. Agarwal.

Angavijā is an ancient Prakrit Text relating to prognostication on the basis of bodily signs. The work is of unknown authorship but was considered to be of high antiquity and great sanctity having been delivered by Mahāvira himself. Its internal evidence points to its having been finally compiled at the end of the Kushan period, about 4th Century A. D.

It is highly important document firstly, for the history of Prakrit language and secondly, for the cultural history of India. It contains hundreds of lists of all descriptions, for example, seats, posture, utensils, containers, flowers, trees, personal names, food and drinks, bedsteads, conveyances, textile ornaments, jewellery, coins, birds, animals, arrows, weapons, boats, gods, goddesses, etc.

2. PRĀKRITA-PAIṆGALAM. Part I.

-Demy Octavo size..Page-700..Price-Rs. 16/-

Prākritapaingalam is a text on Prakrit and Apabhraṃśa Metres. It is critically edited with three Sanskrit commentaries on the basis of the two earlier editions and further available manuscript material by Dr. Bholashankar Vyas, a distinguished member of the Hindi Department of the Banaras Hindu University. He has also added Hindi translation with philological notes and glossary of Prakrit and Apabhraṃśa words.

3. CAUPPANNAMAHĀPURISACARIYAM.

-Demy Quarto size..Pages-8+68+384..Price Rs. 21/-

Cauppannamahāpurisacariyam is a great biographical work by Āchārya Śilānka of the 9th Century A. D. It is critically edited by Pt. Amritlal Mohanlal, Research scholar of Prakrit Text Society. Introduction is written by Dr. K. L. Bruhn.

It gives the lives of 54 great men revered by the Jains, viz. 24 Tīrthaṅkaras, 12 Chakravartins, 9 Baladevas and 9 Vāsudevas.

4. PRĀKRITAPAṆGALAM Part II.

-Demy Octavo size..Pages 16+16+592+12..Price Rs. 15/-

The Part I of this work on Prakrit metres is published as the Second Volume of the Prakrit Text Series. Part II contains the editor's comprehensive Introduction dealing with the problems of the PrākṛitaPaingalam together with a critical and comparative study of the metres that form the subject-matter, as well as, the exact nature of the language of the original text, and also a literary assessment of the portion which the author intended to serve as illustrations to the Matrika and Varnika metres dealt with by him.

5. ĀKHYĀNAKAMANIKOŚA.

-Demy Quarto size..Pages 8+16+25+422..Price Rs. 21/-

Ākhyānakamanikośa is critically edited for the first time by Muni Shri Punyavijayaji.

It is written by Nemichandra and is commented upon by Āmradeva of the 12th Century A. D. This book is a mine of historical and legendary stories in Prakrit and Apabhraṃśa.

6. PAUMACARIA Part I.

-Demy Quarto size..Pages 8+40+376..Rs. 18/-

This is the earliest Prakrit version of the story of Rama. It was written in about the third Century A. D. by Vimala. The work is printed with Hindi translation. It is edited by Muni Shri Punyavijayaji and translated by Prof. S. M. Vora, M. A., Jainadarśanāchārya. Its Introduction is written by Dr. V. M. Kulkarni.



